गरुड़ पुराण सम्पूर्ण कथा



गरूड़ पुराण वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित है और सनातन धर्म में मृत्यु के बाद सद्गति प्रदान करने वाला माना जाता है। गरूड़ पुराण में वष्णु-भक्ति का वस्तार से वर्णन है। भगवान वष्णु के चौबीस अवतारों का वर्णन ठीक उसी प्रकार यहां प्राप्त होता है, जिस प्रकार 'श्रीमद्भागवत' में उपलब्ध होता है इस लये सनातन हिन्दू धर्म में मृत्यु के बाद गरुड़ पुराण के श्रवण का प्रावधान है।

इस पुराण के अ धष्ठातृ देव भगवान वष्णु हैं। इसमें भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार, निष्काम कर्म की महिमा के साथ यज्ञ, दान, तप तीर्थ आदि शुभ कर्मों में सर्व साधारणको प्रवृत्त करने के लये अनेक लौ कक और पारलौ कक फलोंका वर्णन कया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें आयुर्वेद, नीतिसार आदि वषयों के वर्णनके साथ मृत जीव के अन्तिम समय में कये जाने वाले कृत्यों का वस्तार से निरूपण कया गया है। आत्मज्ञान का ववेचन भी इसका मुख्य वषय है।

अठारह पुराणों में गरुड़महापुराण का अपना एक वशेष महत्व है। इसके अ धष्ठातृदेव भगवान वष्णु है। अतः यह वैष्णव पुराण है। गरूड़ पुराण में वष्णु-भक्ति का वस्तार से

वर्णन है। भगवान वष्णु के चौबीस अवतारों का वर्णन ठीक उसी प्रकार यहां प्राप्त होता है, जिस प्रकार 'श्रीमद्भागवत' में उपलब्ध होता है। आरम्भ में मनु से सृष्टि की उत्पत्ति, ध्रुव चरित्र और बारह आदित्यों की कथा प्राप्त होती है।

उसके उपरान्त सूर्य और चन्द्र ग्रहों के मंत्र, शव-पार्वती मंत्र, इन्द्र से सम्बन्धित मंत्र, सरस्वती के मंत्र और नौ शक्तियों के वषय में वस्तार से बताया गया है। इसके अतिरिक्त इस पुराण में श्राद्ध-तर्पण, मुक्ति के उपायों तथा जीव की गति का वस्तृत वर्णन मलता है।

संरचना:

'गरूड़पुराण' में उन्नीस हजार श्लोक कहे जाते हैं, कन्तु वर्तमान समय में उपलब्ध पाण्डु ल पयों में लगभग आठ हजार श्लोक ही मलते हैं। गरुणपुराण के दो भाग हैं- पूर्वखण्ड तथा उत्तरखण्ड। पूर्वखण्ड में २२९ अध्याय हैं (कुछ पाण्डु ल पयों में २४० से २४३ तक अध्याय मलते हैं)। उत्तरखण्ड में अलग-अलग पाण्डु ल पयों में अध्यायों की सख्या ३४ से लेकर ४९ तक है। उत्तरखण्ड को प्रायः 'प्रेतखण्ड' या 'प्रेतकल्प' कहा जाता है। इस प्रकार गरुणपुराण का लगभग ९० प्रतिशत सामग्री पूर्वखण्ड में है और केवल १० प्रतिशत सामग्री उत्तरखण्ड में। पूर्वखण्ड में व वध प्रकार के वषयों का समावेश है जो जीव और जीवन से सम्बन्धित हैं। प्रेतखण्ड मुख्यतः मृत्यु के पश्चात जीव की गति एवं उससे जुड़े हुए कर्मकाण्डों से सम्बन्धित है।

सम्भवतः गरुणपुराण की रचना अग्निपुराण के बाद हुई। इस पुराण की सामग्री वैसी नहीं है जैसा पुराण के लए भारतीय साहित्य में व र्णत है। इस पुराण में व र्णत जानकारी गरुड़ नेण वष्णु भगवान से सुनी और फर कश्यप ऋ ष को सुनाई।

पहले भाग में वष्णु भक्ति और उपासना की व धयों का उल्लेख है तथा मृत्यु के उपरान्त प्रायः 'गरूड़ पुराण' के श्रवण का प्रावधान है। दूसरे भाग में प्रेत कल्प का वस्तार से वर्णन करते हुए व भन्न नरकों में जीव के पड़ने का वृत्तान्त है। इसमें मरने के बाद मनुष्य की क्या गति होती है, उसका कस प्रकार की योनियों में जन्म होता है, प्रेत योनि से मुक्त कैसे पाई जा सकती है, श्राद्ध और पतृ कर्म कस तरह करने चाहिए तथा नरकों के दारूण दुख से कैसे मोक्ष प्राप्त कया जा सकता है आदि का वस्तारपूर्वक वर्णन प्राप्त होता है।

गरुड़ पुराण - पहला अध्याय



(भगवान वष्णु तथा गरुड़ के संवाद में गरुड़ पुराण - पापी मनुष्यों की इस लोक तथा परलोक में होने वाली दुर्गति का वर्णन, दश गात्र के पण्डदान से यातना देह का निर्माण।)

धर्म ही जिसका सुदृढ़ मूल है, वेद जिसका स्कन्ध(तना) है, पुराण रूपी शाखाओं से जो समृद्ध है, यज्ञ जिसका पुष्प है और मोक्ष जिसका फल है, ऎसे भगवान मधुसूदन रूपी पादप - (जैसे वृक्ष सबको आश्रय देता है, वैसे ही भगवान भी अपने चरणार वन्द में आश्रय देकर सबकी रक्षा करते हैं इसी लए भगवान मधूसूदन को यहां पादप - वृक्ष की उपमा दी गई है) कल्पवृक्ष की जय हो। देव - क्षेत्र नै मषारण्य में स्वर्ग लोक की प्राप्ति की कामना से शौनकादि ऋ षयों ने एक बार सहस्त्रवर्ष में पूर्ण होने वाला यज्ञ प्रारम्भ कया।

एक समय प्रात:काल के हवनादि कृत्यों का सम्पादन कर के उन सभी मुनियों ने सत्कार कए गये आसनासीन सूत जी महाराज से आदरपूर्वक यह पूछा -

ऋषय ऊचु:

ऋ षयों ने कहा - हे सूत जी महाराज्! आपने सुख देने वाले देवमार्ग का सम्यक निरूपण कया है। इस समय हम लोग भयावह यममार्ग के वषय में सुनना चाहते हैं। आप

सांसारिक दुखों को और उस क्लेश के वनाशक साधन को तथा इस लोक और परलोक के क्लेशों को यथावत वर्णन करमें समर्थ है, अत: उस का वर्णन कीजिए।

सूत उवाच

सूतजी बोले - हे मुनियों! आप लोग सुनें! मैं अत्यन्त दुर्गम यममार्ग के वषय में कहता हूँ, जो पुण्यात्मा जनों के लए सुखद और पा पयों के लए दु:खद है। गरुड़ जी के पूछने पर भगवान वष्णु ने उनसे जैसा कुछ कहा था, मैं उसी प्रकार आप लोगों के संदेह की नवृत्ति के लए कहूँगा। कसी समय वैकुण्ठ में सुखपूर्वक वराजमान परम गुरु श्रीहरि से वनतापुत्र गरुड़ जी ने वनय से झुककर पूछा।

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे देव! आपने भक्ति मार्ग का अनेक प्रकार से मेरे समक्ष वर्णन कया है और भक्तों को प्राप्त होने वाली उत्तम गति के वषय में भी कहा है। अब हम भयंकर यम मार्ग के वषय में सुनना चाहते हैं। हमने सुना है क आपकी भक्ति से वमुख प्राणी वहीं नरक में जाते हैं। भगवान का नाम सुगमतापूर्वक लया जा सकता है, जिह्वा प्राणी के अपने वश में है तो भी लोग नरक में जाते हैं, ऐसे अधम मनुष्यों को बार-बार धक्कार है। इस लए हे भगवान! पा पयों को जो गति प्राप्त होती है तथा यम मार्ग में जैसे वे अनेक प्रकार के दु:ख प्राप्त करते हैं, उसे आप मुझसे कहें।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान बोले - हे पक्षीन्द्र! सुनो, मैं उस यममार्ग के वषय में कहता हूँ, जिस मार्ग से पापीजन नरक की यात्रा करते हैं और जो सुनने वालों के लये भी भयावह है।

हे तार्क्ष्य! जो प्राणी सदा पाप परायण है, दया और धर्म से रहित हैं, जो दुष्ट लोगों की संगति में रहते हैं, सत्-शास्त्र और सत्संगति से वमुख है, जो अपने को स्वयं प्रतिष्ठित मानते हैं, अहंकारी हैं तथा धन और मान के मद से चूर हैं, आसुरी शक्ति को प्राप्त हैं तथा दैवी सम्पत्ति से रहित हैं, जिनका चत्त अनेक वषयों में आसक्त होने से भ्रान्त हैं, जो मोह के जाल में फंसे हैं और कामनाओं के भोग में ही लगे हैं, ऐसे व्यक्ति अप वत्र नरक में गरते हैं. जो लोग ज्ञानशील हैं, वे परम गति को प्राप्त होते हैं। पापी मनुष्य दु:खपूर्वक यम

यातना प्राप्त करते हैं। पा पयों को इस लोक में जैसे दु:ख की प्राप्ति होती है और मृत्यु के पश्चात वे जैसी यम यातना को प्राप्त होते हैं, उसे सुनो।

यथोपार्जित पुण्य और पाप के फलों को पूर्व में भोगकर कर्म के सम्बन्ध से उसे कोई शारीरिक रोग हो जाता है। आ ध (मान सक रोग) और व्या ध (शारीरिक रोग) - से युक्त तथा जीवन धारण करने की आशा से उत्कण्ठित उस व्यक्ति की जानकारी के बिना ही सर्प की भाँति बलवान काल उसके समीप आ पहुँचता है। उस मृत्यु की सम्प्राप्ति की स्थिति में भी उसे वैराग्य नहीं होता. उसने जिनका भरण-पोषण कया था, उन्हीं के द्वारा उसका भरण-पोषण होता है, वृद्धावस्था के कारण वकृत रूप वाला और मरणा भमुख वह व्यक्ति घर में अवमाननापूर्वक दी हुई वस्तुओं को कुत्ते की भाँति खाता हुआ जीवन व्यतीत करता है।

वह रोगी हो जाता है, उसे मन्दाग्नि हो जाती है और उसका आहार तथा उसकी सभी चेष्टाएँ कम हो जाती हैं। प्राण वायु के बाहर निकलते समय आँखें उलट जाती हैं, ना ड़याँ कफ से रुक जाती हैं, उसे खाँसी और श्वास लेने में प्रयत्न करना पड़ता है तथा कण्ठ से घुर-घुर से शब्द निकलने लगते हैं।

चन्तामग्न स्वजनों से घिरा हुआ तथा सोया हुआ वह व्यक्ति कालपाश के वशीभूत होने के कारण बुलाने पर भी नहीं बोलता। इस प्रकार कुटुम्ब के भरण-पोषण में ही निरन्तर लगा रहने वाला, अजितेन्द्रिय व्यक्ति अन्त में रोते बिलखते बन्धु-बान्धवों के बीच उत्कट वेदना से संज्ञाशून्य होकर मर जाता है। हे गरुड़ ! उस अन्तिम क्षण में प्राणी को व्यापक दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाती है, जिससे वह लोक-परलोक को एकत्र देखने लगता है। अत: च कत होकर वह कुछ भी नहीं कहना चाहता। यमदूतों के समीप आने पर भी सभी इन्द्रियाँ वकल हो जाती हैं, चेतना जड़ीभूत हो जाती है और प्राण चलायमान हो जाते हैं।

आतुरकाल में प्राण वायु के अपने स्थान से चल देने पर एक क्षण भी एक कल्प के समान प्रतीत होता है और सौ बिच्छुओं के डंक मारने जैसी पीड़ा होती है, वैसी पीड़ा का उस समय उसे अनुभव होने लगता है। वह मरणासन व्यक्ति फेन उगलने लगता है और उसका मुख लार से भर जाता है। पापीजनों के प्राणवायु अधोद्वार (गुदामार्ग) से निकलते हैं।

उस समय दोनों हाथों में पाश और दण्ड धारण कये, नग्न, दाँतों को कटकटाते हुए क्रोधपूर्ण नेत्र वाले यम के दो भयंकर दूत समीप में आते हैं। उनके केश ऊपर की ओर उठे होते हैं, वे कौए के समान काले होते हैं और टेढ़े मुख वाले होते हैं तथा उनके नख आयुध

की भाँति होते हैं। उन्हें देखकर भयभीत हृदयवाला वह मरणासन्न प्राणी मल-मूत्र का वसर्जन करने लगता है।

अपने पाँच भौतिक शरीर से हाय-हाय करते हुए निकलता हुआ तथा यमदूतों के द्वारा पकड़ा हुआ वह अंगुष्ठमात्र प्रमाण का पुरुष अपने घर को देखता हुआ यमदूतों के द्वारा यातना देह से ढक कर के गले में बलपूर्वक पाशों से बाँधकर सुदूर यममार्ग यातना के लए उसी प्रकार ले जाया जाता है, जिस प्रकार राजपुरुष दण्डनीय अपराधी को ले जाते हैं। इस प्रकार ले जाये जाते हुए उस जीव को यम के दूत तर्जना कर के डराते हैं और नरकों के तीव्र भय का पुन: - पुन: वर्णन करते हैं - (सुनाते हैं)।

यमदूत कहते हैं - रे दुष्ट ! शीघ्र चल, तुम यमलोक जाओगे। आज तुम्हें हम सब कुम्भीपाक आदि नरकों में शीघ्र ही ले जाएँगे।

इस प्रकार यमदूतों की वाणी तथा बन्धु-बान्धवों का रुदन सुनता हुआ वह जीव जोर से हाहाकार करके वलाप करता है और यमदूतों के द्वारा प्रता ड़त कया जाता है। यमदूतों की तर्जनाओं से उसका हृदय वदीर्ण हो जाता है, वह काँपने लगता है, रास्ते में कुत्ते काटते हैं और अपने पापों का स्मरण करता हुआ वह पी ड़त जीव यममार्ग में चलता है।

भूख और प्यास से पी ड़त होकर सूर्य, दावाग्नि एवं वायु के झोंको से संतृप्त होते हुए और यमदूतों के द्वारा पीठ पर कोड़े से पीटे जाते हुए उस जीव को तपी हुई बालुका से पूर्ण तथा वश्राम रहित और जल रहित मार्ग पर असमर्थ होते हुए भी बड़ी कठिनाई से चलना पड़ता है। थककर जगह-जगह गरता और मूर्च्छित होता हुआ वह पुन: उठकर पापीजनों की भाँति अन्धकारपूर्ण यमलोक में ले जाया जाता है।

दो अथवा तीन मुहूर्त्त में वह मनुष्य वहाँ पहुँचाया जाता है और यमदूत उसे घोर नरक यातनाओं को दिखाते हैं। मुहूर्त मात्र में यम को और नारकीय यातनाओं के भय को देखकर वह व्यक्ति यम की आज्ञा से आकाश मार्ग से यमदूतों के साथ पुन: इस लोक (मनुष्यलोक) में चला आता है। मनुष्य लोक में आकर अबादि वासना से बद्ध वह जीव देह में प्र वष्ट होने की इच्छा रखता है, कंतु यमदूतों द्वारा पकड़कर पाश में बाँध दिये जाने से भूख और प्यास से अत्यन्त पी ड़त होकर रोता है।

हे तार्क्ष्य ! वह पातकी प्रा ण पुत्रों से दिए हुए पण्ड तथा आतुर काल में दिए हुए दान को प्राप्त करता है तो भी उस नास्तिक को तृप्ति नहीं होती। पुत्रादि के द्वारा पा पयों के उद्देश्य से कए गये श्राद्ध, दान तथा जलांज ल उनके पास ठहरती नहीं। अत: पण्डदान का भोग करने पर भी वे क्षुधा से व्याकुल होकर यममार्ग में जाते हैं। जिनका पण्डदान नहीं होता, वे प्रेतरूप में होकर कल्पपर्यन्त निर्जन वन में दु:खी होकर भ्रमण करते रहते हैं।

सैकड़ो करोड़ कल्प बीत जाने पर भी बिना भोग कए कर्म फल का नाश नहीं होता और जब तक वह पापी जीव यातनाओं का भोग नहीं कर लेता, तब तक उसे मनुष्य शरीर भी प्राप्त नहीं होता। हे पक्षी! इस लए पुत्र को चाहिए क वह दस दिनों तक प्रतिदिन पण्डदान करे। हे प क्षश्रेष्ठ! वे पण्ड प्रतिदिन चार भागों में वभक्त होते हैं।

उनमें दो भाग तो प्रेत के देह के पंचभूतों की पुष्टि के लए होते हैं, तीसरा भाग यमदूतों को प्राप्त होता है और चौथे भाग से उस जीव को आहार प्राप्त होता है। नौ रात-दिनों में पण्ड को प्राप्त करके प्रेत का शरीर बन जाता है और दसवें दिन उसमें बल की प्राप्ति होती है। हे खग! मृत व्यक्ति के देह के जल जाने पर पण्ड के द्वारा पुन: एक हाथ लंबा शरीर प्राप्त होता है, जिसके द्वारा वह प्राणी यमलोक के रास्ते में शुभ और अशुभ कर्मों के फल को भोगता है।

पहले दिन जो पण्ड दिया जाता है, उससे उसका सर बनता है, दूसरे दिन के पण्ड से ग्रीवा - गरदन और स्कन्ध(कन्धे) तथा तीसरे पण्द से हृदय बनता है। चौथे पण्ड से पृष्ठभाग (पीठ), पाँचवें से ना भ, छठे तथा सातवें पण्द से क्रमश: कटि (कमर) और गुह्यांग उत्पन्न होते हैं।

आठवें पण्द से ऊरु (जाँघें) और नवें पण्ड से जानु (घुटने) तथा पेर बनते हैं। इस प्रकार नौ पण्डों से देह को प्राप्त कर के दसवें पण्द से उसकी क्षुधा और तृषा - (भूख-प्यास) ये दोनों जाग्रत होती हैं। इस पण्डज शरीर को प्राप्त कर के भूख और प्यास से पी ड़त जीव ग्यारहवें तथा बारहवें - दो दिन भोजन करता है। तेरहवें दिन यमदूतों के द्वारा बन्दर की तरह बँधा हुआ वह प्राणी अकेला उस यममार्ग में जाता है। हे खग! मार्ग में मलने वाली वैतरणी को छोड़कर यमलोक के मार्ग की दूरी का प्रमाण छियासी हजार योजन है।

वह प्रेत प्रतिदिन रात-दिन में दो सौ सैंतालीस योजन चलता है। मार्ग में आये हुए इन सोलह पुरों (नगर) को पार कर के पातकी व्यक्ति धर्मराज के भवन में जाता है. **1)** सौम्यपुर, **2)** सौरिपुर, **3)** नगेन्द्र भवन, **4)** गन्धर्वपुर, **5)** शैलागम, **6)** क्रौंचपुर, **7)** क्रूरपुर, **8)** व चत्रभवन, **9)** बह्वापदपुर, **10)** दु:खदपुर, **11)** नानाक्रन्दपुर, **12)** सुतप्तभवन, **13)** रौद्रपुर, **14)** पयोवर्षणपुर, **15)** शीताढ्यपुर तथा **16)** बहुभीतिपुर को पार करके इनके आगे यमपुरी में धर्मराज का भवन स्थित है। यमराज के दूतों के पाशों से बँधा हुआ पापी जीव रास्ते भर हाहाकार करता - रोता हुआ अपने घर को छोड़ करके यमपुरी को जाता है।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "पा पयों के इस लोक तथा परलोक के दु:ख का निरुपण" नामक पहला अध्याय पूर्ण हुआ।।

गरुड़ पुराण - दूसरा अध्याय

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे केशव ! यमलोक का मार्ग कस प्रकार दु:खदायी होता है। पापी लोग वहाँ कस प्रकार जाते हैं, वह मुझे बताइये।

श्रीभगवानुवाच

श्री भगवान बोले - हे गरुड़ ! महान दुख प्रदान करने वाले यममार्ग के वषय में मैं तुमसे कहता हूँ, मेरा भक्त होने पर भी तुम उसे सुनकर काँप उठोगे। यममार्ग में वृक्ष की छाया नहीं है, जहाँ प्राणी वश्राम कर सके। उस यममार्ग में अन्न आदि भी नहीं हैं, जिनसे क वह अपने प्राणों की रक्षा कर सके? हे खग ! वहाँ कहीं जल भी नहीं दिखता, जिसे अत्यन्त तृषातुर वह जीव पी सके। वहाँ प्रलयकाल की भाँति बारहों सूर्य तपते रहते हैं। उस मार्ग में जाता हुआ पापी कभी बर्फीली हवा से पी ड़त होता है तथा कभी काँटे चुभते हैं और कभी महा वषधर सर्पों के द्वारा डसा जाता है। वह पापी कहीं संहों, व्याघ्रों और भयंकर कुत्तों द्वारा खाया जाता है, कहीं बिच्छुओं द्वारा डसा जाता है और कहीं उसे आग से जलाया जाता है। तब कहीं अति भयंकर महान अ सपत्रवन नामक नरक में वह पहुँचता है, जो दो हजार योजन वस्तारवाला कहा गया है।

वह वन कौओं, उल्लुओं, वटों (पक्षी वशेषों), गीधों, सरघों तथा डाँसों से व्याप्त है। उसमें चारों ओर दावाग्नि व्याप्त है, अ सपत्र के पत्तों से वह जीव उस वन में छिन्न- भन्न हो जाता है। कहीं अंधे कुएँ में गरता है, कहीं वकट पर्वत से गरता है, कहीं छुरे की धार पर चलता है तो कहीं कीलों के ऊपर चलता है। कहीं घने अन्धकार में गरता है, कहीं उग्र (भय उत्पन्न करने वाले) जल में गरता है, कहीं जोंको से भरे हुए कीचड़ में गरता है तो कहीं जलते हुए कीचड़ में गरता है।

कहीं तपी हुई बालुका से व्याप्त और कहीं धधकते हुए ताम्रमय मार्ग, कहीं अंगार की रा श और कहीं अत्य धक धुएँ से भरे हुए मार्ग पर उसे चलना पड़ता है। कहीं अंगार की वृष्टि होती है, कहीं बिजली गरने के साथ शलावृष्टि होती है, कहीं रक्त की, कहीं शस्त्र की और कहीं गर्म जल की वृष्टि होती है। कहीं खारे कीचड़ की वृष्टि होती है, मार्ग में कहीं गहरी खाई है, कहीं पर्वत- शखरों की चढ़ाई है और कहीं कन्दराओं में प्रवेश करना पड़ता है।

वहाँ मार्ग में कहीं घना अंधकार है तो कहीं दु:ख से चढ़ी जाने योग्य शलाएँ हैं, कहीं मवाद, रक्त तथा वष्ठा से भरे हुए तालाब हैं। यम मार्ग के बीचोबीच अत्यन्त उग्र और घोर वैतरणी नदी बहती है। वह देखने पर दु:खदायिनी हो तो क्या आश्चर्य? उसकी वार्ता ही भय पैदा करने वाली है। वह सौ योजन चौड़ी है, उसमें पूय (पीब-मवाद) और शो णत (रक्त) बहते रहते हैं। हड् डयों के समूह से तट बने हैं अर्थात उसके तट पर हड् डयों का ढेर लगा रहता है। माँस और रक्त के कीचड़ वाली वह नदी दु:ख से पार की जाने वाली है।

अथाह गहरी और पा पयों द्वारा दु:खपूर्वक पार की जाने वाली यह नदी केशरूपी सेवार से भरी होने के कारण दुर्गम है। वह वशालकाय ग्राहों (घ ड़यालों) से व्याप्त है और सैकड़ो प्रकार के घोर प क्षयों से आवृत है। हे गरुड़ ! आये हुए पापी को देखकर वह नदी ज्वाला और धूम से भरकर कड़ाह में रखे घृत की भाँति खौलने लगती है। वह नदी सूई के समान मुख वाले भयानक कीड़ो से चारों ओर व्याप्त है। वज्र के समान चोंच वाले बड़े-बड़े गीध एवं कौओं से घिरी हुई है।

वह नदी शशुमार, मगर, जोंक, मछली, कछुए तथा अन्य मांसभक्षी जलचर - जीवों से भरी पड़ी है। उसके प्रवाह में गरे हुए बहुत से पापी रोते- चल्लाते हैं और हे भाई! हा पुत्र! हा तात! - इस प्रकार कहते हुए बार-बार वलाप करते हैं। भूख और प्यास से व्याकुल होकर पापी जीव रक्त का पान करते हैं। वह नदी झागपूर्ण रक्त के प्रवाह से व्याप्त, ममहाघोर,

अत्यन्त गर्जना करने वाली, देखने में दु:ख पैदा करने वाली तथा भयावह है। उसके दर्शन मात्र से पापी चेतनाशून्य हो जाते हैं।

बहुत से बिच्छू तथा काले सर्पों से व्याप्त उस नदी के बीच में गरे हुए पा पयों की रक्षा करने वाला कोई नहीं है। उसके सैकड़ों, हजारों भँवरों में पड़कर पापी पाताल में चले जाते हैं। क्षण भर पाताल में रहते हैं और एक क्षण में ही ऊपर चले आते हैं।

हे खग! वह नदी पा पयों के गरने के लए ही बनाई गई है। उसका पार नहीं दिखता। वह अत्यन्त दु:खपूर्वक तरने योग्य तथा बहुत दु:ख देने वाली है।

इस प्रकार बहुत प्रकार के क्लेशों से व्याप्त अत्यन्त दु:खप्रद यममार्ग में रोते- चल्लाते हुए दु:खी पापी जाते हैं। कुछ पापी पाश से बँधे होते हैं और कुछ अंकुश में फंसाकर खींचे जाते हैं, और कुछ शस्त्र के अग्र भाग से पीठ में छेदते हुए ले जाये जाते हैं। कुछ नाक के अग्र भाग में लगे हुए पाश से और कुछ कान में लगे हुए पाश से खीचे जाते हैं। कुछ काल पाश से खींचे जाते हैं और कुछ कौओं से खींचे जाते हैं।

वे पापी गरदन, हाथ तथा पैर में जंजीर से बँधे हुए तथा अपनी पीठ पर लोहे के भार को ढोते हुए मार्ग पर चलते हैं। अत्यन्त घोर यमदूतों के द्वारा मुद्गरों से पीटे जाते हुए वे मुख से रक्त वमन करते हुए तथा वमन कये हुए रक्त को पुन: पीते हुए जाते हैं। उस समय अपने दुष्कर्मों को सोचते हुए प्राणी अत्यन्त ग्लानि का अनुभव करते हैं और अतीव दु: खत होकर यमलोक को जाते हैं।

इस प्रकार यममार्ग में जाता हुआ वह मन्दबु द्ध प्राणी हा पुत्र !, हा पौत्र ! इस प्रकार पुत्र और पौत्रों को पुकारते हुए, हाय-हाय इस प्रकार वलाप करते हुए पश्चाताप की ज्वाला से जलता रहता है। वह वचार करता है क महान पुण्य के संबंध से मनुष्य-जन्म प्राप्त होता है, उसे प्राप्त कर भी मैंने धर्माचरण नहीं कया, यह मैंने क्या कया। मैंने दान दिया नहीं, अग्नि में हवन कया नहीं, तपस्या की नहीं, देवताओं की भी पूजा की नहीं, व ध- वधान से तीर्थ सेवा की नहीं, अत: हे जीव! जो तुमने कया है, उसी का फल भोगों।

हे देही ! तुमने ब्राह्मणों की पूजा की नहीं, देव नदी गंगा का सहारा लया नहीं, सत्पुरुषों की सेवा की नहीं, कभी भी दूसरे का उपकार कया नहीं, इस लए हे जीव ! जो

तुमने कया है, अब उसी का फल भोगों। मनुष्यों और पशु-प क्षयों के लए जलहीन प्रदेश में जलाशय का निर्माण कया नहीं। गौओं और ब्राह्मणों की आजी वका के लए थोड़ा भी प्रयास कया नहीं, इस लए हे देही! तुमने जो कया है, उसी से अपना निर्वाह करो।

तुमने नित्य-दान कया नहीं, गौओं के दैनिक भरण-पोषण की व्यवस्था की नहीं, वेदों और शास्त्रों के वचनों को प्रमाण माना नहीं, पुराणों को सुना नहीं, वद्वानों की पूजा की नहीं, इस लए हे देही ! जो तुमने कया है, उन्हीं दुष्कर्मों के फल को अब भोगों।

नारी-जीव भी पश्चाताप करते हुए कहता है मैंने पति की हितकर आज्ञा का पालन कया नहीं, पातिव्रत्य धर्म का कभी पालन कया नहीं और गुरुजनों को गौरवो चत सम्मान कभी दिया नहीं, इस लए हे देहिन्! जो तुमने कया, उसी का अब फल भोगों। धर्म की बु द्ध से एकमात्र पति की सेवा की नहीं और पति की मृत्यु हो जाने पर वह्निप्रवेश करके उनका अनुगमन कया नहीं, वैधव्य प्राप्त करके त्यागमय जीवन व्यतीत कया नहीं, इस लए हे देहिन्! जैसा कया, उसका फल अब भोगों। मास पर्यन्त कए जाने वाले उपवासों से तथा चान्द्रायण-व्रतों आदि सु वस्तीर्ण नियमों के पालन से शरीर को सुखाया नहीं। पूर्वजन्म में कये हुए दुष्कर्मों से बहुत प्रकार के दु:खों को प्राप्त करने के लए नारी-शरीर प्राप्त कया था।

इस तरह बहुत प्रकार से वलाप करके पूर्व देह का स्मरण करते हुए 'मेरा मानव-जन्म शरीर कहाँ चला गया' इस प्रकार चल्लाता हुआ वह यममार्ग में चलता है। हे तार्क्ष्य ! इस प्रकार सत्रह दिन तक अकेले वायु वेग से चलते हुए अठारहवें दिन वह प्रेत सौम्यपुर में जाता है। उस रमणीय श्रेष्ठ सौम्यपुर में प्रेतों का महान गण रहता है। वहांॅ पुष्पभद्रा नदी और अत्यन्त प्रय दिखने वाला वटवृक्ष है।

उस पुर में यमदूतों के द्वारा उसे वश्राम कराया जाता है। वहाँ दुखी होकर वह स्त्री-पुत्रों के द्वारा प्राप्त सुखों का स्मरण करता है। वह अपने धन, भृत्य और पौत्र आदि के वषय में जब सोचने लगता है तो वहाँ रहने वाले यम के कंकर उससे इस प्रकार कहते हैं - धन कहाँ है? पुत्र कहाँ है? पत्नी कहाँ है? मत्र कहाँ है? बन्धु-बान्धव कहाँ है? हे मूढ ! जीव अपने कर्मोपार्जित फल को ही भोगता है इस लए सुदीर्घ काल तक इस यम मार्ग पर चलो।

हे परलोक के राही! तू यह जानता है क राहगीरों का बल और संबल पाथेय ही होता है, जिसके लए तूने प्रयास तो कया नहीं। तू यह भी नहीं जानता था क तुम्हें निश्चित ही उस मार्ग पर चलना है और उस रास्ते पर कोई भी लेन-देन हो नहीं सकता। यह मार्ग के बालकों को भी वदित रहता है। हे मनुष्य ! क्या तुमने इसे सुना नहीं था? क्या तुमने ब्राह्मणों के मुख से पुराणों के वचन सुने नहीं थे। इस प्रकार कहकर मुद्गरों से पीटा जाता हुआ वह जीव गरते-पड़ते-दौड़ते हुए बलपूर्वक पाशों से खींचा जाता है।

यहाँ स्नेह अथवा कृपा के कारण पुत्र-पौत्रों द्वारा दिये हुए मा सक पण्ड को खाता है। उसके बाद वह जीव सौरिपुर को प्रस्थान करता है। उस सौरिपुर में काल के रूप को धारण करने वाला जंगम नामक राजा रहता है। उसे देखकर वह जीव भयभीत होकर वश्राम करना चाहता है। उस पुर में गया हुआ वह जीव अपने स्वजनों के द्वारा दिये हुए त्रैपा क्षक अन्न-जल को खाकर उस पुर को पार करता है।

उसके बाद शीघ्रतापूर्वक वह प्रेत नगेन्द्र-भवन की ओर जाता है और वहाँ भयंकर वनों को देखकर दु:खी होकर रोता है। दयारहित दूतों के द्वारा खींचे जाने पर वह बार-बार रोता है और दो मासों के अन्त में वह दुखी होकर वहाँ जाता है। बान्धवों द्वारा दिये गये पण्ड, जल, वस्त्र का उपभोग करके यम कंकरों के द्वारा पाश से बार-बार खींचकर पुन: आगे ले जाया जाता है।

तीसरे मास में वह गन्धर्वनगर को प्राप्त होता है और वहाँ त्रैमा सक पण्ड खाकर आगे चलता है। चौथे मास में वह शैलागमपुर में पहुँचता है और वहाँ प्रेत के ऊपर बहुत अ धक पत्थरों की वर्षा होती है। वहाँ चौथे मा सक पण्ड को खाकर वह कुछ सुखी होता है। उसके बाद पाँचवें महीने में वह प्रेत क्रौंचपुर पहुँचता है।

क्रौंचपुर में स्थित वह प्रेत वहाँ बान्धवों द्वारा हाथ से दिये गये पाँचवें मा सक पण्ड को खाकर आगे क्रूरपुर की ओर चलता है। साढ़े पाँच मास के बाद बान्धवों द्वारा प्रदत्त ऊनषाण्मा सक पण्ड और घटदान से तृप्त होकर वह वहाँ आधे मुहूर्त तक वश्राम कर के यमदूतों के द्वारा डराये जाने पर दु:ख से काँपता हुआ उस पुर को छोड़कर - चत्रभवन नामक पुर को जाता है, जहाँ यम का छोटा भाई व चत्र नाम वाला राजा राज्य करता है।

उस वशाल शरीर वाले राजा को देखकर जब वह जीव डर से भागता है, तब सामने आकर कैवर्त धीवर उससे यह कहते हैं - हम इस महावैतरणी नदी को पार करने वालों के लए नाव लेकर आये हैं, यदि तुम्हारा इस प्रकार का पुण्य हो तो इसमें बैठ सकते हो। तत्त्वदर्शी मुनियों ने दान को ही वतरण (देना या बाँटना) कहा है। यह वैतरणी नदी वतरण के द्वारा ही पार की जा सकती है, इस लए इसको वैतरणी कहा जाता है।

यदि तुमने वैतरणी गौ का दान कया हो तो नौका तुम्हारे पास आएगी अन्यथा नहीं। उनके ऐसे वचन सुनकर प्रेत 'हा देव' ! ऐसा कहता है। उस प्रेत को देखकर वह नदी खौलने लगती है और उसे देखकर प्रेत अत्यन्त क्रन्दन (वलाप) करने लगता है। जिसने अपने जीवन में कभी दान दिया ही नहीं, ऐसा पापात्मा उसी वैतरणी में डूबता है। तब आकाश मार्ग से चलने वाले दूत उसके मुख में काँटा लगाकर बंसी से मछली की भाँति उसे खींचते हुए पार ले जाते हैं।

वहाँ षाण्मा सक पण्ड खाकर वह अत्य धक भूख से पी ड़त होकर वलाप करता हुआ आगे के रास्ते पर चलता है। सातवें मास में वह बह्वापदपुर को जाता है और वहाँ अपने पुत्रों द्वारा दिये हुए सप्तम मा सक पण्ड को खाता है। हे प क्षराज गरुड़ ! उस पुर को पारकर वह दु:खद नामक पुर को जाता है। आकाश मार्ग से जाता हुआ वह महान दु:ख प्राप्त करता है।

वहाँ आठवें मास में दिये हुए पण्ड को खाकर आगे बढ़ता है और नवाँ मास पूर्ण होने पर नानाक्रन्दपुर को प्राप्त होता है। वहाँ क्रन्दन करते हुए अनेक भयावह क्रन्दगणों को देखकर स्वयं शून्य हृदयवाला वह जीव दु:खी होकर आक्रन्दन करने लगता है। उस पुर को छोड़कर वह यमदूतों के द्वारा भयभीत कया जाता हुआ दसवें महीने में अत्यन्त कठिनाई से सुतप्तभवन नामक नगर में पहुँचता है।

वहाँ पुत्रादि से पण्डदान और जलांज ल प्राप्त करके भी सुखी नहीं होता। ग्यारहवाँ मास पूरा होने पर वह रौद्रपुर को जाता है। और पुत्रादि के द्वारा दिये हुए एकादश मा सक पण्ड को वहाँ खाता है। साढ़े ग्यारह मास बीतने पर वह जीव पयोवर्षण नामक नगर में पहुँचता है। वहाँ प्रेतों को दु:ख देने वाले मेघ घनघोर वर्षा करते हैं, वहाँ पर दु:खी वह प्रेत ऊनाब्दिक श्राद्ध के पण्ड को खाता है।

इसके बाद वर्ष पूरा होने पर वह जीव शीताढ्य नामक नगर को प्राप्त होता है, वहाँ हिम से भी सौ गुनी अ धक महान ठंड पड़ती है। शीत से दु:खी तथा क्षु धत वह जीव इस

आशा से दसों दिशाओं में देखता है क शायद कहीं कोई हमारा बान्धव हो, जो मेरे दु:ख को दूर कर सके। तब यम के दूत कहते हैं - तुम्हारा ऐसा पुण्य कहाँ है? फर वा र्षक पण्ड को खाकर वह धैर्य धारण करता है।

उसके बाद वर्ष के अन्त में यमपुर के निकट पहुँचने पर वह प्रेत बहुभीतिपुर में जाकर हाथ भर माप के अपने शरीर को छोड़ देता है। हे पक्षी! पुन: कर्म भोग के लए अंगुष्ठ मात्र के वायुस्वरुप यातना देह को प्राप्त करके वह यमदूतों के साथ जाता है। हे कश्यपात्मज ! जिन्होंने और्ध्वदैहिक - मरणका लक - दान नहीं दिए हैं, वे यमदूतों के द्वारा दृढ़ बन्धनों से बँधे हुए अत्यन्त कष्ट से यमपुर को जाते हैं।

हे आकाशगामी ! धर्मराजपुर में चार द्वार है, जिनमें से द क्षण द्वार के मार्ग का तुमसे वर्णन कर दिया। इस महान भयंकर मार्ग में भूख-प्यास और श्रम से दु:खी जीव जिस प्रकार जाते हैं, वह सब मैंने बतला दिया। अब और क्या सुनना चाहते हो।

।।इस प्रकार गरुड़ पुराण के अन्तर्गत सारोद्वार में “यममार्गनिरुपण” नामक दूसरा अध्याय पूर्ण हुआ।।

गरुड़ पुराण - तीसरा अध्याय

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे केशव ! यम मार्ग की यात्रा पूरी कर के यम के भवन में जाकर पापी कस प्रकार की यातना को भोगता है? वह मुझे बतलाइए।

श्रीभगवानुवाच

श्री भगवान बोले - हे वनता के पुत्र गरुड़! मैं नरक यातना को आदि से अन्त तक कहूँगा, सुनो। मेरे द्वारा नरक का वर्णन कये जाने पर उसे सुनने मात्र से ही तुम काँप उठोगे। हे कश्यप नन्दन ! बहुभीतिपुर के आगे चौवालीस योजन में फैला हुआ धर्मराज का वशाल पुर है। हाहाकार से परिपूर्ण उस पुर को देखकर पापी क्रन्दन करने लगता है। उसके क्रन्दन को सुनकर यमपुर में वचरण करने वाले यम के गण - प्रतिहार (द्वारपाल) - के पास जाकर उस पापी के वषय में बताते हैं। धर्मराज के द्वार पर सर्वदा धर्मध्वज नामक प्रतीहार (द्वारपाल) स्थित रहता है। वह द्वारपाल जाकर चत्रगुप्त से उस प्राणी के शुभ और

अशुभ कर्म को बताता है। उसके बाद चत्रगुप्त भी उसके वषय में धर्मराज से निवेदन करते हैं।

हे ताक्ष्र्य! जो नास्तिक और महापापी प्राणी हैं, उन सभी के वषय में धर्मराज यथार्थ रूप से भली भाँति जानते हैं। तो भी वे चत्रगुप्त से उन प्रा णयों के पाप के वषय में पूछते हैं और सर्वज्ञ चत्रगुप्त भी श्रवणों से पूछते हैं। श्रवण ब्रह्मा के पुत्र हैं। वे स्वर्ग, पृथ्वी तथा पाताल में वचरण करने वाले तथा दूर से ही सुन एवं जान लेने वाले हैं। उनके नेत्र सुदूर के दृश्यों को भी देख लेने वाले हैं।

श्रवणी नाम की उनकी पृथक-पृथक पत्नियाँ भी उसी प्रकार के स्वरूप वाली हैं अर्थात श्रवणों के समान ही हैं। वे स्त्रियों की सभी प्रकार की चेष्टाओं को तत्वत: जानती हैं। मनुष्य छिपकर अथवा प्रत्यक्ष रूप से जो कुछ करता और कहता है, वह सब मनुष्य के मान सक, वा चक और कायिक - सभी प्रकार के शुभ और अशुभ कर्मों को ठीक-ठीक जानते हैं।

मनुष्य और देवताओं के अ धकारी वे श्रवण और श्रव णयाँ सत्यवादी हैं। उनके पास ऎसी शक्ति है, जिसके बल पर वे मनुष्यकृत कर्मों को बतलाते हैं। व्रत, दान और सत्य वचन से जो मनुष्य उन्हें प्रसन्न करता है, उसके प्रति वे सौम्य तथा स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करने वाले हो जाते हैं। वे सत्यवादी श्रवण पा पयों के पाप कर्मों को जानकर धर्मराज के सम्मुख यथावत कह देने के कारण पा पयों के लए दु:खदायी हो जाते हैं।

सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, आकाश, भू म, जल, हृदय, यम, दिन, रात, दोनों संध्याएँ और धर्म - ये सभी मनुष्य के वृत्तान्त को जानते हैं। धर्मराज, चत्रगुप्त, श्रवण और सूर्य आदि मनुष्य के शरीर में स्थित सभी पाप और पुण्यों को पूर्णतया देखते हैं। इस प्रकार पा पयों के पाप के वषय में सुनिश्चित जानकारी प्राप्त करके यम उन्हें बुलाकर अपना अत्यन्त भयंकर रूप दिखाते हैं।

वे पापी यम के ऎसे भयंकर रूप को देखते हैं - जो हाथ में दण्ड लये हुए, बहुत बड़ी काया वाले, भैंसे के ऊपर संस्थित, प्रलयकालीन मेघ के समान आवाज वाले, काजल के पर्वत के समान, बिजली की प्रभाव वाले, आयुधों के कारण भयंकर, बत्तीस भुजाओं वाले, तीन योजन के लम्बे - चौड़े वस्तार वाले, बावली के समान गोल नेत्र वाले, बड़ी-बड़ी दाढ़ो के कारण भयंकर मुख वाले, लाल-लाल आँखों वाले और लम्बी नाक वाले हैं।

मृत्यु और ज्वर आदि से संयुक्त होने के कारण चत्रगुप्त भी भयावह हैं। यम के समान भयानक सभी दूत उनके समीप पा पयों को डराने के लए गरजते रहते हैं। उन चत्रगुप्त को देखकर भयभीत होकर पापी हाहाकार करने लगता है। दान न करने वाला वह पापात्मा काँपता है और बार-बार वलाप करता है। तब चत्रगुप्त यम की आज्ञा से क्रन्दन करते हुए और अपने पाप कर्मों के वषय में सोचते हुए उन सभी प्रा णयों से कहते हैं।

अरे पा पयों ! दुराचारियों ! अहंकार से दू षतो ! तुम अ ववे कयों ने क्यों पाप कमाया है? काम से, क्रोध से तथा पा पयों की संगति से जो पाप तुमने कया है, वह दु:ख देने वाला है, फर हे मूर्खजनों ! तुमने वह पापकर्म क्यों

कया? पूर्वजन्म में तुम लोगों ने जिस प्रकार अत्यन्त हर्षपूर्वक पाप कर्मों को कया है, उसी प्रकार यातना भी भोगनी चाहिए। इस समय यातना भोगने से क्यों पराङ्मुख हो रहे हो?

तुम लोगों ने जो बहुत - से पाप कये हैं, वे पाप ही तुम्हारे दु:ख के कारण हैं। इसमें हम लोग कारण नहीं हैं। मूर्ख हो या पण्डित, दरिद्र हो या धनवान और सबल हो या निर्बल - यमराज सभी से समान व्यवहार करने वाले कहे गये हैं। चत्रगुप्त के इस प्रकार के वचनों को सुनकर वे पापी अपने कर्मों के वषय में सोचते हुए निश्चेष्ट होकर चुपचाप बैठ जाते हैं।

धर्मराज भी चोर की भाँति निश्चल बैठे हुए उन पा पयों को देखकर उनके पापों का मार्जन करने के लए यथो चत दण्ड देने की आज्ञा करते हैं। इसके बाद वे निर्दयी दूत उन्हें पीटते हुए कहते हैं - हे पापी ! महान घोर और अत्यन्त भयानक नरकों में चलो। यम के आज्ञाकारी प्रचण्ड और चण्डक आदि नाम वाले दूत एक पाश से उन्हें बाँधकर नरक की ओर ले जाते हैं।

वहाँ जलती हुई अग्नि के समान प्रभा वाला एक वशाल वृक्ष है, जो पाँच योजन में फैला हुआ है तथा एक योजन ऊँचा है। उस वृक्ष में नीचे मुख करके उसे साँकलों से बाँधकर वे दूत पीटते हैं। वहाँ जलते हुए वे रोते हैं, पर वहाँ उनका कोई रक्षक नहीं होता। उसी शाल्मली - वृक्ष में भूख और प्यास से पी ड़त तथा यमदूतों द्वारा पीटे जाते हुए अनेक पापी लटकते रहते हैं। वे आश्रय वहीन पापी अंज ल बाँधकर - 'हे यमदूतों ! मेरे अपराध को क्षमा कर दो' , ऐसा उन दूतों से निवेदन करते हैं।

बार-बार लोहे की लाठियों, मुद्गरों, भालों और बर्छियों, गदाओं और मूसलों से उन दूतों के द्वारा वे अत्य धक मारे जाते हैं। मारने से जब वे चेष्टारहित और मूर्छित हो जाते हैं, तब उन निष्चेष्ट पा पयों को देखकर यम के दूत कहते हैं। अरे दुराचारियों ! पा पयों ! तुम लोगों ने दुराचरण क्यों कया। सुलभ होने वाले भी जल और अन्न का दान कभी क्यों नहीं दिया?

तुम लोगों ने आधा ग्रास भी कभी कसी को नहीं दिया और न ही कुत्ते तथा कौए के लए ब ल ही दी। अति थ को नमस्कार नहीं कया और पतरों का तर्पण नहीं कया। यमराज तथा चत्रगुप्त का उत्तम ध्यान भी नहीं कया और उनके मन्त्रों का जप नहीं कया, जिससे तुम्हें यह यातना नहीं होती। कभी कोई तीर्थ यात्रा नहीं की, देवताओं की पूजा भी नहीं की। गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी तुमने "हन्तकार" नहीं निकाला।

संतों की सेवा की नहीं, इस लए अब स्वयं कये गये पाप का फल भोगों। चूं क तुम धर्महीन हो, इस लए तुम्हें बहुत अ धक पीटा जा रहा है। भगवान हरि ही ईश्वर है, वे ही अपरा धयों को क्षमा करने में समर्थ हैं, हम तो उन्हीं की आज्ञा से अपरा धयों को दण्ड देने वाले हैं। ऎसा कहकर वे दूत निर्दयतापूर्वक उन्हें पीटते हैं और उनसे पीटे जाने के कारण वे जलते हुए अंगार के समान नीचे गर जाते हैं।

गरने से उस शाल्मली वृक्ष के पत्तों से उनका शरीर कट जाता है। नीचे गरे हुए उन प्रा णयों को कुत्ते खाते हैं और वे रोते हैं। रोते हुए उन पा पयों के मुख में यमदूत धूल भर देते हैं तथा कुछ पा पयों को व वध पाशों से बाँधकर मुद्गरों से पीटते हैं। कुछ पापी आरे से काष्ठ की भाँति दो टुकड़ो में कये जाते हैं और कुछ भू म पर गराकर कुल्हाड़ी से खण्ड-खण्ड कये जाते हैं।

कुछ को गड्ढे में आधा गाड़कर सर में बाणों से भेदन कया जाता है। कुछ दूसरे पेरने वाले यन्त्र में डालकर इक्षुदण्ड(गन्ने) - की भाँति पेरे जाते हैं। कुछ को चारों ओर से जलते हुए अंगारों से युक्त उल्मुक (जलती हुई लकड़ी) से ढक करके लौह पण्ड की भाँति धधकाया जाता है। कुछ को घी के खौलते हुए कड़ाही में, कुछ को तेल के कड़ाहे में तले जाते हुए बड़े की भाँति इधर-उधर चलाया जाता है।

कन्हीं को मतवाले गजेन्द्रों के सम्मुख रास्ते में फेंक दिया जाता है, कन्हीं को हाथ और पैर बाँधकर अधोमुख लटकाया जाता है। कन्हीं को कुएँ में फेंका जाता है, कन्हीं को पर्वतों से गराया जाता है, कुछ दूसरे कीड़ो से युक्त कुण्डों में डुबो दिये जाते हैं, जहाँ वे कीड़ो के द्वारा व्य थत होते हैं। कुछ पापी वज्र के समान चोंच वाले बड़े-बड़े कौओं, गीधों और मांसभोजी प क्षयों द्वारा शरो देश में, नेत्र में और मुख में चोंचों से आघात करके नोंचे जाते हैं।

कुछ दूसरे पा पयों से ऋण को वापस करने की प्रार्थना करते हुए कहते हैं - 'मेरा धन दो, मेरा धन दो। यमलोक में मैंने तुम्हें देख लया है, मेरा धन तुम्हीं ने लया है' नरक में इस प्रकार ववाद करते हुए पा पयों के अंगों से सड़ सयों द्वारा माँस नोचकर यमदूत उन्हें देते हैं। इस प्रकार उन पा पयों को सम्यक प्रता ड़त करके यम की आज्ञा से यमदूत खींचकर ता मस्त्र आदि घोर नरकों में फेंक देते हैं।

उस वृक्ष के समीप में ही बहुत दु:खों से परिपूर्ण नरक है, जिनमें प्राप्त होने वाले महान दु:खों का वर्णन वाणी से नहीं कया जा सकता। हे आकाशचारिन गरुड़! नरकों की संख्या चौरासी लाख है, उनमें से अत्यन्त भयंकर और प्रमुख नरकों की संख्या इक्कीस है।

ता मस्त्र, लोहशंकु, महारौरव, शाल्मली, रौरव,कुड्मल, कालसूत्रक, पूतिमृत्तिक, संघात, लोहितोद, स वष, संप्रतापन, महानिरय, काकोल, संजीवन, महापथ, अवी च, अन्धता मस्त्र, कुम्भीपाक, सम्प्रतापन तथा तपन - ये इक्कीस नरक हैं\ अनेक प्रकार के पापों का फल इनमें प्राप्त होता है और ये यम के दूतों से अ धष्ठित हैं।

इन नरकों में गरे हुए मूर्ख, पापी, अधर्मी जीव कल्पपर्यन्त उन-उन नरक-यातनाओं को भोगते हैं। ता मस्त्र और अन्धता मस्त्र तथा रौरवादि नरकों की जो यातनाएँ हैं, उन्हें स्त्री और पुरुष पारस्परिक संग से नि र्मतकर भोगते हैं। इस प्रकार कुटुम्ब का भरण-पोषण करने वाला अथवा केवल अपना पेट भरने वाला भी यहाँ कुटुम्ब और शरीर दोनों को छोड़कर मृत्यु के अनन्तर इस प्रकार का फल भोगता है।

प्रा णयों के साथ द्रोह करके भरण-पोषण कये गये अपने स्थूल शरीर को यहीं छोड़कर पापकर्म रूपी पाथेय के साथ पापी अकेला ही अंधकारपूर्ण नरक में जाता है। जिसका द्रव्य

चोरी चला गया है ऎसे व्यक्ति की भाँति पापी पुरुष दैव से प्राप्त अधर्मपूर्वक कुटुम्ब पोषण के फल को नरक में आतुर होकर भोगता है।

केवल अधर्म से कुटुम्ब के भरण-पोषण के लए प्रयत्नशील व्यक्ति अंधकार की पराकाष्ठा अन्धता मस्त्र नामक नरक में जाता है। मनुष्यलोक के नीचे नरकों की जितनी यातनाएँ हैं, क्रमश: उनका भोग भोगते हुए वह पापी शुद्ध होकर पुन: इस मर्त्यलोक में जन्म पाता है।

।। इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में 'यमयातनानिरूपण' नामक तीसरा अध्याय पूर्ण हुआ।।

गरुड़ पुराण - चौथा अध्याय

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे केशव ! कन पापों के कारण पापी मनुष्य यमलोक के महामार्ग में जाते हैं और कन पापों से वैतरणी में गरते हैं तथा कन पापों के कारण नरक में जाते हैं? वह मुझे बताइए।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान बोले - सदा पापकर्मों में लगे हुए, शुभ कर्म से वमुख प्राणी एक नरक से दूसरे नरक को, एक दु:ख के बाद दूसरे दु:ख को तथा एक भय के बाद दूसरे भय को प्राप्त होते हैं। धा र्मक जन धर्मराजपुर में तीन दिशाओं में स्थित द्वारों से जाते हैं और पापी पुरुष द क्षण-द्वार के मार्ग से ही वहाँ जाते हैं।

इसी महादु:खदायी द क्षण मार्ग में वैतरणी नदी है, उसमें जो पापी पुरुष जाते हैं, उन्हें मैं तुम्हें बताता हूँ - जो ब्राह्मणों की हत्या करने वाले, सुरापान करने वाले, गोघाती, बाल हत्यारे, स्त्री की हत्या करने वाले, गर्भपात करने वाले और गुप्तरूप से पाप करने वाले हैं, जो गुरु के धन को हरण करने वाले, देवता अथवा ब्राह्मण का धन हरण करने वाले, स्त्रीद्रव्यहारी, बालद्रव्यहारी हैं, जो ऋण लेकर उसे न लौटानेवाले, धरोहर का अपहरण करने वाले, वश्वासघात करने वाले, वषान्न देकर मार डालने वाले, दूसरे के दोष को ग्रहण करने

वाले, गुणों की प्रशंसा ना करने वाले, गुणवानों के साथ डाह रखने वाले, नीचों के साथ अनुराग रखने वाले, मूढ़, सत्संगति से दूर रहने वाले हैं, जो तीर्थों, सज्जनों, सत्कर्मों, गुरुजनों और देवताओं की निन्दा करने वाले हैं, पुराण, वेद, मीमांसा, न्याय और वेदान्त को दूषत करने वाले हैं।

दु:खी व्यक्ति को देखकर प्रसन्न होने वाले, प्रसन्न को दु:ख देने वाले, दुर्वचन बोलने वाले तथा सदा दूषत चत्तवृत्ति वाले हैं। जो हितकर वाक्य और शास्त्रीय वचनों को कभी न सुनने वाले, अपने को सर्वश्रेष्ठ समझने वाले, घमण्डी, मूर्ख होते हुए अपने को वद्वान समझने वाले हैं - ये तथा अन्य बहुत पापों का अर्जन करने वाले अधर्मी जीव रात-दिन रोते हुए यममार्ग में जाते हैं। यमदूतों के द्वारा पीटे जाते हुए वे पापी वैतरणी की ओर जाते हैं और उसमें गरते हैं, ऎसे उन पा पयों के वषय में मैं तुम्हें बताता हूँ -

जो माता, पता, गुरु, आचार्य तथा पूज्यजनों को अपमानित करते हैं, वे मनुष्य वैतरणी में डूबते हैं। जो पुरुष पतिव्रता, सच्चरित्र, उत्तम कुल में उत्पन्न, वनय से युक्त स्त्री को द्वेष के कारण छोड़ देते हैं, वे वैतरणी में पड़ते हैं। जो हजारों गुणों के होने पर भी सत्पुरुषों में दोष का आरोपण करते हैं और उनकी अवहेलना करते हैं, वे वैतरणी में पड़ते हैं।

वचन दे करके जो ब्राह्मण को यथार्थ रूप में दान नहीं देता है और बुला करके जो व्यक्ति "नहीं है" ऎसा कहता है, वे दोनों सदा वैतरणी में निवास करते हैं। स्वयं दी हुई वस्तु का जो अपहरण कर लेता है, दान देकर पश्चात्ताप करता है, जो दूसरे की आजी वका का हरण कर लेता है, दान देने से रोकता है, यज्ञ का वध्वंस करता है, कथा-भंग करता है, क्षेत्र की सीमा का हरण कर लेता है और गोचर भू म को जोतता है, वह वैतरणी में पड़ता है।

ब्राह्मण होकर रस वक्रय करने वाला, वृषली का पति (शूद्र स्त्री का ब्राह्मण पति), वेद प्रतिपादित यज्ञ के अतिरिक्त अपने लए पशुओं की हत्या करने वाला, ब्रह्मकर्म से च्युत, मांसभोजी, मद्य पीने वाला, उच्छृंखल स्वभाव वाला, शास्त्र अध्ययन से रहित (ब्राह्मण), वेद पढ़ने वाला शूद्र, क पला का दूध पीने वाला शूद्र, यज्ञोपवीत धारण करने वाला शूद्र, ब्राह्मणी का पति बनने वाला शूद्र, राजमहिषी के साथ व्य भचार करने वाला, परायी स्त्री का अपहरण करने वाला, कन्या के साथ कामाचार की इच्छा रखने वाला तथा जो सतीत्व नष्ट करने वाला है।

ये सभी तथा इसी प्रकार और भी बहुत नि षद्धाचरण करने में उत्सुक तथा शास्त्र वहित कर्मों को त्याग वाले वे मूढजन वैतरणी में गरते हैं। सभी मार्गों को पार करके पापी यम के भवन में पहुँचते हैं और पुन: यम की आज्ञा से आकर दूत लोग उन्हें वैतरणी में फेंक देते हैं। हे खगराज! यह वैतरणी नदी कष्ट प्रदान करने वाले सभी प्रमुख नरकों में सर्वा धक कष्टप्रद है। इस लए यमदूत पा पयों को उस वैतरणी में फेंकते हैं।

जिसने अपने जीवनकाल में कृष्णा (काली) गाय का दान नहीं कया अथवा मृत्यु के पश्चात जिसके उद्देश्य से बान्धवों द्वारा कृष्णा गौ नहीं दी गई तथा जिसने अपनी और्ध्वदैहिक क्रया नहीं कर ली या जिसके उद्देश्य से और्ध्वदैहिक क्रया नहीं की गई हो, वे वैतरणी में महान दु:ख भोग करके वैतरणी तटस्थित शाल्मली-वृक्ष में जाते हैं। जो झूठी गवाही देने वाले, धर्म पालन का ढोंग करने वाले, छल से धन का अर्जन करने वाले, चोरी द्वारा आजी वका चलाने वाले, अत्य धक वृक्षों को काटने वाले, वन और वाटिका को नष्ट करने वाले, व्रत तथा तीर्थ का परित्याग करने वाले, वधवा के शील को नष्ट करने वाले हैं।

जो स्त्री अपने पति को दोष लगाकर परपुरुष में आसक्त होने वाली है - ये सभी और इस प्रकार के अन्य पापी भी शाल्मली वृक्ष द्वारा बहुत ताड़ना प्राप्त करते हैं। पीटने से नीचे गरे हुए उन पा पयों को यमदूत नरकों में फेंकते हैं। उन नरकों में जो पापी गरते हैं, उनके वषय में मैं तुम्हें बतलाता हूँ - वेद की निन्दा करने वाले नास्तिक, मर्यादा का उल्लंघन करने वाले, कंजूस, वषयों में डूबे रहने वाले, दम्भी तथा कृतघ्न मनुष्य निश्चय ही नरकों में गरते हैं। जो कुंआ, तालाब, बावली, देवालय तथा सार्वजनिक स्थान, धर्मशाला आदि - को नष्ट करते हैं, वे निश्चय ही नरक में जाते हैं।

स्त्रियों, छोटे बच्चों, नौकरों तथा श्रेष्ठजनों को छोड़कर एवं पतरों और देवताओं की पूजा का परित्याग करके जो भोजन करते हैं, वे नरकगामी होते हैं। जो मार्ग को कीलों से, पुलों से, लक ड़यों से तथा पत्थरों एवं काँटों से रोकते हैं, निश्चय ही वे नरकगामी होते हैं।

जो मन्द पुरुष भगवान शव, भगवती शक्ति, नारायण, सूर्य, गणेश, सद्गुरु और वद्वान - इनकी पूजा नहीं करते, वे नरक में जाते हैं। दासी को अपनी शय्या पर आरो पत करने से ब्राह्मण अधोगति को प्राप्त होता है और शूद्रा में संतान उत्पन्न करने से वह ब्राह्मणत्व से ही च्युत हो जाता है। वह ब्राह्मणधम कभी भी नमस्कार के योग्य नहीं होता। जो मूर्ख ऐसे ब्राह्मण की पूजा करते हैं, वे नरकगामी होते हैं। दूसरों के कलह से प्रसन्न होने वाले जो मनुष्य ब्राह्मणों के कलह तथा गौओं की लड़ाई को नहीं रुकवाते हैं (प्रत्युत ऐसा

देखकर प्रसन्न होते हैं) अथवा उसका समर्थन करते हैं, बढ़ावा देते हैं, वे अवश्य ही नरक में जाते हैं।

जिसका कोई दूसरा शरण नहीं है, ऎसी पतिपरायणा स्त्री के ऋतुकाल की द्वेषवश उपेक्षा करने वाले निश्चित ही नरकगामी होते हैं। जो कामान्ध पुरुष रजस्वला स्त्री से गमन करते हैं अथवा पर्व के दिनों (अमावस्या, पू र्णमा आदि) में, जल में, दिन में तथा श्राद्ध के दिन कामुक होकर स्त्रीसंग करते हैं, वे नरकगामी होते हैं।

जो अपने शरीर के मल को आग, जल, उपवन, मार्ग अथवा गोशाला में फेंकते हैं, वे निश्चित ही नरक में जाते हैं। जो ह थयार बनाने वाले, बाण और धनुष का निर्माण करने वाले तथा इनका वक्रय करने वाले हैं, वे नरकगामी होते हैं। चमड़ा बेचने वाले वैश्य, केश (योनि) का वक्रय करने वाली स्त्रियाँ तथा वष का वक्रय करने वाले - ये सभी नरक में जाते हैं।

जो अनाथ के ऊपर कृपा नहीं करते हैं, सत्पुरुषों से द्वेष करते हैं और निरपराध को दण्ड देते हैं, वे नरकगामी होते हैं। आशा लगाकर घर पर आये हुए ब्राह्मणों और याचकों को पाकसम्पन्न रहने पर भी जो भोजन नहीं कराते, वे निश्चय ही नरक प्राप्त करने वाले होते हैं। जो सभी प्रा णयों में वश्वास नहीं करते और उन पर दया नहीं करते तथा जो सभी प्रा णयों के प्रति कुटिलता का व्यवहार करते हैं, वे निश्चय ही नरकगामी होते हैं। जो अजितेन्द्रिय पुरुष नियमों को स्वीकार कर के बाद में उन्हें त्याग देते हैं, वे नरकगामी होते हैं।

जो अध्यात्म वद्या प्रदान करने वाले गुरु को नहीं मानते और जो पुराणवक्ता को नहीं मानते, वे नरक में जाते हैं। ववाह को भंग करने वाला, देव यात्रा में वघ्न करने वाला तथा तीर्थयात्रियों को लूटने वाला घोर नरक में वास करता है और वहाँ से उसका पुनरावर्तन नहीं होता।

जो महापापी घर, गाँव तथा जंगल में आग लगाता है, यमदूत उसे ले जाकर अग्निकुण्डों में पकाते हैं। इस अग्नि में जले हुए अंगवाला वह पापी जब छाया की याचना करता है तो यमदूत उसे अ सपत्र नामक वन में ले जाते हैं। जहाँ तलवार के समान तीक्ष्ण

पत्तों से उसके अंग जब कट जाते हैं तब यमदूत उससे कहते हैं - रे पापी! शीतल छाया में सुख की नींद सो।।

जब वह प्यास से व्याकुल होकर जल पीने की इच्छा से पानी माँगता है तो दूतों के द्वारा उसे खौलता हुआ तेल पीने के लये दिया जाता है। "पानी पीयो और अन्न खाओ" - ऐसा उस समय उनके द्वारा कहा जाता है। उस अति उष्ण तेल के पीते ही उनकी आँतें जल जाती हैं और वे गर पड़ते हैं। कसी प्रकार पुन: उठकर अत्यन्त दीन की भाँति प्रलाप करते हैं। ववश होकर ऊर्ध्व श्वास लेते हुए वे कुछ कहने में भी समर्थ नहीं होते।।

हे ताक्ष्र्य! इस प्रकार की पा पयों की बहुत सी यातनाएँ बतायी गई हैं। वस्तारपूर्वक इन्हें कहने की क्या आवश्यकता? इनके संबंध में सभी शास्त्रों में कहा गया है। इस प्रकार हजारों नर-नारी नारकीय यातना को भोगते हुए प्रलयपर्यन्त घोर नरकों में पकते रहते हैं। उस पाप का अक्षय फल भोगकर पुन: वहीं पैदा होते हैं और यम की आज्ञा से पृथ्वी पर आकर स्थावर आदि योनियों को प्राप्त करते हैं।

वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली, गरि (पर्वत) तथा तृण आदि ये स्थावर योनियाँ कही गई हैं, ये अत्यन्त मोह से आवृत हैं। कीट, पशु-पक्षी, जलचर तथा देव - इन योनियों को मलाकर चौरासी लाख योनियाँ कही गई हैं।

इन सभी योनियों में घूमते हुए जब जीव मनुष्य योनि प्राप्त करते हैं और मनुष्य योनि में भी नरक से आये व्यक्ति चाण्डाल के घर जन्म लेते हैं तथा उसमें भी कुष्ठ आदि पाप चह्नों से वे बहुत दु:खी रहते हैं। कसी को ग लत कुष्ठ हो जाता है, कोई जन्म से अन्धे होते हैं और कोई महारोग से व्य थत होते हैं। इस प्रकार पुरुष और स्त्री में पाप के चह्न दिखाई पड़ते हैं।

गरुड़ पुराण - पाँचवां अध्याय

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे केशव ! जिस-जिस पाप से जो-जो चह्न प्राप्त होते हैं और जिन-जिन योनियों में जीव जाते हैं, वह मुझे बताइए।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - नरक से आये हुए पापी जिन पापों के द्वारा जिस योनि में आते हैं और जिस पाप से जो चह्न होता है, वह मुझसे सुनो। ब्रह्महत्यारा क्षय रोगी होता है, गाय की हत्या करने वाला मूर्ख और कुबड़ा होता है। कन्या की हत्या करने वाला कोढ़ी होता है और ये तीनों पापी चाण्डाल योनि प्राप्त करते हैं.

स्त्री की हत्या करने वाला तथा गर्भपात कराने वाला पु लन्द(भल्ल) होकर रोगी होता है। परस्त्रीगमन करने वाला नपुंसक और गुरु पत्नी के साथ व्य भचार करने वाला चर्म रोगी होता है। मांस का भोजन करने वाले का अंग अत्यन्त लाल होता है, मद्य पीने वाले के दाँत काले होते हैं, लालचवश अभक्ष्य भक्षण करने वाले ब्राह्मण को महोदर रोग होता है। जो दूसरे को दिये बिना मष्टान्न खाता है, उसे गले में गण्डमाला रोग होता है, श्राद्ध में अप वत्र अन्न देने वाला श्वेतकुष्ठी होता है।

गर्व से गुरु का अपमान करने वाला मनुष्य मरगी का रोगी होता है। वेदशास्त्र की निन्दा करने वाला निश्चित ही पाण्डुरोगी होता है। झूठी गवाही देने वाला गूँगा, पंक्तिभेद करने वाला काना, ववाह में वघ्न करने वाला व्यक्ति ओष्ठ रहित और पुस्तक चुराने वाला जन्मान्ध होता है। गाय और ब्राह्मण को पैर से मारने वाला लूला-लंगड़ा होता है, झूठ बोलने वाला हकलाकर बोलता है तथा झूठी बात सुनने वाला बहरा होता है।

वष देने वाला मूर्ख और उन्मत्त (पागल) तथा आग लगाने वाला खल्वाट (गंजा) होता है। पल (माँस) बेचने वाला अभागा और दूसरे का मांस खाने वाला रोगी होता है। रत्नों का अपहरण करने वाला हीन जाति में उत्पन्न होता है, सोना चुराने वाला नखरोगी और अन्य धातुओं को चुराने वाला निर्धन होता है। अन्न चुराने वाला चूहा और धान चुराने वाला शलभ (टिड्डी) होता है। जल की चोरी करने वाला चातक और वष का व्यवहार करने वाला वृश्चिक (बिच्छू) होता है। शाक-पात चुराने वाला मयूर होता है, शुभ गन्धवाली वस्तुओं को चुराने वाला छुछुन्दरी होता है, मधु चुराने वाला डाँस, मांस चुराने वाला गीध और नमक चुराने वाला चींटी होता है।

ताम्बूल, फल तथा पुष्प आदि की चोरी करने वाला वन में बंदर होता है। जूता, घास तथा कपास को चुराने वाला भेड़ योनि में उत्पन्न होता है। जो रौद्र कर्मों (क्रूरकर्मों) से आजी वका चलाने वाला है, मार्ग में यात्रियों को लूटता है और जो आखेट का व्यसन रखने वाला, वह कसाई के घर का बकरा होता है।

वष पीकर मरने वाला पर्वत पर काला नाग होता है। जिसका स्वभाव अमर्यादित है, वह निर्जन वन में हाथी होता है। ब लवैश्वदेव न करने वाले तथा सब कुछ खा लेने वाले द् वज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) और बिना परीक्षण कये भोजन कर लेने वाले व्यक्ति निर्जन वन में व्याघ्र होते हैं। जो ब्राह्मण गायत्री का स्मरण नहीं करता और जो संध्योपासना नहीं करता, जिसका अन्त:स्वरुप दू षत तथा बाह्य स्वरूप साधु की तरह प्रतीत होता है, वह ब्राह्मण बगुला होता है।

जिनको यज्ञ नहीं करना चाहिए, उनके यहाँ यज्ञ कराने वाला ब्राह्मण गाँव का सूअर होता है, क्षमता से अ धक यज्ञ कराने वाला गर्दभ तथा बिना आमंत्रण के भोजन करने वाला कौआ होता है। जो सत्पात्र शष्य को वद्या नहीं प्रदान करता, वह ब्राह्मण बैल होता है। गुरु की सेवा न करने वाला शष्य बैल और गधा होता है। गुरु के प्रति अपमान के तात्पर्य से हुं या तुं शब्दों का उच्चारण करने वाला और वाद- ववादों में ब्राह्मण को पराजित करने वाला जल वहीन अरण्य में ब्रह्म राक्षस होता है।

प्रतिज्ञा करके द् वज को दान न देनेवाला सयार होता है। सत्पुरुषों का अनादर करने वाला व्यक्ति अग्निमुख सयार होता है। मत्र से द्रोह करने वाला पर्वत का गीध होता है और क्रय में धोखा देने वाला उल्लू होता है। वर्णाश्रम की निन्दा करने वाला वन में कपोत होता है। आशा को तोड़ने वाला और स्नेह को नष्ट करने वाला, द्वेष वश स्त्री का परित्याग कर देने वाला बहुत काल तक चक्रवाक (चकोर) होता है।

माता- पता, गुरु से द्वेष करने वाला तथा बहन और भाई से शत्रुता करने वाला हजारों जन्मों तक गर्भ में या योनि में नष्ट होता रहता है। सास-ससुर को अपशब्द कहने वाली स्त्री तथा नित्य कलह करने वाली स्त्री जलौका अर्थात जल जोंक होती है और पति की भर्त्सना करने वाली नारी जूँ होती है। अपने पति का परित्याग करके परपुरुष का सेवन करने वाली स्त्री वल्गुनी (चमगादड़ी), छिपकली अथवा दो मुँह वाली स र्पणी होती है।

सगोत्र की स्त्री के साथ संबंध बनाकर अपने गोत्र को वनष्ट करने वाला तरक्ष (लकड़बग्घा) और शल्लक(साही) होकर रीछ योनि में जन्म लेता है। तापसी के साथ व्य भचार करने वाला कामी पुरुष मरु प्रदेश में पशाच होता है और अप्राप्त यौवन से संबंध करने वाला वन में अजगर होता है। गुरु पत्नी के साथ गमन की इच्छा रखने वाला मनुष्य कृकलास (गर गट) होता है। राजपत्नी के साथ गमन करने वाला ऊँट तथा मत्र की पत्नी के साथ गमन करने वाला गधा होता है।

गुदा गमन करने वाला वष्ठा भोगी सूअर तथा शूद्रागामी बैल होता है। जो महाकामी होता है, वह काम लम्पट घोड़ा होता है। कसी के मरणाशौच में एकादशाह तक भोजन करने वाला कुत्ता होता है। ददेवद्रव्य भोक्ता देवलक ब्राह्मण मुर्गे की योनि प्राप्त करता है। जो ब्राह्मणधम द्रव्यार्जन के लये देवता की पूजा करता है, वह देवलक कहलाता है। वह देवकार्य तथा पतृकार्य के लये निन्दनीय है।

महापातक से प्राप्त अत्यन्त घोर एवं दारुण नरकों का भोग प्राप्त करके महापातकी व्यक्ति कर्म के क्षय होने पर पुन: इस मर्त्य लोक में जन्म लेते हैं। ब्रह्महत्यारा गधा, ऊँट और महिषी की योनि प्राप्त करता है तथा सुरापान करने वाला भे ड़या, कुत्ता एवं सयार की योनि में जाते हैं। स्वर्ण चुराने वाला कृ म, कीट तथा पतंग क योनि प्राप्त करता है। गुरु पत्नी के साथ गमन करने वाला क्रमश: तृण, गुल्म तथा लता होता है।

परस्त्री का हरण करने वाला, धरोहर का हरण करने वाला तथा ब्राह्मण के धन का अपहरण करने वाला ब्रह्मरा़ास होता है। ब्राह्मण का धन कपट-स्नेह से खानेवाला सात पीढ़ियों तक अपने कुल का वनाश करता है और बलात्कार तथा चोरी के द्वारा खाने पर जब तक चन्द्रमा और तारकों की स्थिति होती है, तब तक वह अपने कुल को जलाता है।

लोहे और पत्थरों के चूर्ण तथा वष को व्यक्ति पचा सकता है, पर तीनों लोकों में ऎसा कौन व्यक्ति है, जो ब्रह्मस्व (ब्राह्मण के धन) को पचा सकता है? ब्राह्मण के धन से पो षत की गयी सेना तथा वाहन युद्ध काल में बालू से बने सेतु - बाँध के समान नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। देवद्रव्य का उपभोग करने से अथवा ब्रह्मस्वरुप का हरण करने से ब्राह्मण का अतिक्रमण करने से कुल पतित हो जाते हैं।

अपने आ श्रत वेद परायण ब्राह्मण को छोड़कर अन्य ब्राह्मण को दान देना ब्राह्मण का अतिक्रमण करना कहलाता है। वेदवेदांग के ज्ञान से रहित ब्राह्मण को छोड़ना अतिक्रमण नहीं कहलाता है, क्यों क जलती हुई आग को छोड़कर भस्म में आहुति नहीं दी जाती। हे ताक्ष्र्य! ब्राह्मण का अतिक्रमण करने वाला व्यक्ति नरकों को भोगकर क्रमश: जन्मान्ध एवं दरिद्र होता है, वह कभी दाता नहीं बन सकता अ पतु याचक ही रहता है।

अपने द्वारा दी हुई अथवा दूसरे द्वारा दी गई पृथ्वी को जो छीन लेता है, वह साठ हजार वर्षों तक वष्ठा का कीड़ा होता है। जो स्वयं कुछ देकर पुन: स्वयं ले भी लेता है, वह पापी एक कल्प तक नरक में रहता है। जी वका अथवा भू म का दान देकर यत्नपूर्वक उसकी रक्षा करनी चाहिए, जो रक्षा नहीं करता प्रत्युत उसे हर लेता है, वह पंगु अर्थात लंगड़ा कुता होता है।

ब्राह्मण को आजी वका देने वाला व्यक्ति एक लाख गोदान का फल प्राप्त करता है और ब्राह्मण की वृत्तिका हरण करने वाला बन्दर, कुत्ता तथा लंगूर होता है। हे खगेश्वर! प्रा णयों को अपने कर्म के अनुसार लोक में पूर्वोक्त योनियाँ तथा शरीर पर चह्न देखने को मलते हैं। इस प्रकार दुष्कर्म करने वाले जीव नारकीय यातनाओं को भोगकर अव शष्ट पापों को भोगने के लये इन पूर्वोक्त योनियों में जाते हैं।

इसके बाद हजारों जन्मों तक तिर्यक (पशु-पक्षी) का शरीर प्राप्त करके वे बोझा ढोने आदि कार्यों से दु:ख प्राप्त करते हैं। फर पक्षी बनकर वर्षा, शीत तथा आतप से दु:खी होते हैं। इसके बाद अन्त में जब पुण्य और पाप बराबर हो जाते हैं तब मनुष्य की योनि मलती है। स्त्री-पुरुष के संबंध से वह गर्भ में उत्पन्न होकर क्रमश: गर्भ से लेकर मृत्यु तक के दु:ख प्राप्त करके पुन: मर जाता है।

इस प्रकार सभी प्रा णयों का जन्म और वनाश होता है। यह जन्म-मरण का चक्र चारों प्रकार की सृष्टि में चलता रहता है। मेरी माया से प्राणी रह्ट (घटी यन्त्र) की भाँति ऊपर-नीचे की योनियों में भ्रमण करते रहते हैं। कर्मपाश बँधे रहकर कभी वे नरक में और कभी भू म पर जन्म लेते हैं।

दान न देने से प्राणी दरिद्र होता है। दरिद्र हो जाने पर फर पाप करता है। पाप के प्रभाव से नरक में जाता है और नरक से लौटकर पुन: दरिद्र और पुन: पापी होता है। प्राणी

के द्वारा कये गये शुभ और अशुभ कर्मों का फल भोग उसे अवश्य ही भोगना पड़ता है, क्यों क सैकड़ों कल्पों के बीत जाने पर भी बिना भोग के कर्म फल का नाश नहीं होता।

।।इस प्रकार गरुड़ पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "पाप चह्ननिरुपण" नामक पाँचवां अध्याय पूर्ण हुआ।।

गरुड़ पुराण - छठा अध्याय

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे केशव ! नरक से आया हुआ जीव माता के गर्भ में कैसे उत्पन्न होता है? वह गर्भवास आदि के दु:खों को जिस प्रकार भोगता है, वह सब भी मुझे बताइए।

वष्णुरुवाच

भगवान वष्णु ने कहा - स्त्री और पुरुष के संयोग से जैसे मनुष्य की उत्पत्ति होती है, उसे मैं तुम्हें कहूँगा।

ऋतुकाल के आरंभ के तीन दिनों तक इन्द्र को लगी ब्रह्महत्या का चतुर्थांश रजस्वला स्त्रियों में रहता है, उस ऋतुकाल के मध्य में कये गये गर्भाधान के फलस्वरुप पापात्माओं के देह की उत्पत्ति होती है। रजस्वला स्त्री प्रथम दिन चाण्डा लनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी और तीसरे दिन रजकी (धोबिन) कहलाती है। नरक से आए हुए प्रा णयों की ये तीन माताएँ होती हैं। दैव की प्रेरणा से कर्मानुरोधी शरीर प्राप्त करने के लये प्रा ण पुरुष के वीर्य का आश्रय लेकर स्त्री के उदर में प्र वष्ट होता है। एक रात्रि में वह शुक्राणु कलल के रूप में, पाँच रात्रि में बुदबुद के रूप में, दस दिनों में बेर के समान तथा उसके पश्चात मांस पे शयों से युक्त अण्डाकार हो जाता है।

एक मास में सर, दो मास में बाहु आदि शरीर के सभी अंग, तीसरे मास में नख, लोम, अस्थि, चर्म तथा लंगबोधक छिद्र उत्पन्न होते हैं। चौथे मास में रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र - ये सात धातुएँ तथा पाँचवें मास में भूख-प्यास पैदा होती है। छठे मास में जरायु में लपटा हुआ वह जीव माता की दाहिनी कोख में घूमता है और

माता के द्वारा खाये-पीये अन्नादि से बढ़े हुए धातुओं वाला वह जन्तु वष्ठा-मूत्र के दुर्गन्धयुक्त गढ्ढे रूप गर्भाशय में सोता है।

वहाँ गर्भस्थ क्षु धत कृ मयों के द्वारा उसके सुकुमार अंग प्रतिक्षण बार-बार काटे जाते हैं, जिससे अत्य धक क्लेश होने के कारण वह जीव मूर्च्छित हो जाता है। माता के द्वारा खाये हुए कड़वे, तीखे, गरम, नमकीन, रूखे तथा ख` पदार्थों के अति उद्वेजक संस्पर्श से उसे समूचे अंग में वेदना होती है और जरायु अर्थात झल्ली से लपटा हुआ वह जीव आँतों द्वारा बाहर से ढका रहता है।

उसकी पीठ और गरदन कुण्डलाकार रहती है। इस प्रकार अपने अंगों से चेष्टा करने में असमर्थ होकर भी वह जीव पंजरे में स्थित पक्षी की भाँति माता की कु क्ष में अपने सर को दबाए हुए पड़ा रहता है। भगवान की कृपा से अपने सैकड़ों जन्मों के कर्मों का स्मरण करता हुआ वह गर्भस्थ जीव लम्बी श्वास लेता है।

ऎसी स्थिति में भला उसे कौन सा सुख प्राप्त हो सकता है? मांस-मज्जा आदि सात धातुओं के आवरण में आवृत वह ऋ षकल्प जीव भयभीत होकर हाथ जोड़कर वकल वा ण से उन भगवान की स्तुति करता है, जिन्होंने उसको माता के उदर में डाला है। सातवें महीने के आरंभ से ही सभी जन्मों के कर्मों का ज्ञान हो जाने पर भी गर्भस्थ प्रसूतिवायु के द्वारा चा लत होकर वह वष्ठा में उत्पन्न सहोदर (उसी पेट में उत्पन्न अन्य) कीड़े की भाँति एक स्थान पर ठहर नहीं पाता।

जीव उवाच

जीव कहता है - मैं लक्ष्मी के पति, जगत के आधार, अशुभ का नाश करने वाले तथा शरण में आये हुए जीवों के प्रति वात्सल्य रखने वाले भगवान वष्णु की शरण में जाता हूँ। हे नाथ ! आपकी माया से मोहित होकर मैं देह में अहं भाव तथा पुत्र और पत्नी आदि में ममत्वभाव के अ भमान से जन्म-मरण के चक्कर में फँसा हूँ। मैंने अपने परिजनों के उद्देश्य से शुभ और अशुभ कर्म कये, कंतु अब मैं उन कर्मों के कारण अकेला जल रहा हूँ। उन कर्मों के फल भोगने वाले पुत्र-कलत्रादि अलग हो गये। यदि इस गर्भ से निकलकर मैं बाहर आऊँ तो फर आपके चरणों का स्मरण करूँगा और ऎसा उपाय करूँगा जिससे मुक्ति प्राप्त कर लूँ।

वष्ठा और मूत्र के कुएँ में गरा हुआ जठराग्नि से जलता हुआ एवं यहाँ से बाहर निकलने की इच्छा करता हुआ मैं कब बाहर निकल पाऊँगा। जिस दीनदयाल परमात्मा ने मुझे इस प्रकार का वशेष ज्ञान दिया है, मैं उन्हीं की शरण ग्रहण करता हूँ जिससे मुझे पुन: संसार के चक्कर में न आना पड़े। अथवा मैं माता के गर्भगृह से कभी भी बाहर जाने की इच्छा नहीं करता क्यों क बाहर जाने पर पाप कर्मों से पुन: मेरी दुर्गति हो जाएगी। इस लए यहाँ बहुत दु:ख की स्थिति में रहकर भी मैं खेदरहित होकर आपके चरणों का आश्रय लेकर संसार से अपना उद्धार कर लूँगा।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान बोले - इस प्रकार की बु द्धवाले एवं स्तुति करते हुए दस मास के ऋ षकल्प उस जीव को प्रसूतिवायु प्रसव के लये तुरंत नीचे की ओर ढकेलता है। प्रसूतिमार्ग के द्वारा नीचे सर करके सहसा गराया गया वह आतुर जीव अत्यन्त कठिनाई से बाहर निकलता है और उस समय वह श्वास नहीं ले पाता है तथा उसकी स्मृति भी नष्ट हो जाती है। पृथ्वी पर वष्ठा और मूत्र के बीच गरा हुआ वह जीव मल में उत्पन्न कीड़े की भाँति चेष्टा करता है और वपरीत गति प्राप्त करके ज्ञान नष्ट हो जाने के कारण अत्य धक रुदन करने लगता है।

गर्भ में, रुग्णावस्था में श्मशान भू म में तथा पुराण के पारायण या श्रवण के समय जैसी बु द्ध होती है, वह यदि स्थिर हो जाय तो कौन व्यक्ति सांसारिक बन्धन से मुक्त नहीं हो सकता। कर्मभोग के अनन्तर जीव जब गर्भ से बाहर आता है तब उसी समय वैष्णवी माया उस पुरुष को मोहित कर देती है। उस समय माया के स्पर्श से वह जीव ववश होकर कुछ बोल नहीं पाता, प्रत्युत शैशवादि अवस्थाओं में होने वाले दु:खों को पराधीन की भाँति भोगता है।

उसका पोषण करने वाले लोग उसकी स्थिति इच्छा को जान नहीं पाते। अत: प्रत्याख्यान करने में असमर्थ होने के कारण वह अन भप्रेत अर्थात वपरीत स्थिति को प्राप्त हो जाता है। स्वदज जीवों से दू षत तथा वष्ठा-मूत्र से अप वत्र शय्या पर सुलाए जाने के कारण अपने अंगों को खुजलाने में, आसन से उठने में तथा अन्य चेष्टाओं को करने में वह

असमर्थ रहता है। जैसे एक कृ म दूसरे कृ म को काटता है, उसी प्रकार ज्ञानशून्य और रोते हुए उस शशु की कोमल त्वचा को डाँस, मच्छर और खटमल आदि जन्तु व्य थत करते हैं।

इस प्रकार शैशवावस्था का दु:ख भोगकर वह पौगण्डावस्था में भी दु:ख ही भोगता है। तदनन्तर युवावस्था प्राप्त होने पर आसुरी सम्पत्ति (दम्भ, घमण्द और अ भमान तथा क्रोध, कठोरता तथा अज्ञान - ये सब आसुरी-सम्पदा लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं) को प्राप्त करता है। तब वह दुर्व्यसनों में आसक्त होकर नीच पुरुषों के साथ संबंध बनाता है और वह कामलम्पट प्राणी शास्त्र तथा सत्पुरुषों से द्वेष करता है।

भगवान की माया रूपी स्त्री को देखकर वह अजितेन्द्रिय पुरुष उसकी भाव भं गमा से प्रलो भत होकर महामोहरुप अन्धतम में उसी प्रकार गर पड़ता है जिस प्रकार अग्नि में पतंगा। हिरन, हाथी, पतंगा, भौंरा और मछली - ये पाँचों क्रमश: शब्द, स्पर्श, रूप, गन्ध तथा रस - इन पाँच वषयों में एक-एक में आसक्ति होने के कारण ही मारे जाते हैं, फर एक प्रमादी व्यक्ति जो पाँचों इन्द्रियों से पाँचों वषयों का भोग करता है, वह क्यों नहीं मारा जाएगा?

अभीप्सित वस्तु की अप्राप्ति की स्थिति में अज्ञान के कारण ही क्रोध हो आता है और शोक को प्राप्त व्यक्ति देह के साथ ही बढ़ने वाले अ भमान तथा क्रोध के कारण वह कामी व्यक्ति स्वयं अपने नाश हेतु दूसरे कामी से शत्रुता कर लेता है। इस प्रकार अ धक बलशाली अन्य कामीजनों के द्वारा वह वैसे ही मारा जाता है जैसे कसी बलवान हाथी से दूसरा हाथी। इस प्रकार जो मूर्ख अत्यन्त दुर्लभ मानव जीवन को वषयासक्ति के कारण व्यर्थ में नष्ट कर लेता है, उससे बढ़कर पापी और कौन होगा?

सैकड़ों योनियों को पार करके पृथ्वी पर दुर्लभ मानव योनि प्राप्त होती है। मानव शरीर प्राप्त होने पर भी द् वजत्व की प्राप्ति उससे भी अ धक दुर्लभ है। अतिदुर्लभ द् वजत्व को प्राप्त कर जो व्यक्ति द् वजत्व की रक्षा के लये अपे क्षत धर्म-कर्मानुष्ठान नहीं करता, केवल इन्द्रियों की तृप्ति में ही प्रयत्नशील रहता है, उसके हाथ में आया हुआ अमृतस्वरुप वह अवसर उसके प्रमाद से नष्ट हो जाता है।

इसके बाद वृद्धावस्था को प्राप्त करके महान व्या धयों से व्याकुल होकर मृत्यु को प्राप्त करके वह पूर्ववत महान दु:खपूर्ण नरक में जाता है। इस प्रकार जन्म-मरण के हेतुभूत

कर्मपाशों से बँधे हुए वे पापी मेरी माया से वमोहित होकर कभी भी वैराग्य को प्राप्त नहीं करते। हे ताक्ष्र्य ! इस प्रकार मैंने तुम्हें अन्त्येष्टि कर्म से हीन पा पयों की नरक गति बतायी, अब आगे और क्या सुनना चाहते हो?

।।इस प्रकार गरुड़ पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "पापजन्मादिदु:खनिरुपण" नामक छठा अध्याय पूर्ण हुआ।।

गरुड़ पुराण - सातवाँ अध्याय

इस अध्याय में पुत्र की महिमा, दूसरे के द्वारा दिये गये पण्डदान आदि से प्रेतत्व से मुक्ति की बात कही गई है - इस संदर्भ में राजा बभ्रुवाहन तथा एक प्रेत की कथा का वर्णन है।

सूत उवाच

सूतजी ने कहा - ऐसा सुनकर पीपल के पत्ते की भाँति काँपते हुए गरुड़जी ने प्रा णयों के उपकार के लए पुन: भगवान वष्णु से पूछा।

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे स्वा मन ! कस उपाय से मनुष्य प्रमादवश अथवा जानकर पापकर्मों को करके भी यम की यातना को न प्राप्त हो, उसे कहिए। संसार रूपी सागर में डूबे हुए, दीन चत्तवाले, पाप से नष्ट बु द्धवाले तथा वषयों के कारण दू षत आत्मा वाले मनुष्यों के उद्धार के लये हे माधव! पुराणों में सुनिश्चित कये गये उपाय को बताइए, जिससे मनुष्य सद्गति प्राप्त कर सकें।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान बोले - हे ताक्ष्र्य ! मनुष्यों के हित की कामना से तुमने अच्छी बात पूछी है। सावधान होकर सुनो, मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूँ। हे खगेश्वर! मैंने इसके पहले पुत्ररहित और पापी मनुष्यों की यातना का वर्णन कया है। पुत्रवान तथा धा र्मक मनुष्यों की पूर्वोक्त

दुर्गति कभी नहीं होती। यदि अपने पूर्वार्जित कर्मों के कारण पुत्रोत्पत्ति में वघ्न हो तो कसी उपाय से पुत्र की उत्पत्ति सम्पन्न करें। हरिवंशपुराण की कथा सुनकर, वधानपूर्वक शतचण्डी यज्ञ करके तथा भक्तिपूर्वक शव की आराधना करके वद्वान को पुत्र उत्पन्न करना चाहिए।

यत: पुत्र पतरों की पुम् नामक नरक से रक्षा करता है, अत: स्वयं भगवान ब्रह्मा ने ही उसे पुत्र नाम से कहा है। एक धर्मात्मा पुत्र सम्पूर्ण कुल को तार देता है। पुत्र के द्वारा व्यक्ति लोकों को जीत लेता है, ऎसी सनातनी श्रुति है। इस प्रकार वेदों ने भी पुत्र के उत्तम माहात्म्य को कहा है। इस लए पुत्र का मुख देख करके मनुष्य पतृ-ऋण से मुक्त हो जाता है। पौत्र का स्पर्ष करके मनुष्य तीनों ऋणों - देव, ऋ ष, पतृ - से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार पुत्र-पौत्र तथा प्रपौत्रों से यमलोक का अतिक्रमण करके स्वर्ग आदि को प्राप्त करता है। ब्राह्म ववाह की व ध से ब्याही गई पत्नी से उत्पन्न औरस पुत्र ऊर्ध्वगति प्राप्त कराता है और संगृहीत पुत्र अधोगति की ओर ले जाता है। हे खगश्रेष्ठ ! ऎसा जान करके व्यक्ति हीनजाति की स्त्री से उत्पन्न पुत्रों को त्याग दे।

हे खग ! सवर्ण पुरुषों से सवर्णा स्त्रियों में जो पुत्र उत्पन्न होते हैं, वे औरस पुत्र कहे जाते हैं और वे ही श्राद्ध प्रदान करके पतरों को स्वर्ग प्राप्त कराने के कारण होते हैं। औरस पुत्र के द्वारा कए गये श्राद्ध से पता को स्वर्ग प्राप्त होता है, इस वषय में क्या कहना? दूसरे के द्वारा दिये गये श्राद्ध से भी प्रेत स्वर्ग को चला जाता है, इस वषय में सुनो। यहाँ मैं एक प्राचीन इतिहास कहूँगा, जो और्ध्वदैहिक दान के श्रेष्ठ माहात्म्य को सू चत करता है।

हे तार्क्ष्य ! पूर्वकाल में त्रेता युग में महोदय नाम के रमणीय नगर में महाबलशाली और धर्मपरायण बभ्रुवाहन नामक एक राजा रहता था। वह यज्ञानुष्ठानपरायण, दानियों में श्रेष्ठ, लक्ष्मी से सम्पन्न, ब्राह्मणभक्त तथा साधु पुरुषों के प्रति अनुराग रखने वाला, शील तथा आचार आदि गुणों से युक्त, स्वजनों के प्रति अपनत्व और इतरजनों के प्रति दया के भाव से सम्पन्न था। क्षात्रधर्मपरायण वह राजा औरस पुत्र की भाँति धर्मपूर्वक अपनी प्रजा का पालन करता था और दण्ड देने योग्य अपरा धयों को दण्ड देता था।

वह महाबाहु कसी समय सेना के साथ मृगया के लए नाना वृक्षों से युक्त एक घनघोर वन में प्र वष्ट हुआ। वह वन नाना मृग गणों से व्याप्त और अनेक प क्षयों से भरा हुआ था। उस समय राजा ने वन के मध्य में दूर से एक मृग को देखा। राजा के द्वारा

सुदृढ़ बाण से वद्ध वह मृग बान सहित जंगल में अदृश्य हो गया। रु धर से गीली हुई घास पर अं कत चह्न से राजा ने उसका पीछा कया तब मृग के प्रसंग से वह राजा दूसरे वन में जा पहुंचा। भूख-प्यास से सूखे हुए कण्ठ वाला तथा परिश्रम के संताप से पी ड़त उस राजा ने एक जलाशय के समीप पहुँचकर घोड़े के साथ उसमें स्नान कया तथा कमल की गन्धादि से सुगन्धित शीतल जल का पान कया।

इसके बाद उस जलाशय से बाहर निकलकर श्रमरहित राजा बभ्रुवाहन ने वृक्ष रूपी वशाल शाखाओं के कारण फैले हुए, मनोहर और शीतल छाया वाले तथा पक्षी समूहों से कूजित एक वट वृक्ष देखा। वह वृक्ष सम्पूर्ण वन की महती पताका की भाँति स्थित था। उसकी जड़ के पास जाकर राजा बैठ गया। उसके बाद राजा ने भूख और प्यास से व्याकुल इन्द्रियों वाले, ऊपर की ओर उठे हुए बालों वाले, अत्यन्त म लन, कुबड़े और माँस रहित एक भयावह प्रेत को देखा।

उस वकृत आकृति वाले भयावह प्रेत को देखकर बभ्रुवाहन वस्मित हो गया। प्रेत भी घने जंगलों में आये हुए राजा को देखकर च कत हो गया और समुत्सुक मन वाला होकर वह प्रेतराज उसके पास आया। हे ताक्ष्र्य ! तब उस प्रेतराज ने राजा से कहा - हे महाबाहो ! आपके संबंध से मैंने प्रेत भाव का त्याग कर दिया है अर्थात मेरा प्रेत भाव छूट गया है और मैं परम शान्ति को प्राप्त हो गया हूँ तथा धन्यतर हो गया हूँ।

राजोवाच

राजा ने कहा - हे कृष्णवर्ण वाले तथा भयावह रूप वाले प्रेत ! कस कर्म के प्रभाव से देखने में डरावने लगने वाले और बहुत ही अमंगलकारी इस प्रेतत्व-स्वरूप को तुमने प्राप्त कया है। हे तात ! अपने प्रेतत्व की प्राप्ति का सारा कारण बतलाओ। तुम कौन हो और कस दान से तुम्हारा प्रेतत्व नष्ट होगा?

प्रेत उवाच

प्रेत ने कहा - हे श्रेष्ठ राजन ! मैं आरंभ से आपको सब कुछ बतलाता हूँ। प्रेतत्व का कारण सुनकर आप कृपया उसे दूर करने की दया कीजिए। वैदिश नाम का एक नगर था जो सभी प्रकार की सम्पत्तियों से समृद्ध, नाना जनपदों से व्याप्त, अनेक प्रकार के रत्नों से

परिपूर्ण, धनिकों के भवनों तथा देव एवं राजप्रसादों से सुशो भत और अनेक प्रकार के धर्मानुष्ठानों से युक्त था। हे तात ! मैं वहाँ रहता हुआ निरन्तर देवपूजा कया करता था।

आपको वदित होना चाहिए क मैं वैश्य जाति में उत्पन्न हुआ और मेरा नाम सुदेव था। मैंने हव्य प्रदान करके देवताओं का तथा कव्य प्रदान करके पतरों का तर्पण कया। अनेक प्रकार के दानों से मैंने ब्राह्मणों को सन्तुष्ट कया था और अनेक बार दीन, अंधे एवं कृपण मनुष्यों को अन्न दिया था। कंतु हे राजन ! मेरा यह सारा सत्कर्म मेरे दुर्दैव से निष्फल हो गया। जिस कारण मेरा सुकृत निष्फल हुआ, वह मैं आपको बताता हूँ। मुझे कोई सन्तान नहीं है, मेरा कोई सुहृद नहीं है, कोई बान्धव नहीं है और न ऐसा कोई मत्र ही है जो मेरी और्ध्वदैहिक क्रया करता। हे महाराज ! मृत्यु के अनन्तर जिस व्यक्ति के उद्देश्य से षोडश मा सक श्राद्ध नहीं दिए जाते, सैकड़ों श्राद्ध करने पर भी उसका प्रेतत्व सुस्थिर ही रहता है अर्थात दूर नहीं होता।

हे महाराज ! आप मेरा और्ध्वदैहिक कृत्य करके मेरा उद्धार कीजिए। क्यों क इस लोक में राजा सभी वर्णों का बन्धु कहा जाता है। इस लए हे राजेन्द्र ! आप मेरा उद्धार कीजिए, मैं आपको म णरत्न देता हूँ। हे वीर ! यदि आप मेरा हित चाहते हैं तो जैसे मेरी सद्गति हो सके और मेरी प्रेत योनि से जैसे मुक्ति हो सके, वैसा आप करें। भूख-प्यास आदि दु:खों के कारण यह प्रेत योनि मेरे लये दु:सह हो गई है।

इस वन में सुन्दर स्वाद वाले शीतल जल और फल वद्यमान हैं फर भी मैं भूख तथा प्यास से पी ड़त हूँ। मुझे जल व फल की प्राप्ति नहीं हो पाती। हे राजन ! यदि मेरे उद्देश्य से यथा व ध नारायण ब ल की जाए, उसके बाद वेदमन्त्रों के द्वारा मेरी सभी और्ध्वदैहिक क्रया सम्पन्न की जाए तो निश्चित ही मेरा प्रेतत्व नष्ट हो जाएगा, इसमें कोई संशय नहीं है। मैंने सुन रखा है क वेद के मन्त्र, तप, दान और सभी प्रा णयों में दया, सत-शास्त्रों का श्रवण, भगवान वष्णु की पूजा और सज्जनों की संगति - ये सब प्रेत योनि के वनाश के लए होते हैं।

इस लए मैं आपसे प्रेतत्व को नष्ट करने वाली वष्णु पूजा को कहूँगा। हे राजन ! न्यायोपार्जित दो सुवर्ण (32 माशा) भार का सोना लेकर उससे नारायण की एक प्रतिमा बनवाए, जिसे व वध प वत्र जलों से स्नान कराकर दो पीले वस्त्रों से वेष्टित करके सभी अलंकारों से वभू षत कर अ धवा सत करें, तदनन्तर उसका पूजन करें। उस प्रतिमा के पूर्व

भाग में श्रीधर, द क्षण में मधुसूदन, पश्चिम में वामन और उत्तर में गदाधर, मध्य में पतामह ब्रह्मा तथा महादेव शव की स्थापना करके गन्ध-पुष्पादि द्रव्यों के द्वारा व ध-वधान से पृथक-पृथक पूजन करें। उसके बाद प्रद क्षणा करके अग्नि में हवन करके देवताओं को तृप्त करके घृत, द ध तथा दूध से वश्वेदेवों को तृप्त करें।

तदनन्तर सामहित चत्तवाला यजमान स्नान करके नारायण के आगे वनीतात्मा होकर व धपूर्वक मन में संकल्पित और्ध्वदैहिक क्रया का आरंभ करें। इसके बाद क्रोध तथा लोभ से रहित होकर शास्त्र व ध से सभी श्राद्धों को करें तथा वृषोत्सर्ग करे। तदनन्तर ब्राह्मणों को तेरह पददान करे, फर शय्यादान देकर प्रेत के लए घट का दान करे।

राजोवाच

राजा ने कहा - हे प्रेत ! कस वधान से प्रेत घट का निर्माण करना चाहिए और कस वधान से उसका दान करना चाहिए। सभी प्रा णयों के ऊपर अनुकम्पा करने के हेतु से प्रेतों को मुक्ति दिलाने वाले प्रेतघट-दान के वषय में बताइए।

प्रेत उवाच

प्रेत ने कहा - हे महाराज ! आपने ठीक पूछा है, जिस सुदृढ़ दान से प्रेतत्व नहीं होता है, उसे मैं कहता हूँ, आप ध्यान से सुनें। प्रेतघट का दान, सभी प्रकार के अमंगलों का वनाश करने वाला, सभी लोकों में दुर्लभ और दुर्गति को नष्ट करने वाला है। ब्रह्मा, शव तथा वष्णु सहित लोकपालों युक्त तपाये हुए सोने का एक घट बनाकर उसे दूध, घी आदि से पूरा भरकर, भक्तिपूर्वक प्रणाम करके ब्राह्मण को दान करें। इसके अतिरिक्त तुम्हें अन्य सैकड़ों दानों को देने की क्या आवश्यकता?

हे राजन ! उस घट के मध्य में ब्रह्मा, वष्णु तथा कल्याण करने वाले अ वनाशी शंकर की स्थापना करें एवं घट के कण्ठ में पूर्व आदि दिशाओं में क्रमश: लोकपालों का आवाहन करके उनकी धूप, पुष्प, चन्दन आदि से व धवत पूजा करके दूध और घी के साथ उस हिरण्यमय घट का ब्राह्मण को दान करना चाहिए। हे राजन ! प्रेतत्व की निवृत्ति के लए सभी दानों में श्रेष्ठ और महापातकों का नाश करने वाले इस दान को श्रद्धापूर्वक करना चाहिए।

भगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - हे कश्यपपुत्र गरुड़ ! प्रेत के साथ इस प्रकार बातचीत हो ही रही थी क उसी समय हाथी, घोड़े आदि से व्याप्त राजा की सेना पीछे से वहाँ आ गई। सेना के आने के बाद राजा को महाम ण देकर उन्हें प्रणाम करके पुन: अपने उद्धार के लए और्ध्वदैहिक क्रया करने की प्रार्थना करके वह प्रेत अदृश्य हो गया।

हे प क्षन् उस वन से निकलकर राजा भी अपने नगर को चला गया और अपने नगर में पहुँचकर प्रेत के द्वारा बताये हुए वचनों के अनुसार उसने व ध- वधान से और्ध्वदैहिक क्रया का अनुष्ठान कया। उसके पुण्यप्रदान से मुक्त होकर प्रेत स्वर्ग को चला गया।

जब दूसरे के द्वारा दिये हुए श्राद्ध से प्रेत की सद्गति हो गई तो फर पुत्र के द्वारा प्रदत्त श्राद्ध से पता की सद्गति हो जाए, इसमें क्या आश्चर्य!! इस पुण्यप्रद इतिहास को जो सुनता है और जो सुनाता है, वे दोनों पापाचारों से युक्त होने पर भी प्रेतत्व को प्राप्त नहीं होते।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार "बभ्रुवाहनप्रेतसंस्कार" नामक सातवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण - आठवाँ अध्याय

गरुड. उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे ताक्ष्र्य ! मनुष्यों के हित की दृष्टि से आपने बड़ी उत्तम बात पूछी है। धा र्मक मनुष्य के लए करने योग्य जो कृत्य हैं, वह सब कुछ मैं तुम्हें कहता हूँ। पुण्यात्मा व्यक्ति वृद्धावस्था के प्राप्त होने पर अपने शरीर को व्या धग्रस्त तथा ग्रहों की प्रतिकूलता को देखकर और प्राण वायु के नाद न सुनाई पड़ने पर अपने मरण का समय जानकर निर्भय हो जाए और आलस्य का परित्याग कर जाने-अनजाने कये गये पापों के वनाश के लए प्रायश्चित का आचरण करे।

जब आतुरकाल उपस्थित हो जाए तो स्नान करके शालग्राम स्वरुप भगवान वष्णु की पूजा कराए। गन्ध, पुष्प, कुंकुम, तुलसीदल, धूप, दीप तथा बहुत से मोदक आदि नैवेद्यों को

सम र्पत करके भगवान की अर्चा करे और वप्रों को द क्षणा देकर नैवेद्य का ही भोजन कराएँ तथा अष्टाक्षर (ऊँ नमो नारायणाय) अथवा द्वादशाक्षर (ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय) मन्त्र का जप करें। भगवान वष्णु और शव के नाम का स्मरण करें और सुनें, भगवान का नाम कानों से सुनाई पड़ने पर वह मनुष्य के पाप को नष्ट करता है। रोगी के समीप आकर बान्धवों को शोक नहीं करना चाहिए। प्रत्युत मेरे प वत्र नाम का बार-बार स्मरण करना चाहिए।

वद्वान व्यक्ति को, मत्स्य, कूर्म, वराह, नार संह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि (भगवान के ये दस अवतार हैं) - इन दस नामों का सदा स्मरण कीर्तन करना चाहिए। जो व्यक्ति रोगी के समीप उपर्युक्त नामों का कीर्तन करते हैं, वे ही उसके सच्चे बान्धव कहे गये हैं। "कृष्ण" यह मंगलमय नाम जिसकी वाणी से उच्चरित होता है, उसके करोड़ों महापातक तत्काल भस्म हो जाते हैं।

मरणासन्न अवस्था में अपने पुत्र के बहाने से "नारायण" नाम लेकर अजा मल भी भगद्धाम को प्राप्त हो गया तो फर जो श्रद्धापूर्वक भगवान के नाम का उच्चारण करने वाले हैं, उनके वषय में क्या कहना!! दू षत चत्तवृत्ति वाले व्यक्ति के द्वारा भी स्मरण कये जाने पर भगवान उसके समस्त पापों को नष्ट कर देते हैं, जैसे अनिच्छापूर्वक भी स्पर्श करने पर अग्नि जलाता ही है। हे द् वज ! वासना के सहित पापों का समूल वनाश करने की जितनी शक्ति भगवान नाम में हैं, पातकी मनुष्य उतना पाप करने में समर्थ ही नहीं है।

यमदेव अपने कंकरों से कहते हैं - हे दूतों ! हमारे पास नास्तिकजनों को ले आया करो। भगवान के नाम का स्मरण करने वाले मनुष्यों को मेरे पास मत लाया करो क्यों क मैं स्वयं अच्युत, केशव, राम, नारायण, कृष्ण, दामोदर, वासुदेव, हरि, श्रीधर, माधव, गो पकावल्लभ, जानकीनायक रामचन्द्र का भजन करता हूँ। हे दूतों! जो व्यक्ति हे कमलनयन, हे वासुदेव, हे वष्णु, हे धरणीधर, हे अच्युत, हे शंखचक्रपा ण ! आप मेरे शरणदाता हो - ऐसा कहते हैं, उन निष्पाप व्यक्तियों को तुम दूर से ही छोड़ देना। हे दूतों ! जो निष्किंचन और रसज्ञ परमहंसों के द्वारा निरन्तर आस्वादित भगवान मुकुन्द के पादार वन्द-मकरन्द-रस से वमुख हैं अर्थात भगवद भक्ति से वमुख हैं और नरक के मूल गृहस्थी के प्रपंच में तृष्णा से बद्ध हैं, ऐसे असत्पुरुषों को मेरे पास लाया करो।

जिनकी जिह्वा भगवान के गुण और नाम का कीर्तन नहीं करती, चत्त भगवान के चरणा वन्द का स्मरण नहीं करता, सर एक बार भी भगवान को प्रणाम नहीं करता, ऎसे वष्णु के आराधना-उपासना आदि कृत्यों से रहित असत्पुरुषों को मेरे पास ले आओ। इस लए हे पक्षीन्द्र ! जगत में मंगल - स्वरूप भगवान वष्णु का कीर्तन ही एकमात्र महान पापों के आत्यन्तिक और ऎकान्तिक निवृत्ति का प्रायश्चित है - ऎसा जानो।

नारायण से पराड्मुख रहने वाले व्यक्तियों के द्वारा कये गये प्रायश्चित्ताचरण भी दुर्बु द्ध प्रा ण को उसी प्रकार प वत्र नहीं कर सकते, जैसे मदिरा से भरे घट को गंगाजी - सदृश नदियाँ प वत्र नहीं कर सकतीं। भगवान कृष्ण के नाम स्मरण से पाप नष्ट हो जाने के कारण जीव नरक को नहीं देखते और स्वप्न में भी कभी यम तथा यमदूतों को नहीं देखते।

जो व्यक्ति अन्तकाल में नन्दनन्दन भगवान श्रीकृष्ण के पीछे चलते हैं, ऎसी गाय को ब्राह्मणों को दान देता है, वह माँस, हड्डी और रक्त से परिपूर्ण वैतरणी नडी में गरता अथवा जो मृत्यु के समय में 'नन्दनन्दन' इस प्रकार की वाणी का उच्चारण करता है, शरीर धारण नहीं करता अर्थात मुक्त हो जाता है। अत: पापों के समूह को नष्ट करने वाले महा वष्णु के नाम का स्मरण करना चाहिए अथवा गीत या वष्णुसहस्त्रनाम का पठन अथवा श्रवण करना चाहिए। एकादशी का व्रत, गीता, गंगाजल, तुलसीदल, भगवान वष्णु का चरणामृत और नाम - ये मरणकाल में मुक्ति देने वाले हैं।

इसके बाद घृत और सुवर्ण सहित अन्नदान का संकल्प करें। श्रोत्रिय द् वज (वेदपाठी ब्राह्मण) को सवत्सा गौ का दान करें। हे ताक्ष्र्य ! जो मनुष्य अन्तकाल में थोड़ा बहुत दान देता है और पुत्र उसका अनुमोदन करता है, वह दान अक्षय होता है।

सत्पुत्र को चाहिए क अन्तकाल में सभी प्रकार का दान दिलाए, लोक में धर्मज्ञ पुरुष इसी लए पुत्र के लए प्रार्थना करते हैं। भू म पर स्थित, आधी आँखे मूँदे हुए पता को देखकर पुत्रों को उनके द्वारा पूर्व सं चत धन के वषय में तृष्णा नहीं करनी चाहिए। सत्पुत्र के द्वारा दिये गये दान से जब तक उसका पता जी वत हो तब तक और फर मृत्यु के अनन्तर आतिवाहिक शरीर से भी परलोक के मर्ग में वह दु:ख नहीं प्राप्त करता।

आतुरकाल और ग्रहणकाल - इन दोनों कालों में दिये गये दान का वशेष महत्व है, इस लए तिल आदि अष्ट दान अवश्य देने चाहिए। तिल, लोहा, सोना, कपास, नमक, सप्तधान्य (धान, जौ, गेहूँ, उड़द, काकुन या कंगुनी और चना - ये सप्तधान्य कहे जाते हैं), भू म और गाय - इनमें से एक-एक का दान भी प वत्र करने वाला है। यह अष्ट महादान महापातकों का नाश करने वाला है। अत: अन्तकाल में इसे देना चाहिए। इन दानों का जो उत्तम फल है उसे सुनो - तीन प्रकार के प वत्र तिल मेरे पसीने से उत्पन्न हुए हैं। असुर, दानव और दैत्य तिल दान से तृप्त होते हैं। श्वेत, कृष्ण तथा क पल (भूरे) वर्ण के तिल का दान वाणी, मन और शरीर के द्वारा कये गये त्रि वध पापों को नष्ट कर देता है।

लोहे का दान भू म में हाथ रखकर देना चाहिए। ऎसा करने से वह जीव यम सीमा को नहीं प्राप्त होता और यम मार्ग में नहीं जाता। पाप-कर्म करने वाले व्यक्तियों का निग्रह करने के लए यम के हाथ में कुल्हाड़ी, मूसल, दण्ड, तलवार तथा छुरी - शस्त्र के रुप में रहते हैं। यमराज के आयुधों को संतुष्ट करने के लए यह लोहे का दान कहा गया है इस लए यमलोक में सुख देने वाले लोहदान को करना चाहिए।

उरण, श्यामसूत्र, शण्डामर्क, उदुम्बर, शेषम्बल नामक यम के महादूत लोहदान से सुख प्रदान करने वाले होते हैं। हे ताक्ष्र्य ! परम गोपनीय और दानों में उत्तम दान को सुनो, जिसके देने से भूलोक, भुवर्लोक (अन्तरिक्ष) और स्वर्गलोक के निवासी अर्थात मनुष्य, भूत-प्रेत तथा देवगण संतुष्ट होते हैं। ब्रह्मा आदि देवता, ऋ षगण तथा धर्मराज के सभासद - स्वर्णदान से संतुष्ट होकर वर प्रदान करने वाले होते हैं। इस लए प्रेत के उद्धार के लए स्वर्णदान करना चाहिए। हे तात ! स्वर्ण का दान देने से जीव यमलोक नहीं जाता, उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

बहुत काल तक वह सत्यलोक में निवास करता है, तदनन्तर इस लोक में रूपवान, धा र्मक, वाक्पटु, श्रीमान और अतुल पराक्रमी राजा होता है। कपास का दान देने से यमदूतों से भय नहीं होता, लवण का दान से यम से भय नहीं होता। लोहा, नमक, कपास, तुल और स्वर्ण के दान से यमपुर के निवासी चत्रगुप्त आदि संतुष्ट होते हैं। सप्तधान्य प्रदान करने से धर्मराज और यमपुर के तीनों द्वारों पर रहने वाले अन्य द्वारपाल भी प्रसन्न हो जाते हैं।

धान, जौ, गेहूँ, मूँग, उड़द, काकुन या कँगुनी और सातवाँ चना - ये सप्तधान्य कहे गये हैं। जो व्यक्ति गोचर्ममात्र (सो गायें और एक बैल जितनी भू म पर स्वतंत्र रूप से रह

सकें, वचरण कर सकें, उतनी वस्तार वाली भू म गोचर्म कहलाती है। इसका दान समस्त पापों का नाश करने वाला है) भू म वधानपूर्वक सत्पात्र को देता है, वह ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त होकर प वत्र हो जाता है, ऎसा मुनीश्वरों ने देखा है। राज्य में कया हुआ अर्थात राज्यसंचालन में राजा से होने वाला महापाप न व्रतों से, न तीर्थ सेवन से और न अन्य कसी दान से नष्ट होता है अ पतु वह तो केवल भू म दान से ही वलीन होता है। जो व्यक्ति ब्राह्मण को धान्यपूर्ण पृ थवी का दान करता है, वह देवताओं और असुरों से पूजित होकर इन्द्रलोक में जाता है।

हे गरुड़ ! अन्य दानों का फल अत्यल्प होता है कंतु पृथ्वी दान का पुण्य दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है। भू म का स्वामी होकर भी जो ब्राह्मण को भू म नहीं देता वह जन्मान्तर में कसी ग्राम में एक कुटिया तक भी नहीं प्राप्त करता और जन्म-जन्मान्तर में अर्थात प्रत्येक जन्म में दरिद्र होता है। भू म का स्वामी होने के अ भमान में जो भू म का दान नहीं करता, वह तब तक नरक में निवास करता है, जब तक शेष नाग पृथ्वी को धारण करते हैं। इस लए भू म के स्वामी को भू म दान करना ही चाहिए। अन्य व्यक्तियों के लए भू म दान के स्थान पर मैंने गोदान का वधान कया है। इसके बाद अन्तधेनु का दान करना चाहिए और रुद्रधेनु देनी चाहिए। तदनन्तर ऋणधेनु देकर मोक्षधेनु का दान करना चाहिए। हे खग ! वशेष वधानपूर्वक वैतरणीधेनु का दान करना चाहिए। दान में दी गई गौएँ मनुष्य को त्रि वध पापों से मुक्त करती हैं।

बाल्यावस्था में, कुमारावस्था में, युवावस्था में, वृद्धावस्था में अथवा दूसरे जन्म में, रात में, प्रात:काल, मध्याह्न, अपराह्ण और दोनों संध्या कालों में शरीर, मन और वाणी से जो पाप कये गये हैं, वे सभी पाप तपस्या और सदाचार से युक्त वेद वद ब्राह्मणों को उपस्करयुक्त (दान सामग्री सहित) सवत्सा और दूध देने वाली क पला गौ के एक बार दान देने से नष्ट हो जाते हैं। दान में दी गई वह गौ अन्तकाल में गोदान करने वाले व्यक्ति का सं चत पापों से उद्धार कर देती है।

स्वस्थ चत्तावस्था में दी गई एक गौ, आतुरावस्था में दी गई सौ गाय और मृत्युकाल में चत्त ववर्जित व्यक्ति के द्वारा दी गई एक हजार गाय तथा मरणोत्तर काल में दी गई व धपूर्वक एक लाख गाय के दान का फल बराबर ही होता है। (यहाँ स्वस्थावस्था में गोदान करने का वशेष महत्व बतलाया गया है) तीर्थ में सत्पात्र को दी गई एक गाय का दान एक लक्ष गोदान के तुल्य होता है।

सत्पात्र में दिया गया दान लक्षगुना होता है। उस दान से दाता को अनन्त फल प्राप्त होता है और दान लेने वाले पात्र को प्रतिग्रह दान लेने का दोष नहीं लगता। स्वाध्याय और होम करने वाला तथा दूसरे के द्वारा पकाए गये अन्न को न खाने वाला अर्थात स्वयं पाकी ब्राह्मण रत्नपूर्ण पृथ्वी का दान लेकर भी प्रतिग्रह दोष से लप्त नहीं होता। वष और शीत को नष्ट करने वाले मन्त्र और आग भी क्या दोष के भागी होते हैं? अपात्र को दी गई वह गाय दाता को नरक में ले जाती है और अपात्र प्रतिग्रहीता को एक सौ एक पीढ़ी के पुरुषों के सहित नरक में गराती है। इस लए अपने कल्याण की इच्छा करने वाले वद्वान व्यक्ति को अपात्र को दान नहीं देना चाहिए।

एक गाय एक ही ब्राह्मण को देनी चाहिए। बहुत ब्राह्मणों को एक गाय कदा प नहीं देनी चाहिए। वह गौ यदि बेची या बाँटी गई तो सात पीढ़ी तक के पुरुषों को जला देती है। हे खगेश्वर ! मैंने तुमसे पहले वैतरणी नदी के वषय में कहा था, उसे पार करने के उपायभूत गोदान के वषय में मैं तुमसे कहता हूँ।

काले अथवा लाल रंग की गाय को सोने के सींग, चाँदी के खुर और काँसे के पात्र की दोहनी के सहित दो काले रंग के वस्त्रों से आच्छादित करें। उसके कण्ठ में घण्टा बाँधे तब कपास के ऊपर वस्त्र सहित ताम्रपात्र को स्था पत करके वहाँ लोहदण्ड सहित सोने की यम मूर्त्ति भी स्था पत करें और काँसे के पात्र में घृत रखकर यह सब ताम्रपात्र के ऊपर रखें। ईख की नींव बनाकर उसे रेशमी सूत्र से बाँधकर, भू म पर गढ्ढा खोदे एवं उसमें जल भरकर वह ईख की नाव उसमें डाले।

उसके समीप सूर्य की देह से उत्पन्न हुई धेनु को खड़ी करके शास्त्रीय व ध- वधान के अनुसार उसके दान का संकल्प करें। ब्राह्मणों को अलंकार और वस्त्र का दान दें तथा गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि से वधानपूर्वक गाय की पूजा करें। गाय की पूँछ को पकड़कर ईख की नाव पर पैर रखकर ब्राह्मण को आगे करके इस मन्त्र को पढ़े -

'हे जगन्नाथ ! हे शरणागतवत्सल ! भवसागर में डूबे हुए शोक-संताप की लहरों से दु:ख प्राप्त करते हुए जनों के आप ही रक्षक हैं। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! वष्णुरूप ! भू मदेव ! आप मेरा उद्धार कीजिए। मैंने द क्षणा के सहित यह वैतरणी-रू पणी गाय आपको दी है, आपको नमस्कार है। मैं महाभयावह यम मार्ग में सौ योजन वस्तार वाली उस वैतरणी नदी

को पार करने की इच्छा से आपको इस वैतरणी गाय का दान देता हूँ। आपको नमस्कार है।'

हे वैतरणी धेनु ! हे देवे श ! यमद्वार के महामार्ग में वैतरणी नदी के पार कराने के लए आप मेरी प्रतीक्षा करना, आपको नमस्कार है। मेरे आगे भी गौएँ हो, मेरे पीछे भी गौएँ हों, मेरे हृदय में भी गौएँ हों और मैं गौओं के मध्य में निवास करुँ। जो लक्ष्मी सभी प्रा णयों में प्रतिष्ठित हैं तथा जो देवता में प्रतिष्ठित हैं वे ही धेनुरूपा लक्ष्मी देवी मेरे पाप को नष्ट करें। इस प्रकार मन्त्रों से भली-भाँति प्रार्थना करके हाथ जोड़कर गाय और यम की प्रद क्षणा कर के सब कुछ ब्राह्मण को प्रदान करें।

हे खग ! इस वधान से जो वैतरणी धेनु का दान करता है, वह धर्म मार्ग से धर्मराज की सभा में जाता है। शरीर की स्वस्थावस्था में ही वैतरणी वषयक व्रत का आचरण कर लेना चाहिए और वैतरणी पार करने की इच्छा से वद्वान को वैतरणी गाय का दान करना चाहिए। हे खग ! वैतरणी गाय का दान करने से महामार्ग में वह नदी नहीं आती इस लए सर्वदा पुण्यकाल में गोदान करना चाहिए। गंगा आदि सभी तीर्थों में, ब्राह्मणों के निवास स्थानों में, चन्द्र और सूर्यग्रहण काल में, संक्रान्ति में, अमावस्या ति थ में, उत्तरायण और द क्षणायन (कर्क और मकर संक्रान्तियों) में, वषुव (अर्थात मेष तथा तुला की संक्रान्ति में), व्यतीपात योग में, युगादि ति थयों में तथा अन्यान्य पुण्यकालों में उत्तम गोदान देना चाहिए।

जब कभी भी श्रद्धा उत्पन्न हो जाए और जब भी दान के लए सुपात्र प्राप्त हो जाए, वही समय दान के लए पुण्यकाल है, क्यों क सम्पत्ति अस्थिर है। शरीर नश्वर है, सम्पत्ति सदा रहने वाली नहीं है और मृत्यु प्रतिक्षण निकट आती जा रही है, इस लए धर्म का संचय करना चाहिए। अपनी धन-सम्पत्ति के अनुसार कया गया दान अनन्त फलवाला होता है। इस लए अपने कल्याण की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को वद्वान ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

अपने हाथ से अपने कल्याण के लए दिया गया अल्प वत्त वाला वह दान भी अक्षय होता है और उसका फल भी तत्काल प्राप्त होता है। दान रूपी पाथेय को लेकर जीव परलोक के महामार्ग में सुखपूर्वक जाता है अन्यथा दानरुपी पाथेय रहित प्रा ण को यममार्ग में क्लेश प्राप्त होता है। पृथ्वी पर मनुष्यों के द्वारा जो-जो दान दिये जाते हैं, यमलोक के मार्ग वे सभी आगे-आगे उपस्थित हो जाते हैं। महान पुण्य के प्रभाव से मनुष्य-जन्म प्राप्त होता है।

उस मनुष्य योनि को प्राप्त कर जो व्यक्ति धर्माचरण करता है, वह परमगति को प्राप्त करता है। धर्म को न जानने के कारण व्यक्ति संसार में दु:खपूर्वक जन्म लेता है और मरता है। केवल धर्म के सेवन में ही मनुष्य जीवन की सफलता है।

धन, पुत्र, पत्नी आदि बान्धव और यह शरीर भी सब कुछ अनित्य हैै इस लए धर्माचरण करना चाहिए। जब तक मनुष्य जीता है तभी तक बन्धु-बान्धव और पता आदि का संबंध रहता है, मरने के अनन्तर क्षणमात्र में सम्पूर्ण स्नेह संबंध निवृत हो जाता है। जी वतावस्था में अपनी आत्मा ही अपना बन्धु है - ऎसा बार-बार वचार करना चाहिए। मरने के अनन्तर कौन उसके उद्देश्य से दान देगा? ऎसा जानकर अपने हाथ से ही सब कुछ दान देना चाहिए क्यों क जीवन अनित्य है, बाद में अर्थात उसकी मृत्यु के पश्चात कोई भी उसके लए दान नहीं देगा। मृत शरीर को काठ और ढेले के समान पृथ्वी पर छोड़कर बन्धु-बान्धव वमुख होकर लौट जाते हैं, केवल धर्म ही उसका अनुगमन करता है। धन-सम्पत्ति घर में ही छूट जाती है, सभी बन्धु-बान्धव श्मशान में छूट जाते हैं कंतु प्राणी के द्वारा कया हुआ शुभाशुभ कर्म परलोक में उसके पीछे-पीछे जाता है।

शरीर आग से जल जाता है कंतु कया हुआ कर्म साथ में रहता है। प्रा ण जो कुछ पाप अथवा पुण्य करता है, उसका वह सर्वत्र भोग प्राप्त करता है। इस दु:खपूर्ण संसार सागर में कोई भी कसी का बन्धु नहीं है। प्राणी अपने कर्म संबंध से संसार में आता है और फल भोग से कर्म का क्षय होने पर पुन: चला जाता है अर्थात मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

माता- पता, पुत्र, भाई, बन्धु और पत्नी आदि का परस्पर मलन प्याऊ पर एकत्र हुए जन्तुओं के समान अथवा नदी में बहने वाले काष्ठ समूह के समान नितान्त चंचल अर्थात अस्थिर है। कसके पुत्र, कसके पौत्र, कसकी भार्या और कसका धन? संसार में कोई कसी का नहीं है। इस लए अपने हाथ से स्वयं दान देना चाहिए। जब तक धन अपने अधीन है तब तक ब्राह्मण को दान कर दें क्यों क धन दूसरे के अधीन हो जाने पर तो दान देने के लए कहने का साहस भी नहीं होगा।

पूर्व जन्म में कये हुए दान के फलस्वरुप यहाँ बहुत सारा धन प्राप्त हुआ है इस लए ऎसा जानकर धर्म के लए धन देना चाहिए। धर्म से अर्थ की प्राप्ति होती है, धर्म से काम की प्राप्ति होती है और धर्म से ही मोक्ष की भी प्राप्ति होती है इस लए धर्माचरण करना

चाहिए। धर्म श्रद्धा से धारण कया जाता है, बहुत सी धन रा श से नहीं। अ कंचन मुनिगण भी श्रद्धावान होकर स्वर्ग को प्राप्त हुए हैं।

जो मनुष्य पत्र, पुष्प, फल अथवा जल मुझे भक्तिभाव से सम र्पत करता है, उस संयतात्मा के द्वारा भक्तिपूर्वक दिये गये पदार्थों को मैं प्राप्त करता हूँ। इस लए व ध वधानपूर्वक अवश्य ही दान देना चाहिए। थोड़ा हो या अ धक इसकी कोई गणना नहीं करनी चाहिए। जो पुत्र पृथ्वी पर पड़े हुए आतुर पता के द्वारा दान दिलाता है, वह धर्मात्मा पुत्र देवताओं के लए भी पूजनीय होता है। माता- पता के नि मत्त जो धन पुत्र के द्वारा सत्पात्र को सम र्पत कया जाता है, उससे पुत्र, पौत्र और प्रपौत्र के साथ वह व्यक्ति स्वयं भी प वत्र हो जाता है। पता के उद्देश्य से कये गये दान से हजार गुना, बहन के उद्देश्य से कये गये दान से दस हजार गुना और सहोदर भाई के नि मत्त कए गये दान से अनन्त गुना पुण्य प्राप्त होता है।

दान देने वाला उपद्रवग्रस्त नहीं होता, उसे नरक यातना नहीं प्राप्त होती और मृत्युकाल में उसे यमदूतों से भी कोई भय नहीं होता। हे खग ! यदि कोई व्यक्ति लोभ से आतुरकाल में दान नहीं देते वे कंजूस पापी प्राणी मरने के अनन्तर शोकगमन होते हैं। आतुरकाल में आतुर के उद्देश्य से जो पुत्र, पौत्र, सहोदर भाई, सगोत्री और सुहृज्जन दान नहीं देते, वे ब्रह्महत्यारे हैं, इसमें कोई संशय नहीं है।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में 'आतुरदाननिरूपण' नामक आठवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण - नवाँ अध्याय

मरणासन्न व्यक्तियों के नि मत्त कये जाने वाले कृत्य

गरुड़ उवाच

गरुड़जी बोले - हे प्रभो! आपने आतुरका लक दान के संदर्भ में भली भाँति कहा। अब म्रयमाण (मरणासन्न) व्यक्ति के लए जो कुछ करना चाहिए, उसे बताइए।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - हे ताक्ष्र्य ! जिस वधान से मनुष्य मरने पर सद्गति प्राप्त करते हैं, शरीर त्याग करने की उस व ध को मैं कहता हूँ, सुनो। कर्म के संबंध से जब प्राणी अपना शरीर छोड़ने लगता है तो उस समय तुलसी के समीप गोबर से एक मण्डल की रचना करनी चाहिए। वहाँ उस मण्डल के ऊपर तिल बिखेरकर कुशों को बिछाए, तदनन्तर उनके ऊपर श्वेत वस्त्र के आसन पर शा लग्राम शला को स्था पत करें। जहाँ पाप, दोष और भय को हरण करने वाली शालग्राम- शला वद्यमान है, उसके संनिधान में मरने से प्राणी की मुक्ति सुनिश्चित है। जहाँ जगत के ताप का हरण करने वाली तुलसी वृक्ष की छाया है, वहाँ मरने से सदैव मुक्ति ही होती है, जो मुक्ति दानादि कर्मों से दुर्लभ है।

जिसके घर में तुलसी वृक्ष के लए स्थान बना हुआ है, वह घर तीर्थ स्वरुप ही है, वहाँ यम के दूत प्रवेश नहीं करते। तुलसी की मंजरी से युक्त होकर जो प्राणी अपने प्राणों का परित्याग करता है, वह सैकड़ों पापों से युक्त हो तो भी यमराज उसे देख नहीं सकते। तुलसी के दल को मुख में रखकर तिल और कुश के आसन पर मरने वाला व्यक्ति पुत्रहीन हो तो भी नि:संदेह वष्णुपुर को जाता है। तीनों प्रकार के तिल काले, सफेद और भूरे, कुश और तुलसी - ये सब म्रयमाण प्राणी को दुर्गति से बचा लेते हैं। यत: मेरे पसीने से तिल पैदा हुए हैं, अत: वे प वत्र हैं। असुर, दानव और दैत्य तिल को देखकर भाग जाते हैं, हे ताक्ष्र्य ! मेरे रोम से पैदा हुए दर्भ (कुश) मेरी वभूति हैं इस लए उनके स्पर्श से ही मनुष्य को स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

कुश के मूल में ब्रह्मा, कुश के मध्य में जनार्दन और कुश के अग्रभाग में शंकर - इस प्रकार तीनों देवता कुश में स्थित रहते हैं। इस लए कुश, अग्नि, मन्त्र, तुलसी, ब्राह्मण और गौ - ये बार-बार उपयोग कये जाने पर भी निर्माल्य नहीं होते। पण्डदान में उपयोग कये दर्भ, प्रेत के नि मत्त भोजन करने वाले ब्राह्मण, नीच के मुख से उच्चरित मन्त्र, नीच संबंधी गाय और तुलसी तथा चता की आग - ये सब निर्माल्य अर्थात अप वत्र होते हैं।

गोबर से लीपी हुई और कुश बिछाकर संस्कार की हुई पृथ्वी पर आतुर (मरणासन्न व्यक्ति) को स्था पत करना चाहिए। अन्तरिक्ष का परिहार करना चाहिए अर्थात चौकी आदि पर नहीं रखना चाहिए। ब्रह्मा, वष्णु, रुद्र तथा अन्य सभी देवता और हुताशन (अग्नि) - ये सभी मण्डल पर वराजमान रहते हैं, इस लए मण्डल की रचना करनी चाहिए। जो भू म लेपरहित होती है अर्थात मल-मूत्र आदि से रहित होती है, वह सर्वत्र प वत्र होती है कंतु जो

भू म भाग कभी लीपा जा चुका है या मल-मूत्र आदि से दू षत है वहाँ पुन: लीपने पर उसकी शु द्ध हो जाती है।

बिना लीपी हुई भू म पर और चारपाई आदि पर या आकाश में (भू म की सतह से ऊपर) राक्षस, पशाच, भूत, प्रेत और यमदूत प्र वष्ट हो जाते हैं। इस लए भू म पर मण्डल बनाए बिना अग्निहोत्र, श्राद्ध, ब्राह्मण-भोजन, देव-पूजन और आतुर व्यक्ति का स्थापन नहीं करना चाहिए। इस लए लीपी हुई भू म पर आतुर व्यक्ति को लटाकर उसके मुख में स्वर्ण और रत्न का प्रक्षेप करके शालग्राम स्वरुपी भगवान वष्णु का पादोदाक देना चाहिए।

जो शालग्राम- शला के जल को बिन्दुमात्र भी पीता है वह सभी पापों से मुक्त हो वैकुण्ठ लोक में जाता है। इस लए आतुर व्यक्ति को महापातक को नष्ट करने वाले गंगा जल को देना चाहिए। गंगा जल का पान सभी तीर्थों में कये जाने वाले स्नान-दानादि के पुण्यरूपी फल को प्रदान करने वाला है। जो शरीर को शुद्ध करने वाले चान्द्रायण व्रत को एक हजार बार करता है और जो एक बार गंगा जल का पान करता है, वे दोनों समान फल वाले रहते हैं। हे ताक्ष्र्य ! अग्नि के संबंध से जैसे रूइ की रा श नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार गंगाजल से पातक भस्मसात हो जाते हैं।

जो सूर्य की करणों से संतप्त गंगा के जल का पान करता है, वह सभी योनियों से छूटकर हरि के धाम को प्राप्त होता है। अन्य नदियाँ मनुष्यों को जलावगाहन (स्नान) करने पर प वत्र करती हैं, कंतु गंगाजी तो दर्शन, स्पर्श, दान अथवा "गंगा" इस नाम का कीर्तन करने मात्र से सैकड़ों, हजारों पुण्यरहित पुरुषों को भी प वत्र कर देती हैं। इस लए संसार से पार लगा देने वाले गंगा जल को पीना चाहिए।

जो व्यक्ति प्राणों के कण्ठगत होने पर 'गंगा-गंगा' ऎसा कहता है वह वष्णु लोक को प्राप्त होता है और पुन: भूलोक में जन्म नहीं लेता। प्राणोत्क्रमण (प्राणों के निकलने) के समय जो पुरुष श्रद्धायुक्त होकर मन से गंगा का चन्तन करता है वह भी परम गति को प्राप्त होता है। अत: गंगा का ध्यान, गंगा को नमन, गंगा का संस्मरण करना चाहिए और गंगा जल का पान करना चाहिए। इसके बाद मोक्ष प्रदान करने वाली श्रीमद्भागवत की कथा को जितना सम्भव हो उतना श्रवण करना चाहिए। जो व्यक्ति अन्त समय में श्रीमद्भागवत के एक श्लोक, आधे श्लोक अथवा एक पाठ का भी पाठ करता है, वह ब्रह्मलोक को प्राप्त होकर पुन: संसार में कभी नहीं आता।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को मरण काल में वेद और उपनिषदों का पाठ तथा शव व वष्णु की स्तुति से मुक्ति प्राप्त होती है। हे खग ! प्राण त्याग के समय मनुष्य को अनशन व्रत अर्थात अन्न तथा जल का त्याग करना चाहिए और यदि वह वरक्त द् वजन्मा हो तो उसे आतुर सन्यास लेना चाहिए। प्राणों के कण्ठ में आने पर जो प्राणी "मैंने सन्यास ले लया है" - ऎसा कहता है, वह मरने पर वष्णु लोक को प्राप्त होता है। पुन: पृथ्वी पर उसका जन्म नहीं होता। इस प्रकार हे खग ! जिस धा र्मक पुरुष के आतुरका लक पूर्वोक्त कार्य सम्पादित कये जाते हैं, उसके प्राण ऊपर के छिद्रों से सुखपूर्वक निकलते हैं। मुख, दोनों नेत्र, दोनों ना सकारन्ध्र तथा दोनों कान - ये सात (ऊपर के) द्वार (छिद्र) हैं, इनमें से कसी द्वार से सुकृती (पुण्यात्मा) - के प्राण निकलते हैं और यो गयों के प्राण तालुरन्ध्र से निकलते हैं। अपान से मले हुए प्राण जब पृथक हो जाते हैं तब प्राणवायु सूक्ष्म होकर शरीर से निकलता है।

प्राणवायु रूपी ईश्वर के निकल जाने पर काल से आहत शरीर निराधार वृक्ष की भाँति गर पड़ता है। प्राण से मुक्त होने के बाद शरीर तुरंत चेष्टाशून्य, घृ णत, दुर्गन्धयुक्त, अस्पृश्य और सभी के लए निन्दित हो जाता है। इस शरीर की कीड़ा, वीष्ठा तथ भस्मरूप - ये तीन अवस्थाएँ होती हैं, इसमे कीड़े पड़ते हैं, यह वष्ठा के समान दुर्गन्धयुक्त हो जाता है अथवा अन्तत: चता में भस्म हो जाता है। इस लए क्षण मात्र में नष्ट हो जाने वाले इस देह के लए मनुष्यों के द्वारा गर्व क्यों कया जाए। पंचभूतों से नि र्मत इस शरीर का पृथ्वी तत्व पृथ्वी में लीन हो जाता है, जलतत्व जल में, तेजस्तत्त्व तेज में और वायुतत्व वायु में लीन हो जाता है, इसी प्रकार आकाश तत्व भी आकाश में लीन हो जाता है। सभी प्रा णयों के देह में स्थित रहने वाला, सर्वव्यापी, शवस्वरुप, नित्य मुक्त और जगत्साक्षी आत्मा अजर-अमर है।

सभी इन्द्रियों से युक्त और शब्द आदि वषयों से युक्त (मृत व्यक्ति की देह से निकला) जीव कर्म-कोश से समन्वित तथा काम और रोगादि के सहित - पुण्य की वासना से युक्त होकर अपने कर्मों के द्वारा नि र्मत नवीन शरीर में उसी प्रकार प्रवेश करता है जैसे घर के जल जाने पर गृहस्थ दूसरे नवीन घर में प्रवेश करता है। तब कं कणी जाल की मालाओं से युक्त वमान लेकर सुन्दर चामरों से सुशो भत देवदूत आते हैं। धर्म के तत्व को जानने वाले, बु द्धमान, धा र्मक जनों के प्रय वे देवदूत कृतकृत्य इस जीव को वमान से स्वर्ग ले जाते हैं। सुन्दर, दिव्य देह धारण करके निर्मल वस्त्र और माल्य धारण करके, सुवर्ण

और रत्नादि के आभरणों से युक्त होकर वह महानुभाव जीव दान के प्रभाव से देवताओं से पूजित होकर स्वर्ग को प्राप्त करता है।

।।इस प्रकार गरुड़ पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में " म्रयमाणकृत्यनिरुपण" नामक नवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण - दसवाँ अध्याय

मृत्यु के अनन्तर के कृत्य, शव आदि नाम वाले छ: पण्ड दानों का फल, दाह संस्कार की व ध, पंचक में दाह का निषेध, दाह के अनन्तर कये जाने वाले कृत्य, शशु आदि की अन्त्येष्टि का वधान

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी बोले - हे वभो ! अब आप पुण्यात्मा पुरुषों के शरीर के दाह संस्कार का वधान बतलाइए और यदि पत्नी सती हो तो उसकी महिमा का भी वर्णन कीजिए।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - हे ताक्ष्र्य ! जिन और्ध्वदैहिक कृत्यों को करने से पुत्र और पौत्र, पतृ-ऋण से मुक्त हो जाते हैं, उसे बताता हूँ, सुनो। बहुत-से दान देने से क्या लाभ? माता-पता की अन्त्येष्टि क्रया भली-भाँति करें, उससे पुत्र को अग्निष्टोम याग के समान फल प्राप्त हो जाता है।

माता- पता की मृत्यु होने पर पुत्र को शोक का परित्याग करके सभी पापों से मुक्ति प्राप्त करने के लए समस्त बान्धवों के साथ मुण्डन कराना चाहिए। माता- पता के मरने पर जिसने मुण्डन नहीं कराया, वह संसार सागर को तारने वाला पुत्र कैसे समझा जाए? अत: नख और काँख को छोड़कर मुण्डन कराना आवश्यक है। इसके बाद समस्त बान्धवों सहित स्नान करके धौत वस्त्र धारण करें तब तुरंत जल ले आकर जल से शव को स्नान करावे और चन्दन अथवा गंगा जी की म ी के लेप से तथा मालाओं से उसे वभू षत करें। उसके बाद नवीन वस्त्र से ढककर अपसव्य होकर नाम-गोत्र का उच्चारण करके संकल्पपूर्वक

द क्षणासहित पण्डदान देना चाहिए। मृत्यु के स्थान पर "शव" नामक पण्ड को मृत व्यक्ति के नाम-गोत्र से प्रदान करें। ऎसा करने से भू म और भू म के अ धष्ठाता देवता प्रसन्न होते हैं।

इससके पश्चात द्वार देश पर "पान्थ" नामक पण्ड मृतक के नाम-गोत्रादि का उच्चारण करके प्रदान करे। ऎसा करने से भूतादि कोटि में दुर्गतिग्रस्त प्रेत मृत प्राणी की सद्गति में वघ्न-बाधा नहीं कर सकते। इसके बाद पुत्र वधू आदि शव की प्रद क्षणा करके उउसकी पूजा करें तब अन्य बान्धवों के साथ पुत्र को शव यात्रा के नि मत्त कंधा देना चाहिए। अपने पता को कंधे पर धारण करके जो पुत्र श्मशान को जाता है, वह पग-पग पर अश्वमेघ का फल प्राप्त करता है।

पता अपने कंधे पर अथवा अपनी पीठ पर बिठाकर पुत्र का सदा लालन-पालन करता है, उस ऋण से पुत्र तभी मुक्त होता है जब वह अपने मृत पता को अपने कंधे पर ढोता है। इसके बाद आधे मार्ग में पहुँचकर भू म का मार्जन और प्रोक्षण करके शव को वश्राम कराए और उसे स्नान कराकर भूत संज्ञक पतर को गोत्र नामादि के द्वारा 'भूत' नामक पण्ड प्रदान करें। इस पण्डदान से अन्य दिशाओं में स्थित पशाच, राक्षस, यक्ष आदि उस हवन करने योग्य देह की हवनीयता अयोग्यता नहीं उत्पन्न कर सकते।

उसके बाद श्मशान में ले जाकर उत्तरा भमुख स्था पत करें। वहाँ देह के दाह के लए यथा व ध भू म का संशोधन करें। भू म का सम्मार्जन और लेपन करके उल्लेखन करें अर्थात दर्भमूल से तीन रेखाएँ खींचें और उल्लेखन क्रमानुसार ही उन रेखाओं से उभरी हुई म ी को उठाकर ईशान दिशा में फेंककर उस वेदिका को जल से प्रो क्षत करके उसमें व ध-वधानपूर्वक अग्नि स्था पत करें। पुष्प और अक्षत आदि से क्रव्यादसंज्ञक अग्निदेव की पूजा करें और "लोमभ्य: (स्वाहा)" इत्यादि अनुवाक से यथा व ध होम करना चाहिए। (तब उस क्रव्याद - मृतक का मांस भक्षण करने वाली - अग्नि की इस प्रकार प्रार्थना करें) तुम प्रा णयों को धारण करने वाले, उनको उत्पन्न करने वाले तथा प्रा णयों का पालन करने वाले हो, यह सांसारिक मनुष्य मर चुका है, तुम इसे स्वर्ग ले जाओ। इस प्रकार क्रव्याद-संज्ञक अग्नि की प्रार्थना करके वहीं चंदन, तुलसी, पलाश और पीपल की लक ड़यों से चता का निर्माण करें।

हे खगेश्वर ! उस शव को चता पर रख करके वहाँ दो पण्ड प्रदान करें। प्रेत के नाम से एक पण्ड चता पर तथा दूसरा शव के हाथ में देना चाहिए। चता में रखने के बाद से

उस शव में प्रेतत्व आ जाता है। प्रेतकल्प को जानने वाले कतिपय वद्वज्जन चता पर दिये जाने वाले पण्ड को "साधक" नाम से संबो धत करते हैं। अत: चता पर साधक नाम से तथा शव के हाथ पर "प्रेत" नाम से पण्डदान करें। इस प्रकार पाँच पण्ड प्रदान करने से शव में आहुति-योग्यता सम्पन्न होती है। अन्यथा श्मशान में स्थित पूर्वोक्त पशाच, राक्षस तथा यक्ष आदि उसकी आहुति-योग्यता के उपघातक होते हैं। प्रेत के लए पाँच पण्ड देकर हवन कये हुए उस क्रव्याद अग्नि को तिनकों पर रखकर यदि पंचक (धनिष्ठा, शत भषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती ये पाँच नक्षत्र पंचक कहलाते हैं और इन पंचकों के स्वामी ग्रह क्रमश: वसु, वरुण, अजचरण अथवा अजैकपात, अहिर्बुध्न्य और पूषा हैं) न हो तो पुत्र अग्नि प्रदान करे।

पंचक में जिसका मरण होता है, उस मनुष्य को सद्गति नहीं प्राप्त होती। पंचक शान्ति कये बिना उसका दाह संस्कार नहीं करना चाहिए अन्यथा अन्य की मृत्यु हो जाती है। धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती तक पाँच नक्षत्र पंचक संज्ञक है। इनमें मृत व्यक्ति दाह के योग्य नहीं होता औऔर उसका दाह करने से परिणाम शुभ नहीं होता। इन नक्षत्रों में जो मरता है, उसके घर में कोई हानि होती है, पुत्र और सगोत्रियों को भी कोई वघ्न होता है। अथवा इस पंचक में भी दाह व ध का आचरण करके मृत व्यक्ति का दाह-संस्कार हो सकता है।

पंचक मरण-प्रयुक्त सभी दोषों की शान्ति के लए उस दाह- व ध को कहूँगा। हे ताक्ष्र्य ! कुश से नि र्मत चार पुतलों को नक्षत्र-मन्त्रों से अ भमन्त्रित करके शव के समीप में स्था पत करें तब उन पुतलों में प्रतप्त सुवर्ण रखना चाहिए और फर नक्षत्रों के नाम-मन्त्रों से होम करना चाहिए। पुन: "प्रेता जयता नर इन्द्रो व: शर्म यच्छतु" (ऋग्वेद - 10।103।13, युज. 17।46) इस मन्त्र से उन नक्षत्र-मन्त्रों को सम्पुटित करके होम करना चाहिए।

इसके बाद उन पुतलों के साथ शव का दाह करें, स पण्ड श्राद्ध के दिन पुत्र यथा व ध पंचक-शान्ति का अनुष्ठान करें। पंचक दोष की शान्ति के लए क्रमश: तिलपूर्ण पात्र, सोना, चाँदी, रत्न तथा घृतपूर्ण कांस्यपात्र का दान करना चाहिए। इस प्रकार पंचक-शान्ति वधान करके जो शव दाह करता है, उसे पंचकजन्य कोई वघ्न-बाधा नहीं होती और प्रेत भी सद्गति प्राप्त करता है। इस प्रकार पंचक में मृत व्यक्ति का दाह करना चाहिए और पंचक

के बिना मरने पर केवल शव का दाह करना चाहिए। यदि मृत व्यक्ति की पत्नी सती हो रही हो तो उसके दाह के साथ ही शव का दाह करना चाहिए।

अपने पति के प्रयसम्पादन में संलग्न पतिव्रता नारी यदि उसके साथ परलोकगमन करना चाहे (सती होना स्त्री की इच्छा पर निर्भर करता है, सती के नाम पर कोई जबर्दस्ती नहीं होनी चाहिए) तो पति की मृत्यु होने पर स्नान करे और अपने शरीर को कुंकुम, अंजन, सुन्दर वस्त्राभूषणादि से अलंकृत करे, ब्राह्मणों और बन्धु-बान्धवों को दान दे। गुरुजनों को प्रणाम करके तब घर से बाहर निकले। इसके बाद देवालय जाकर भक्तिपूर्वक भगवान वष्णु को प्रणाम करे। वहाँ अपने आभूषणों को सम र्पत करके वहाँ से श्रीफल लेकर लज्जा और मोह का परित्याग करके श्मशान भू म में जाए तब वहाँ सूर्य को नमस्कार करके, चता की परिक्रमा करके पुष्पशैय्या रूपी चता पर चढ़े और अपने पति को गोद में लटाए। तदनन्तर स खयों को श्रीफल देकर दाह के लए आज्ञा प्रदान करे और शरीर दाह को गंगाजल में स्नान के समान मानकर अपना शरीर जलाए।

ग र्भणी स्त्री को अपने पति के साथ अपना दाह नहीं करना चाहिए। प्रसव करके और उत्पन्न बालक का पोषण करने के अनन्तर उसे सती होना चाहिए। यदि स्त्री अपने मृत पति के शरीर को लेकर अपने शरीर का दाह करती है तो अग्नि उसके शरीर मात्र को जलाती है, उसकी आत्मा को कोई पीड़ा नहीं होती। धौंके जाते हुए स्वर्णादि धातुओं का मल जैसे अग्नि में जल जाता है, उसी प्रकार पति के साथ जलने वाली नारी अमृत के समान अग्नि में अपने पापों को जला देती है। जिस प्रकार सत्यपरायण धर्मात्मा पुरुष शपथ के समय तपे हुए लोह पण्डादि को लेने पर भी नहीं जलता, उसी प्रकार चता पर पति के शरीर के साथ संयुक्त वह नारी भी कभी नहीं जलती अर्थात उसे दाहप्रयुक्त कष्ट नहीं होता। प्रत्युत उसकी अन्तरात्मा मृत व्यक्ति की अन्तरात्मा के साथ एकत्व प्राप्त कर लेती है।

पति की मृत्यु होने पर जब तक स्त्री उसके शरीर के साथ अपने शरीर को नहीं जला लेती, तब तक वह कसी प्रकार भी स्त्री शरीर प्राप्त करने से मुक्त नहीं होती। इस लए सर्वप्रयत्नपूर्वक मन, वाणी और कर्म से जी वतावस्था में अपने पति की सदा सेवा करनी चाहिए और मरने पर उसका अनुगमन करना चाहिए। पति के मरने पर जो स्त्री अग्नि में आरोहण करती है, वह मह र्ष व शष्ठ की पत्नी अरुन्धती के समान होकर स्वर्गलोक में सम्मानित होती है। वहाँ वह पतिपरायणा नारी अप्सरागणों के द्वारा स्तूयमान होकर चौदह इन्द्रों के राज्यकालपर्यन्त अर्थात एक कल्प तक अपने पति के साथ स्वर्गलोक में रमण

करती है। जो सती अपने भर्ता का अनुगमन करती है, वह अपने मातृकुल, पतृकुल और पतिकुल - इन तीनों कुलों को प वत्र कर देती है।

मनुष्य के शरीर में साढ़े तीन करोड़ रोमकूप हैं, उतने काल तक वह नारी अपने पति के साथ स्वर्ग में आनन्द करती है। वह सूर्य के समान प्रकाशमान वमान में अपने पति के साथ क्रीड़ा करती है और जब तक सूर्य और चन्द्र की स्थिति रहती है तब तक पतिलोक में निवास करती है। इस प्रकार दीर्घ आयु प्राप्त करके प वत्र कुल में पैदा होकर पतिरूप में वह पतिव्रता नारी उसी जन्मान्तरीय पति को पुन: प्राप्त करती है।

जो स्त्री क्षणमात्र के लए होने वाले दाह-दु:ख के कारण इस प्रकार के सुखों को छोड़ देती है, वह मूर्खा जन्मपर्यन्त वरहाग्नि में जलती रहती है। इस लए पति को शवस्वरूप जानकर उसके साथ अपने शरीर को जला देना चाहिए। शव के आधे या पूरे जल जाने पर उसके मस्तक को फोड़ना चाहिए। गृहस्थों के मस्तक को काष्ठ से और यतियों के मस्तक को श्रीफल से फोड़ देना चाहिए।

पतृलोक की प्राप्ति के लए उसके ब्रह्मरन्ध्र का भेदन करके उसका पुत्र निम्न मन्त्र से अग्नि में घी की आहुति दे - हे अग्निदेव ! तुम भगवान वासुदेव के द्वारा उत्पन्न कए गए हो। पुन: ततुम्हारे द्वारा इसकी तेजोमय दिव्य शरीर की उत्पत्ति हो। स्वर्गलोक में गमन करने के लए इसका स्थूल शरीर जलकर तुम्हारा ह व हो, एतदर्थ तुम प्रज्व लत होओ। इस प्रकार मन्त्रसहित तिल म श्रत घी की आहुति देकर जोर से रोना चाहिए, उससे मृत प्राणी सुख प्राप्त करता है।

दाह के अनन्तर स्त्रियों को स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात पुत्रों को स्नान करना चाहिए। तदनन्तर मृत प्रा ण के गोत्र-नाम का उच्चारण करके तिलांज ल देनी चाहिए फर नीम के पत्तों को चबाकर मृतक के गुणों का गान करना चाहिए। आगे-आगे स्त्रियों को और पीछे पुरुषों को घर जाना चाहिए और घर में पुन: स्नान करके गोग्रास देना चाहिए। पत्तल में भोजन करना चाहिए और घर का अन्न नहीं खाना चाहिए। मृतक के स्थान को लीपकर वहाँ बारह दिन तक रात-दिन द क्षणा भमुख अखण्ड दीपक जलाना चाहिए। हे तार्क्ष्य ! शवदाह के दिन से लेकर तीन दिन तक सूर्यास्त होने पर श्मशान भू म में अथवा चौराहे पर म ी के पात्र में दूध तथा जल देना चाहिए।

काठ की तीन लक ड़यों को दृढ़तापूर्वक सूत से बाँधकर अर्थात तिगो ड़या बनाकर उस पर दूध और जल से भरे हुए कच्चे म ी के पात्र को रखकर यह मन्त्र पढ़े - हे प्रेत ! तुम श्मशान की आग से जले हुए हो, बान्धवों से परित्यक्त हो, यह जल और यह दूध तुम्हारे लए है, इसमें स्नान करो और इसे पीओ (याज्ञवल्क्य स्मृति 3।17 की मताक्षरा में वज्ञानेश्वर ने कहा है क प्रेत के लए जल और दूध पृथक-पृथक पात्रों में रखना चाहिए और "प्रेत अत्र स्नाहि" कहकर जल तथा " पब चेदम्" कहकर दूध रखना चाहिए)। साग्निक - जिन्होंने अग्न्याधान कया हो - को चौथे दिन अस्थिसंचय करना चाहिए और नि षद्ध वार-ति थ का वचार करके निरग्नि को तीसरे अथवा दूसरे दिन अस्थिसंचय करना चाहिए।

अस्थिसंचय के लए श्मशान भू म में जाकर स्नान करके प वत्र हो जाए। ऊन का सूत्र लपेटकर और प वत्री धारण करके - श्मशानवा सयों (भूतादि) के लए पुत्र को "यमाय त्वा." (यजु. 38।9) इस मन्त्र से माष (उड़द) की ब ल देनी चाहिए और तीन बार परिक्रमा करनी चाहिए। हे खगेश्वर ! इसके बाद चतास्थान को दूध से सींचकर जल से सींचे। तदनन्तर अस्थिसंचय करे और उन अस्थियों को पलाश के पत्ते पर रखकर दूध और जल से धोएँ और पुन: म ी के पात्र पर रखकर यथा व ध श्राद्ध - पण्डदान - करें।

त्रिकोण स्थण्डिल बनाकर उसे गोबर से लीपे। द क्षणा भमुख होकर स्थ पण्डल के तीनों कोनों पर तीन पण्डदान करें। चताभस्म को एकत्र करके उसके ऊपर तिपाई रखकर उस पर खुले मुखवाला जलपूर्ण घट स्था पत करें।

इसके बाद चावल पकाकर उसमें दही और घी तथा मष्ठान्न मलाकर जल के सहित प्रेत को यथा व ध ब ल प्रदान करें। हे खग ! फर उत्तर दिशा में पंद्रह कदम जाएँ और वहाँ गढ्ढा बनाकर अस्थि पात्र को स्था पत करें। उसके ऊपर दाहजनित पीड़ा नष्ट करने वाला पण्ड प्रदान करें और गढ्ढे से उस अस्थि पात्र को निकालकर उसे लेकर जलाशय को जाएँ। वहाँ दूध और जल से उन अस्थियों को बार-बार प्रक्षा लत करके चन्दन और कुंकुम से वशेषरूप से ले पत करें फर उन्हें एक दोने में रखकर हृदय और मस्तक में लगाकर उनकी परिक्रमा करें तथा उन्हें नमस्कार करके गंगा जी में वसर्जित करें।

जिस मृत प्राणी की अस्थि दस दिन के अन्तर्गत गंगा में वसर्जित हो जाती है, उसका ब्रह्मलोक से कभी भी पुनरागमन नहीं होता। गंगाजल में मनुष्य की अस्थि जब तक रहती है उतने हजार वर्षों तक वह स्वर्गलोक में वराजमान रहता है।

गंगा जल की लहरों को छूकर हवा जब मृतक का स्पर्श करती है तब उस मृतक के पातक तत्क्षण ही नष्ट हो जाते हैं। महाराज भगीरथ उग्र तप से गंगा देवी की आराधना करके अपने पूर्वजों का उद्धार करने के लए गंगा देवी को ब्रह्मलोक से भूलोक ले आए थे। जिनके जल ने भस्मीभूत राजा सगर के पुत्रों को स्वर्ग में पहुँचा दिया, उन गंगा जी का प वत्र यश तीनों लोकों में वख्यात है।

जो मनुष्य अपनी पूर्वावस्था में पाप करके मर जाते हैं उनकी अस्थियों को गंगा में छोड़ने पर वे स्वर्गलोक चले जाते हैं। कसी महा अरण्य में सभी प्रा णयों की हत्या करने वाला कोई व्याध संह के द्वारा मारा गया और जब वह नरक को जाने लगा तभी उसकी अस्थि गंगाजी में गर पड़ी, जिससे वह दिव्य वमान पर चढ़कर देवलोक को चला गया। इस लए सत्पुरुष को स्वत: ही अपने पता की अस्थियों को गंगाजी में वसर्जित करना चाहिए। अस्थिसंचयन के अनन्तर दशगात्र व ध का अनुष्ठान करना चाहिए।

यदि कोई व्यक्ति वदेश में या वन में अथवा चोरों के भय से मरा हो और उसका शव प्राप्त न हुआ हो तो जिस दिन उसके निधन का समाचार सुने, उस दिन कुश का पुत्तल बनाकर पूर्व व ध के अनुसार केवल उसी का दाह करे और उसकी भस्म को लेकर गंगा जल में वसर्जित करें। दशगात्रादि कर्म भी उसी दिन से आरम्भ करना चाहिए और सांवत्सरिक श्राद्ध में भी उसी दिन (सूचना प्राप्त होने वाले) को ग्रहण करना चाहिए।

यदि गर्भ की पूर्णता हो जाने के अनन्तर नारी की मृत्यु हो गई हो तो उसके पेट को चीरकर बालक को निकाल ले, यदि वह भी मर गया हो तो उसे भू म में गाड़कर केवल मृत स्त्री का दाह करें। गंगा के कनारे मरे हुए बालक को गंगाजी में ही प्रवाहित कर दे और अन्य स्थान पर मरे सत्ताईस महीने तक के बालक को भू म में गाड़ दें।

इसके बाद की अवस्था वाले बालक का दाह संस्कार करे और उसकी अस्थियाँ गंगा जी में वसर्जित करें तथा जलपूर्ण कुम्भ प्रदान करें तथा केवल बालकों को ही भोजन कराएँ।

गर्भ के नष्ट होने पर उसकी कोई क्रया नहीं की जाती पर शशु के मरने पर उसके लए दुग्धदान करना चाहिए। बालक - चूड़ाकरण से पूर्व या तीन वर्ष की अवस्था वाले - के मरने पर उसके लए जलपूर्ण घट का दान करना चाहिए और खीर का भोजन कराना चाहिए।

कुमार के मरने पर कुमार बालकों को भोजन कराना चाहिए और उपनीत पौगण्ड अवस्था के बच्चे के मरने पर उसी अवस्था के बालकों के साथ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

पाँच वर्ष की अवस्था से अ धक वाले बालक की मृत्यु होने पर, वह चाहे उपनीत (यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न) हो अथवा अनुपनीत (जिसका यज्ञोपवीत न हुआ हो) हो, पायस और गुड़ के दस पण्ड क्रमश: प्रदान करने चाहिए। पौगण्ड अवस्था के बालक की मृत्यु होने पर वृषोत्सर्ग तथा महादान की व ध को छोड़कर एकादशाह तथा द्वादशाह की क्रया का सम्पादन करना चाहिए। पता के जी वत रहने पर पौगण्डावस्था में मृत बालक का स पण्डन श्राद्ध नहीं होता। अत: बारहवें दिन उसका केवल एकोद्दिष्ट श्राद्ध करें।

स्त्री और शूद्रों के लए ववाह ही व्रतबन्ध-स्थानीय संस्कार कहा गया है। व्रत अर्थात उपनयन के पूर्व मरने वाले सभी वर्णों के मृतकों के लए उनकी अवस्था के अनुकूल समान क्रया होनी चाहिए। जिसने थोड़ा कर्म कया कया हो, थोड़े वषयों से जिसका संबंध रहा हो, कम अवस्था हो और स्वल्प देह वाला हो, ऎसे जीव के मरने पर उसकी क्रया भी स्वल्प ही होनी चाहिए।

कशोर अवस्था के और तरुण अवस्था के मनुष्य के मरने पर शय्यादान, वृषोत्सर्गादि, पददान, महादान और गोदान आदि क्रयाएँ करनी चाहिए।

सभी प्रकार के सन्या सयों की मृत्यु होने पर उनके पुत्रों आदि के द्वारा न तो उनका दाह-संस्कार कया जाना चाहिए, न उन्हें तिलांज ल देनी चाहिए और न ही उनकी दशगात्रादि क्रया ही करनी चाहिए क्यों क दण्डग्रहण (सन्यास ग्रहण) कर लेने मात्र से नर ही नारायण स्वरूप हो जाता है।

त्रिदण्ड (मन, वाणी और इन्द्रियों का संयम ही त्रिदण्ड है) ग्रहण करने से मृत्यु के अनन्तर उस जीव को प्रेतत्व प्राप्त नहीं होता।

ज्ञानीजन तो अपने स्वरूप का अनुभव कर लेने के कारण सदा मुक्त ही होते हैं। इस लए उनके उद्देश्य से दिये जाने वाले पण्डों की भी उन्हें आकांक्षा नहीं होती। अत: उनके लए पण्डदान और उदक क्रया नहीं करनी चाहिए, कंतु पतृभक्ति के कारण तीर्थश्राद्ध और गया श्राद्ध करने चाहिए।

हे ताक्ष्र्य ! हंस, परमहंस, कुटीचक और बहूदक - इन चारों प्रकार के सन्या सयों की मृत्यु होने पर उन्हें पृथ्वी में गाड़ देना चाहिए। गंगा आदि नदियों के उपलब्ध न रहने पर ही पृथ्वी में गाड़ने की व ध है, यदि वहाँ कोई महानदी हो तो उन्हीं में उन्हें जलसमा ध दे देनी चाहिए।

।।इस प्रकार गरुड़ पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "दाहास्थिसंचयकर्मनिरुपण" नामक दसवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण - ग्यारहवाँ अध्याय

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी बोले - हे केशव ! आप दशगात्र व ध के संबंध में बताइए, इसके करने से कौन-सा पुण्य प्राप्त होता है और पुत्र के अभाव में इसको कसे करना चाहिए।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान बोले - हे ताक्ष्र्य ! अब मैं दशगात्र व ध को तुमसे कहता हूँ, जिसको धारण करने से सत्पुत्र पतृ-ऋण से मुक्त हो जाता है। पुत्र (पता के मरने पर) शोक का परित्याग करके धैर्य धारण कर सात्विक भाव से समन्वित होकर पता का पण्डदान आदि कर्म करें। उसे अश्रुपात नहीं करना चाहिए।

क्यों क बान्धवों के द्वारा कये गये अश्रुपात और श्लेष्मपात को ववश होकर (पतारूपी) प्रेत पान करता है इस लए इस समय निरर्थक शोक करके रोना नहीं चाहिए। यदि मनुष्य हजारों वर्ष रात-दिन शोक करता रहे, तो भी प्राणी कहीं भी दिखाई नहीं पड़ सकता। जिसकी उत्पत्ति हुई है, उसकी मृत्यु सुनिश्चित है और जिसकी मृत्यु हुई है उसका जन्म भी निश्चित है। इस लए बु द्धमान को इस अवश्यम्भावी जन्म-मृत्यु के वषय में शोक नहीं करना चाहिए। ऐसा कोई दैवी अथवा मानवीय उपाय नहीं है, जिसके द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ व्यक्ति पुन: यहाँ वा पस आ सके।

अवश्यम्भावी भावों का प्रतीकार यदि संभव होता तो नल, राम और यु धष्ठिर महाराज आदि दु:ख न प्राप्त करते। इस जगत में सदा के लए कसी का कसी भी व्यक्ति के साथ रहना संभव नहीं है। जब अपने शरीर के साथ भी जीवात्मा का सार्वका लक संबंध संभव नहीं है तो फर अन्य जनों के आत्यन्तिक सहवास की तो बात ही क्या?

जिस प्रकार कोई प थक छाया का आश्रय लेकर वश्राम करता है और वश्राम करके पुन: चला जाता है, उसी प्रकार प्राणी का संसार में परस्पर मलन होता है। पुन: प्रारब्ध कर्मों को भोगकर वह अपने गन्तव्य को चला जाता है। प्रात: काल जो भोज्य पदार्थ बनाया जाता है, वह सांयकाल नष्ट हो जाता है - ऎसे नष्ट होने वाले अन्न के रस से पुष्ट होने वाले शरीर की नित्यता की कथा ही क्या? पतृमरण से होने वाले दु:ख के लये यह पूर्वोक्त वचार औषधस्वरूप है। अत: इसका सम्यक चन्तन करके अज्ञान से होने वाले शोक का परित्याग कर पुत्र को अपने पता की क्रया करनी चाहिए।

पुत्र के अभाव में पत्नी को और पत्नी के अभाव में सहोदर भाई को तथा सहोदर भाई के अभाव में ब्राह्मण की क्रया उसके शष्य को अथवा कसी स पण्डी व्यक्ति को करनी चाहिए। हे गरुड़ ! पुत्रहीन व्यक्ति के मरने पर उसके बड़े अथवा छोटे भाई के पुत्रों या पौत्रों के द्वारा दशगात्र आदि कार्य कराने चाहिए। एक पता से उत्पन्न होने वाले भाईयों में यदि एक भी पुत्रवान हो तो उसी पुत्र से सभी भाई पुत्रवान हो जाते हैं, ऎसा मनु जी ने कहा है।

यदि एक पुरुष की बहुत-सी पत्नियों में कोई एक पुत्रवती हो जाए तो उस एक ही पुत्र से वे सभी पुत्रवती हो जाती हैं। सभी भाई पुत्रहीन हों तो उनका मत्र पण्डदान करे अथवा सभी के अभाव में पुरोहित को ही क्रया करनी चाहिए। क्रया का लोप नहीं करना चाहिए। यदि कोई स्त्री अथवा पुरुष अपने इष्ट- मत्र की और्ध्वदैहिक क्रया करता है तो अनाथ प्रेत का संस्कार करने से उसे कोटियज्ञ का फल प्राप्त होता है।

हे खग ! पता का दशगात्रादि कर्म पुत्र को करना चाहिए, कंतु यदि ज्येष्ठ पुत्र की मृत्यु हो जाए तो अति स्नेह होने पर भी पता उसकी दशगात्रादि क्रया न करे। बहुत-से पुत्रों के रहने पर भी दशगात्र, स पण्डन तथा अन्य षोडश श्राद्ध एक ही पुत्र को करना चाहिए। पैतृक संपत्ति का बँटवारा हो जाने पर भी दशगात्र, स पण्डन और षोडश श्राद्ध एक को ही करना चाहिए, कंतु सांवत्सरिक आदि श्राद्धों को वभक्त पुत्र पृथक-पृथक करें।

इस लए ज्येष्ठ पुत्र को एक समय भोजन, भू म पर शयन तथा ब्रह्मचर्य धारण करके प वत्र होकर भक्ति भाव से दशगात्र और श्राद्ध वधान करने चाहिए। पृथ्वी की सात बार परिक्रमा करने से जो फल प्राप्त होता है, वही फल माता- पता की क्रया करके पुत्र प्राप्त करता है। दशगात्र से लेकर वा र्षक श्राद्धपर्यन्त पता की श्राद्ध क्रया करने वाला पुत्र गया श्राद्ध का फल प्राप्त करता है।

कूप, तालाब, बगीचा, तीर्थ अथवा देवालय के प्रांगण में जाकर मध्यमयाम (मध्याह्नकाल) - में बिना मन्त्र के स्नान करना चाहिए। प वत्र होकर वृक्ष के मूल में द क्षणा भमुख होकर वेदी बनाकर उसे गोबर से लीपे। उस वेदी में पत्ते पर कुश से बने हुए दर्भमय ब्राह्मण को स्था पत करके पाद्यादि से उसका पूजन करें और "अतसीपुष्पसंकाशं."(अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससससमुच्यतम्। ये नमस्यन्ति गो वन्दं न तेषां वद्यते भयम्) इत्यादि मन्त्रों से उसे प्रणाम करे।

इसके पश्चात उसके आगे पण्द प्रदान करने के लए कुश का आसन रखकर उसके ऊपर नाम-गोत्र का उच्चारण करते हुए पके हुए चावल अथवा जौ की पीठी (आटा) से बने हुए पण्ड को प्रदान करना चाहिए। उशीर (खस), चन्दन और भृंगराज का पुष्प निवेदित करें। धूप-दीप, नैवेद्य, मुखवास (ताम्बूल - पान) तथा द क्षणा सम र्पत करें। तदनन्तर काकान्न, दूध और जल से परिपूर्ण पात्र तथा वर्धमान (वृ द्धक्रम से दी जाने वाली) जलांज ल प्रदान करते हुए यह कहे क - "अमुक नाम के प्रेत के लए मेरे द्वारा प्रदत्त (यह पण्डादि सामग्री) प्राप्त हो" अन्न, वस्त्र, जल, द्रव्य अथवा अन्य जो भी वस्तु 'प्रेत' शब्द का उच्चारण करके मृत प्राणी को दी जाती है, उससे उसे अनन्त फल प्राप्त होता है (अक्षय तृप्ति प्राप्त होती है) इस लए प्रथम दिन से लेकर स पण्डीकरण के पूर्व स्त्री और पुरुष दोनों के लए 'प्रेत' शब्द का उच्चारण करना चाहिए।

पहले दिन व धपूर्वक जिस अन्न का पण्ड दिया जाता है, उसी अन्न से व धपूर्वक नौ दिन तक पण्डदान करना चाहिए। नौंवे दिन सभी स पण्डीजनों को मृत प्राणी के स्वर्ग की कामना से तैलाभ्यंग करना चाहिए और घर के बाहर स्नान करके दूब एवं लाजा (लावा) लेकर स्त्रियों को आगे करके मृत प्राणी के घर जाकर उससे कहे क "दूर्वा के समान आपके कुल की वृ द्ध हो तथा लावा के समान आपका कुल वक सत हो" - ऎसा कह करके दूर्वासमन्वित लावा को उसके घर में (चारों ओर) बिखेर दे। हे खगेश्वर ! दसवें दिन मांस से पण्डदान करना चाहिए, कंतु क लयुग में मांस से पण्डदान शास्त्रत: नि षद्ध होने के कारण

माष(उड़द) से पण्डदान करना चाहिए। दसवें दिन क्षौरकर्म और बन्धु-बान्धवों को मुण्डन कराना चाहिए। क्रया करने वाले पुत्र को भी पुन: मुण्डन कराना चाहिए।

दस दिन तक एक ब्राह्मण को प्रतिदिन मष्टान्न भोजन कराना चाहिए और हाथ जोड़कर भगवान वष्णु का ध्यान करके प्रेत की मुक्ति के लए इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए। अतसी के फूल समान कान्ति वाले, पीतवस्त्र धारण करने वाले अच्युत भगवान गो वन्द को जो प्रणाम करते हैं, उन्हें कोई भय नहीं होता। हे आदि-अन्त से रहित, शंख-चक्र और गदा धारण करने वाले, अ वनाशी तथा कमल के समान नेत्र वाले देव वष्णु ! आप प्रेत को मोक्ष प्रदान करने वाले हो। इस प्रकार प्रतिदिन श्राद्ध के अन्त में यह प्रार्थना-मन्त्र पढ़ना चाहिए। तदनन्तर स्नान करके घर जाकर गोग्रास देने के उपरान्त भोजन करना चाहिए।

।।इस प्रकार गरुड़ पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "दशगात्र व धनिरुपण" नामक ग्यारहवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण - बारहवाँ अध्याय

एकादशाहकृत्य-निरुपण, मृत-शय्यादान, गोदान, घटदान, अष्टमहादान, वृषोत्सर्ग, मध्यमषोडशी, उत्तमषोडशी एवं नारायणब ल

गरुड़ उवाच

गरुड़जी ने कहा - हे सुरेश्वर ! ग्यारहवें दिन के कृत्य- वधान को भी बताइए और हे जगदीश्वर! वृषोत्सर्ग की व ध भी बताइये।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - ग्यारहवें दिन प्रात:काल ही जलाशय पर जाकर प्रयत्नपूर्वक सभी और्ध्वदैहिक क्रया करनी चाहिए। वेद और शास्त्रों का अभ्यास करने वाले ब्राह्मणों को निमंत्रित करें और हाथ जोड़कर नमस्कार करके उनसे प्रेत की मुक्ति के लये प्रार्थना करें।

आचार्य भी स्नान-संध्या आदि करके प वत्र हो जाएँ और ग्यारहवें दिन के लये उ चत कृत्यों का व धवत वधान आरम्भ करें। दस दिन तक मृतक के नाम-गोत्र का उच्चारण मन्त्रोच्चारण के बिना करना चाहिए। ग्यारहवें दिन प्रेत का पण्डदान समन्त्रक (मन्त्रों सहित) करना चाहिए। हे गरुड़ ! सुवर्ण से वष्णु की, रजत से ब्रह्मा की, ताम्र से रुद्र की और लौह से यम की प्रतिमा बनवानी चाहिए। पश्चिम भाग में गंगाजल से परिपूर्ण वष्णुकलश स्था पत करके उसके ऊपर पीतवस्त्र से वेष्टित वष्णु की प्रतिमा स्था पत करें। पूर्व-दिशा में दूध और जल से भरा ब्रह्मकलश स्था पत करके उस पर श्वेत वस्त्र से वेष्टित ब्रह्मा की स्थापना करें। उत्तर की दिशा में मधु और घृत से परिपूर्ण रुद्रकुम्भ की स्थापना करके रक्त-वस्त्रवेष्टित श्रीरुद्र की प्रतिमा को उस पर स्था पत करें। द क्षण-दिशा में इन्द्रोदक (वर्षा के जल) से परिपूर्ण यमघट की स्थापना करें और काले वस्त्र से वेष्टित करके उस पर यम की प्रतिमा स्था पत करें।

उनके मध्य में एक मण्डल बनाकर उस पर पुत्र कुश से नि र्मत कुशमयी प्रेत की प्रतिमा स्था पत करें और द क्षणा भमुख एवं अपसव्य होकर तर्पण करें। वष्णु, ब्रह्मा, शव और धर्मराज (यम) का वेदमन्त्रों से तर्पण करें तब होम करने के अनन्तर श्राद्ध और दस घट आदि का दान करे। तदनन्तर पतरों को तारने के लए गोदान करें।

गोदान के समय "हे माधव ! यह गौ मेरे द्वारा आपकी प्रसन्नता के लए दी जा रही है, इस गोदान से आप प्रसन्न होएँ" - ऎसा कहे। प्रेत के द्वारा उपभुक्त आभूषण, वस्त्र, वाहन तथा घृतपूर्ण कांस्यपात्र, सप्तधान्य और प्रेत को प्रय लगने वाली वस्तुएँ एवं तिलादि अष्टमहादान जो अन्तकाल में न कये जा सकें हो, शय्या के समीप रखकर शय्या के साथ इन सबका भी दान करें। ब्राह्मण के चरणों को धोकर वस्त्र आदि से उनकी पूजा करें और मोदक, पूआ, दूध आदि पकवान उन्हें प्रदान करें तब पुत्र शय्या के ऊपर प्रेत की स्वर्णमयी प्रतिमा (कांचन पुरुष को) स्था पत करें और उसकी पूजा करके यथा व ध मृतशय्या का दान करें।

शय्यादान के समय इस मन्त्र को पढ़े - "हे वप्र ! प्रेत की प्रतिमा से युक्त और सभी प्रकार के उपकरणों से समन्वित यह प्रेतशय्या (मृतशय्या) मैंने आपको निवेदित की है" - इस प्रकार पढ़कर कुटुम्बी ब्राह्मण आचार्य को वह शय्या प्रदान करनी चाहिए। इसके बाद प्रद क्षणा और प्रणाम करके वसर्जन करना चाहिए। इस प्रकार शय्यादान, नवक आदि श्राद्ध और वृषोत्सर्ग का वधान करने से प्रेत परम गति को प्राप्त होता है।

ग्यारहवें दिन व धपूर्वक हीन अंगावले, रोगी, अत्यन्त छोटे बछड़े को छोड़कर सभी शुभ लक्षणों से युक्त वृष का व धपूर्वक उत्सर्ग (वृषोत्सर्ग) करना चाहिए। ब्राह्मण के उद्देश्य से लाल आँख वाले, पंगलवर्ण वाले, लाल सींग, लाल गला और लाल खुर वाले, सफेद पेट तथा काली पीठ वाले वृषभ का उत्सर्जन करना चाहिए। क्षत्रिय के लये चकना और रक्तवर्ण वाला, वैश्य के लये पीतवर्ण वाला और शूद्र के लए कृष्ण वर्ण का वृषभ (वृषोत्सर्ग के लये) प्रशस्त माना जाता है।

जिस वृषभ का सर्वांग पंगल वर्ण का हो तथा पूँछ और पैर सफेद हो, वह पंगल वर्ण का वृषभ - पतरों की प्रसन्नता बढ़ाने वाला होता है, ऎसा कहा गया है। जिस वृषभ के पैर, मुख और पूँछ श्वेत हों तथा शेष शरीर लाख के समान वर्ण का हो, वह नीलवृष कहा जाता है। जो वृषभ रक्तवर्ण का हो तथा जिसका मुख और पूँछ पाण्डुर वर्ण का हो तथा खुर और सींग पंगल वर्ण के हों उसे रक्तनील वृष कहते हैं। जिस साँड के समस्त अंग एक रंग के हों तथा पूँछ व खुर पंगलवर्ण् का हो, उसे नील पंग कहा गया है, वह पूर्वजों का उद्धार करने वाला होता है।

जो कबूतर के समान रंगवाला हो, जिसके ललाट पर तिलक-सी आकृति हो और सर्वांग सुन्दर हो, वह बभ्रुनील वृषभ कहा जाता है। जिसका सम्पूर्ण शरीर नीलवर्ण का हो और दोनों नेत्र रक्तवर्ण के हों, उसे महानील वृषभ कहते हैं - इस प्रकार नीलवृषभ पाँच प्रकार के होते हैं।

(वृष का संस्कार करके) उसे अवश्य मुक्त कर देना चाहिए, घर में नहीं रखना चाहिए। इसी वषय में लोक में एक पुरानी गाथा प्रच लत है - बहुत से पुत्रों की कामना करनी चाहिए ता क उनमें से कोई एक गया जाए अथवा गौरी('अष्टवर्षा भवेद्गौरी' - आठ वर्ष की कन्या 'गौरी' कहलाती है) कन्या का ववाह करे या नील वृष का उत्सर्ग करे। जो पुत्र वृषोत्सर्ग करता है और गया में श्राद्ध करता है वही पुत्र है, अन्य पुत्र वष्ठा के समान है।

जिसके कोई पूर्वज रौरव आदि नरकों में यातना पा रहे हों, इक्कीस पीढ़ी के पुरुषों के सहित वृषोत्सर्ग करने वाला पुत्र उनको तार देता है। स्वर्ग में गये हुए पतर भी इस प्रकार वृषोत्सर्ग की कामना करते हैं "हमारे वंश में कोई पुत्र होगा, जो वृषोत्सर्ग करेगा" । उसके द्वारा कये गये वृषोत्सर्ग से हम सब परम गति को प्राप्त होगें। हम लोगों को सभी यज्ञों में श्रेष्ठ वृष यज्ञ मोक्ष देने वाला है। इस लए पतरों की मुक्ति के लए यथोक्त वधान से सभी

प्रयत्नपूर्वक वृषयज्ञ अर्थात वृषोत्सर्ग करना चाहिए। वृषोत्सर्ग करने वाला ग्रहों की तत्तद मन्त्रों से स्थापना और पूजा करके होम करें तथा शास्त्रानुसार वृषभ की माता गौओं की पूजा करें। बछड़ा और बछड़ी को ले जाकर उन्हें कंकण बाँधे और वैवाहिक वधान की व ध के अनुसार स्तम्भ में उन्हें बाँध दे।

फर बछड़ा और बछड़ी को रुद्रकुम्भ के जल से स्नान कराए, गन्ध और माल्य से सम्यक पूजा करके उनकी प्रद क्षणा करे। तदनन्तर वृष के द क्षण भाग में त्रिशूल और वामपार्श्व में चक्र चन्हित करे तब उसे छोड़ते हुए हाथ जोड़कर पुत्र इस मन्त्र को पढ़े। पूर्वकाल में ब्रह्मा के द्वारा नि र्मत तुम वृषरूपी धर्म हो, तुम्हारे उत्सर्ग करने से तुम भवार्णव से पार लगाओ।

इस मन्त्र से नमस्कार करके बछड़ा और बछड़ी को छोड़ दे। भगवान वष्णु ने कहा - इस प्रकार जो वृषोत्सर्ग करता है, मैं सदा उसे वर प्रदान करता हूँ और प्रेत को मोक्ष प्रदान करता हूँ। अत: वृषोत्सर्ग कर्म अवश्य करना अचहिए। अपनी जी वतावस्था में भी वृषोत्सर्ग करने पर वही फल प्राप्त होता है। पुत्रहीन मनुष्य तो स्वयं अपने उद्देश्य से वृषोत्सर्ग करके सुक्गपूर्वक परम गति को प्राप्त करता है। कार्तिक आदि शुभ महीनों में, सूर्य के उत्तरायण होने पर, शुक्ल पक्ष अथवा कृष्ण पक्ष की द्वादशी आदि ति थयों में, सूर्य-चन्द्र के ग्रहणकाल में, प वत्र तीर्थ में, दोनों अयन-संक्रांतियों (मकर-कर्क) में और वषुवत-संक्रांतियों (मेष-तुला) में वृषोत्सर्ग करना चाहिए। शुभ लग्न और मुहूर्त में प वत्र स्थान में समाहित चत्त होकर व ध जानने वाले शुभ लक्षणों से युक्त ब्राह्मण को बुलाकर जप-होम तथा दान से अपनी देह को प वत्र करके पूर्वोक्त रीति से सभी होमादि कृत्यों का सम्पादन करना चाहिए।

शालग्राम की स्थापना करके वैष्णव श्राद्ध करना चाहिए। तदनन्तर अपना श्राद्ध करें और ब्राह्मणों को दान दे\ हे प क्षन ! अपुत्रवान अथवा पुत्रवान जो भी इस प्रकार वृषोत्सर्ग करता है, उस वृषोत्सर्ग से उसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होती है। अग्निहोत्रादि यज्ञों से और व वध दानों से भी वह गति नहीं होती जो वृषोत्सर्ग से प्राप्त होती है। बाल्यावस्था, कौमार, पौगण्ड, यौवन और वृद्धावस्था में कया गया जो पाप है, वह सब वृषोत्सर्ग से नष्ट हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है। मत्रद्रोही, कृतघ्न, सुरापान करने वाला, गुरुपत्नीगामी, ब्रह्महत्यारा और स्वर्ण की चोरी करने वाला भी वृशोत्सर्ग से पापमुक्त हो जाता है। (ये लोग महापापी कहे गये हैं) इस लए हे ताक्र्ष्य ! सभी प्रयत्न करके वृषोत्सर्ग करना चाहिए। तीनों लोक में वृषोत्सर्ग के समान कोई पुण्यकार्य नहीं है।

पति और पुत्रवाली स्त्री यदि उन दोनों के सामने मर जाये तो उसके उद्देश्य से वृषोत्सर्ग नहीं करना चाहिए, अ पतु दूध देने वाली गाय का दान करना चाहिए। हे गरुड़ ! जो व्यक्ति वृषोत्सर्ग वाले वृषभ को कन्धे अथवा पीठ पर भार ढोने के काम में प्रयोग करता है, वह प्रलयपर्यन्त घोर नरक में निवास करता है। जो निर्दयी व्यक्ति मु ी अर्थात मुक्के अथवा लकड़ी से वृषभ को मारता है, वह एक कल्प तक यम यातना को भोगता है।

इस प्रकार वृषोत्सर्ग करके स पण्डीकरण के पूर्व षोडश श्राद्धों को करना चाहिए। वह मैं तुमसे कहता हूँ। मृत स्थान में, द्वार पर, अर्धमार्ग में, चता में, शव के हाथ में और अस्थि संचय में - इस प्रकार छः पण्ड प्रदान करके दस दिन तक दशगात्र के दस पण्डों को देना चाहिए। यह प्रथम म लनषोडशी श्राद्ध कहा जाता है और दूसरा मध्य में कया जाने वाला मध्यमषोडशी कहा जाता है उसके वषय में तुमसे कहता हूँ।

मध्यमषोडशी में (म लनषोडशी की भाँति ही सोलह पण्ड होते हैं) पहला पण्ड भगवान वष्णु को, दूसरा शव तथा तीसरा सपरिवार यम को प्रदान करें। चौथा पण्ड सोमराज, पाँचवां हव्यवाह (हव्य को वहन करने वाले अग्नि) छठा कव्यवाह (कव्य वहन करने वाले अग्नि) तथा सातवाँ पण्ड काल को प्रदान करें। आठवाँ पण्ड रुद्र को, नवाँ पुरुष को, दसवाँ प्रेत को और ग्यारहवाँ पण्ड तत्पुरुष के उद्देश्य से देना चाहिए। हे खग! तत्त्व वद लोग इसे मध्यमषोडशी कहते हैं। तदनन्तर प्रतिमास के बारह, पा क्षक, त्रिपा क्षक, ऊनषाण्मा सक और ऊनाब्दिक - इन श्राद्धों को उत्तमषोडशी कहा जाता है। इनके वषय में मैंने तुम्हें बताया। हे ताक्ष्र्य ! इनको ग्यारहवें दिन चरु बनाकर करना चाहिए।

ये अड़तालीस श्राद्ध प्रेतत्व को नष्ट करने वाले हैं। जिस मृतक के उद्देश्य से ये अड़तालीस श्राद्ध कये जाते हैं, वह पतरों की पंक्ति के योग्य हो जाता है। इस लए पतरों की पंक्ति में प्रवेश दिलाने के लए षोडशत्रयी (म लन, मध्यम तथा उत्तमषोडशी) करनी चाहिए\ इन श्राद्धों से वहीन मृतक का प्रेतत्व सुस्थिर हो जाता है और जब तक षोडशत्रयसंज्ञक श्राद्ध नहीं कये जाते, तब तक वह प्रेत अपने द्वारा अथवा दूसरे के द्वारा दी गई कोई वस्तु प्राप्त नहीं करता।

इस लए पुत्र को वधानपूर्वक षोडशत्रयी का अनुष्ठान करना चाहिए। पत्नी यदि अपने पति के उद्देश्य से इन श्राद्धों को करती है तो उसे अनन्त श्रेय की प्राप्ति होती है। जो स्त्री

अपने मृत पति की और्ध्वदैहिक क्रया - क्षयाह-श्राद्ध (वा र्षक श्राद्ध) तथा पा क्षक श्राद्ध (महालय-श्राद्ध) करती है, वह मेरे द्वारा सती कही गई है।

जो स्त्री पति के उपकारार्थ पूर्वोक्त श्राद्धों का अनुष्ठान करने के लए जीवन धारण करती है और मरे हुए अपने पति की श्राद्धादिरूप से सेवा करती है, वह पतिव्रता है और उसका जीवन सफल है। यदि कोई प्रमाद से, आग से जलकर अथवा जल में डूबकर मरता है, उसके सभी संस्कार यथा व ध करने चाहिए। यदि प्रमाद से, स्वेच्छा से अथवा सर्प के द्वारा मृत्यु हो जाए तो दोनों पक्षों की पंचमी ति थ को नाग की पूजा करनी चाहिए। पृथ्वी पर पीठी से फण की आकृति वाले नाग की रचना करके श्वेत पुष्पों तथा सुगन्धित चन्दन से उसकी पूजा करनी चाहिए।

धूप और दीप देना चाहिए तथा तण्डुल और तिल चढ़ाना चाहिए। कच्चे आटे का नैवेद्य और दूध अ र्पत करना चाहिए। शक्ति के अनुसार सुवर्न का नाग और गौ ब्राह्मण को दान करना चाहिए। तदनन्तर हाथ जोड़ करके "नागराज प्रसन्न हों" - इस प्रकार कहना चाहिए।

पुन: उन जीवों के उद्देश्य से नारायण ब ल की क्रया करनी चाहिए। ऎसा करने से मृत व्यक्ति सभी पातकों मुक्त हो स्वर्ग को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण क्रया करके एक वर्ष तक अन्न और जल के सहित घट का दान करना चाहिए अथवा संख्यानुसार जल के सहित पण्डदान करना चाहिए। इस प्रकार ग्यारहवें दिन श्राद्ध करके स पण्डीकरण करना चाहिए और सूतक बीत जाने पर शय्यादान और पददान करना चाहिए।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "एकादशाह व धनिरूपण" नामक बारहवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण - तेरहवाँ अध्याय

अशौचकाल का निर्णय, अशौच में नि षद्ध कर्म, स पण्डीकरण श्राद्ध, पण्डमेलन की प्र क्रया, शय्यादान, पददान तथा गया श्राद्ध की महिमा

गरुड़ उवाच

गरुड़जी ने कहा - हे प्रभो! स पण्डन की व ध, सूतक का निर्णय और शय्यादान तथा पददान की सामग्री एवं उनकी महिमा के वषय में कहिए।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - हे ताक्ष्र्य! स पण्डीकरण आदि सम्पूर्ण क्रयाओं के वषय में बतलाता हूँ, जिसके द्वारा मृत प्राणी प्रेत नाम को छोड़कर पतृगण में प्रवेश करता है, उसे सुनो। जिनका पण्ड रुद्रस्वरुप पतामह आदि के पण्डों में नहीं मला दिया जाता, उनकों पुत्रों के द्वारा दिये गये अनेक प्रकार के दान प्राप्त नहीं होते। उनका पुत्र भी सदा अशुद्ध रहता है कभी शुद्ध नहीं होता क्यों क स पण्डीकरण के बिना सतक की निवृत्ति अर्थात समाप्ति नहीं होती। इस लए पुत्र के द्वारा सूतक के अन्त में स पण्डन कया जाना चाहिए।

मैं सभी के लए सूतकान्त का यथो चत काल कहूँगा। ब्राह्मण दस दिन में, क्षत्रिय बारह दिन में, वैश्य पन्द्रह दिन और शूद्र एक मास में शुद्ध होता है। प्रेत संबंधी सूतक में स पण्डी दस दिन में शुद्ध होते हैं। सकुल्या (कुल के लोग) तीन रात में शुद्ध होते हैं और गोत्रज स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। चौथी पीढ़ी तक के बान्धव दस रात में, पाँचवीं पीढ़ी के लोग छः रात में, छठी पीढ़ी के चार दिन में और सातवीं पीढ़ी के तीन दिन में, आठवीं पीढ़ी के एक दिन में, नवीं पीढ़ी के दो प्रहर में तथा दसवीं पीढ़ी के लोग स्नान मात्र से मरणाशौच और जननाशौच से शुद्ध हो जाते हैं।

देशान्तर में गया हुआ कोई व्यक्ति अपने कुल के जननाशौच या मरणाशौच के वषय का समाचार दस दिन के अंदर सुनता है तो दस रात्रि बीतने में जितना समय शेष रहता है, उतने समय के लए उसे अशौच होता है। दस दिन बीत जाने के बाद और एक वर्ष के पहले तक ऎसा समाचार मलने पर तीन रात तक अशौच रहता है। संवत्सर अर्थात एक वर्ष बीत जाने पर समाचार मले तो स्नान मात्र से शु द्ध हो जाती है।

मरणाशौच के आदि के दो भागों के बीतने के पूर्व अर्थात छः दिन तक यदि कोई दूसरा अशौच आ पड़े तो आद्य अशौच की निवृति के साथ ही दूसरे अशौच की भी निवृत्ति अर्थात शु द्ध हो जाती है। कसी बालक की दाँत निकलने से पूर्व मृत्यु होने पर सद्यः अर्थात उसके अन्तिम संस्कार के बाद स्नान करने पर, चूड़ाकरण अर्थात मुण्डन हो काने पर एक रात, व्रतबन्ध होने पर तीन रात और व्रतबन्ध के पश्चात मृत्यु होने पर दस रात का अशौच

होता है। जब कसी भी वर्ण की कन्या की मृत्यु जन्म से लेकर सत्ताईस मास की अवस्था तक हो जाए तो सभी वर्णों में समान रुप से सद्य: अशौच की निवृत्ति हो जाती है।

इसके बाद वाग्दानपर्यन्त एक दिन का और इसके बाद अथवा बिना वाग्दान के भी सयानी कन्याओं की मृत्यु होने पर तीन रात्रि का अशौच होता है, यह निश्चित है। वाग्दान के अनन्तर कन्या की मृत्यु होने पर पतृकुल और वरकुल दोनों को तीन दिन का तथा कन्यादान हो जाने पर केवल पति के कुल में अशौच होता है। छ: मास के अंदर गर्भस्त्राव हो जाने पर जितने माह का गर्भ होता है, उतने ही दिनों में शु द्ध होती है।

इसके बाद अर्थात छ: माह के बाद गर्भस्त्राव हो तो उस स्त्री को अपनी जाति के अनुरुप अशौच होता है। गर्भपात होने पर स पण्ड की सद्य: (स्नानोत्तर) शु द्ध हो जाती है। क लयुग में जननाशौच और मरणाशौच से सभी वर्णों की दस दिन में शु द्ध हो जाती है, ऎसा शास्त्र का निर्णय है। मरणाशौच में आशीर्वाद, देवपूजा, प्रत्युत्थान (आगन्तुक के स्वागतार्थ उठना) अ भवादन, पलंग पर शयन अथवा कसी अन्य का स्पर्श नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार मरणाशौच में संध्या, दान, जप, होम, स्वाध्याय, पतृतर्पन, ब्राह्मणभोजन तथा व्रत नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति सूतक में नित्य-नै मत्तिक अथवा काम्य कर्म करता है, उसके द्वारा पहले कये गये नित्य-नै मत्तिक आदि कर्म वनष्ट हो जाते हैं। व्रती, मन्त्रपूत, अग्निहोत्री ब्राह्मण, ब्रह्मनिष्ठ, यती और राजा - इन्हें सूतक नहीं लगता।

ववाह, उत्सव अथवा यज्ञ में मरणाशौच हो जाने पर उस अशौच की प्रवृत्ति के पूर्व बनाया हुआ अन्न भोजन करने योग्य होता है - ऎसा मनु ने कहा है। सूतक ना जानने के कारन जो व्यक्ति सूतक वाले घर से अन्नादि कुछ ग्रहण करता है, वह दोषी नहीं होता, कंतु याचक को देने वाला दोष का भागी होता है। जो सूतक को छिपाकर ब्राह्मण को अन्न देता है, वह दाता तथा सूतक को जानकर भी जो ब्राह्मण सूतकान्न का भोजन करता है, वे दोनों ही दोषी होते हैं।

इस लए सूतक से शु द्ध प्राप्त करने के लए पता का स पण्डन-श्राद्ध करना चाहिए तभी वह मृतक पतृगणों के साथ पतृलोक में जाता है। तत्त्वदर्शी मुनियों ने बारहवें दिन, तीन पक्ष में, छ: मास में अथवा एक वर्ष पूर्ण होने पर स पण्डीकरन करने के लए कहता

हूँ।क लयुग में धा र्मक भावना के अनित्य होने से, पुरुषों की आयु क्षीण होने से और शरीर की अस्थिरता के कारण बारहवें दिन ही स पण्डीकरण कर लेना प्रशस्त है।

गृहस्थ के मरने पर व्रतबन्ध, उत्सव आदि, व्रत, उद्यापन तथा ववाहादि कृत्य नहीं होते। जब तक पण्डमेलन नहीं होता अर्थात पतरों में पण्ड मला नहीं दिया जाता या स पण्डीकरण-श्राद्ध नहीं हो जाता तब तक उसके यहाँ से भक्षु भक्षा भी नहीं ग्रहण करता, अति थ उसके यहाँ सत्कार नहीं ग्रहण करता और नित्य-नै मत्तिक कर्मों का भी लोप रहता है।

कर्म का लोप होने से दोष का भागी होना पड़ता है इस लए चाहे निरग्निक हो या साग्निक (अग्निहोत्री) बारहवें दिन स पण्डन कर देना चाहिए। सभी तीर्थों में स्नान आदि करने और सभी यज्ञों का अनुष्ठान करने से जो फल प्राप्त होता है, वही फल बारहवें दिन स पण्डन करने से प्राप्त होता है। अत: स्नान करके मृतावस्था में गोमय से लेपन करके पुत्र को शास्त्रोक्त व ध से स पण्डन श्राद्ध करना चाहिए।

पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय आदि से वश्वे देवों का पूजन करे और असद्गति के पतरों के लए भू म में व कर देकर हाथ-पाँव धोकर पुन: आचमन करें तब वसु, रुद्र और आदित्यस्वरूप पता, पतामह तथा प्र पतामह को क्रमश: एक-एक अर्थात तीन पण्ड प्रदान करें और चौथा पण्ड मृतक को प्रदान करें। चन्दन, तुलसीपत्र, धूप-दीप, सुन्दर भोजन, ताम्बूल, सुन्दर वस्त्र तथा द क्षणा आदि से पूजन करें।

तदनन्तर सुवर्ण की शलाका से प्रेत के पण्ड को तीन भागों में वभक्त करके पतामह आदि के पण्डों में पृथक-पृथक उसका मेलन करें अर्थात एक भाग पतामह के पण्ड में, दूसरा भाग प्र पतामह के पण्ड में तथा तीसरा भाग वृद्ध प्र पतामह के पण्ड में मलाएँ। हे ताक्ष्र्य ! मेरा मत है क माता के पण्ड का मेलन पतामही आदि के पण्ड के साथ और पता के पण्ड का मेलन पतामह आदि के पण्ड के साथ करके स पण्डीकरण-श्राद्ध संपन्न करना चाहिए।

जिसके पता की मृत्यु हो गई हो और पतामह जी वत हों, उसे प्र पतामहादि पूर्व पुरुषों को तीन पण्ड प्रदान करना चाहिए और पतृ पण्ड को तीन भागों में वभक्त करके (प्र पतामह आदि) उन्हीं के साथ मेलन करें। माता की मृत्यु हो जाने पर पतामही जी वत हो तो माता के स पण्डन-श्राद्ध में भी पतृ-स पण्डन की भाँति प्र पतामही आदि मे मातृ पण्ड

का मेलन करना चाहिए अथवा पतृ पण्ड को मेरे पण्ड (वष्णु जी के) में और मातृ पण्ड को महालक्ष्मी पण्ड में मलाएँ।

पुत्रहीन स्त्री का स पण्डनादि श्राद्ध उसके पति को करना चाहिए और उसका स पण्डीकरण उसकी सास आदि के साथ होना चाहिए। एक मतानुसार वधवा स्त्री का स पण्डीकरण पति, श्वसुर और वृद्ध श्वसुर के साथ करना चाहिए। हे ताक्ष्र्य ! यह मेरा मत नहीं है। वधवा स्त्री का स पण्डन पति के साथ होने योग्य है। हे काश्यप ! यदि पति और पत्नी एक ही चता पर आरुढ़ हुए हों तो तृण को बीच में रखकर शवसुरादि के पण्ड के साथ स्त्री के पण्ड का मेलन करना चाहिए।

एक चता पर माता- पता का दाह संस्कार कये जाने पर एक ही पुत्र पहले पता के उद्देश्य से पण्डदान करके स्नान करे, तदनन्तर अपनी सती माता का पण्डदानन करके पुन: स्नान करे। यदि दस दिन के अन्तर्गत कसी सती ने अग्नि प्रवेश कया है तो उसका शय्यादान और स पण्डन आदि कृत्य उसी दिन करना चाहिए, जिस दिन पति का कया जाए। हे गरुड़ ! स पण्डिकरण करने के अनन्तर पतरों का तर्पण करे और इस क्रया में वेदमन्त्रों से समन्वित स्वधाकार का उच्चारण करे।

इसके पश्चात अति थ को भोजन कराएँ और हन्तकार प्रदान करें। ऐसा करने से पतर, मुनिगण, देवता तथा दानव तृप्त होते हैं। भक्षा एक ग्रास के बराबर होती है, पुष्कल चार ग्रास के बराबर होता है और चार पुष्कलों (सोलह ग्रास) का एक हन्तकार होता है। स पण्डीकरण में ब्राह्मणों के चरणों की पूजा चन्दन-अक्षत से करनी चाहिए और पतरों की अ़ायतृप्ति के लये ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

वर्ष भर जी वका का निर्वाह करने योग्य घृत, अन्न, सुवर्ण, रजत, सुन्दर गौ, अश्व, गज, रथ और भू मका आचार्य को दान करना चाहिए। इसके बाद स्वस्तिवाचनपूर्वक मन्त्रों से कुंकुम, अक्षत और नैवेद्यादि के द्वारा ग्रहों, देवी और वनायक की पूजा करनी चाहिए। इसके बाद आचार्य मन्त्रोच्चारण करते हुए यजमान का अ भषेक करे और हाथ में रक्षासूत्र बाँधकर मन्त्र से प वत्र अक्षत प्रदान करें।

तदनन्तर व वध प्रकार के सुस्वादु मष्टान्नों से ब्राह्मणों को भोजन कराएँ और फर द क्षणा सहित अन्न एवं जलयुक्त बारह घट प्रदान करें" तदनन्तर ब्राह्मा ण को वर्ण क्रम

से अपनी शु द्ध हेतु क्रमश: जल, शस्त्र, कोड़े फर डण्डे का स्पर्श करना चाहिए अर्थात ब्राह्मण जल का, क्षत्रिय शस्त्र का, वैश्य कोड़े का तथा शूद्र डण्डे का स्पर्श करे।

ऎसा करने से वे शुद्ध हो जाते हैं। इस प्रकार स पण्डन-श्राद्ध करके क्रया करते समय पहने गये वस्त्रों का त्याग कर दें। इसके बाद श्वेत वर्ण के वस्त्र को धारण करके शय्यादान करें।

इन्द्र सहित सभी देवता शय्यादान की प्रशंसा करते हैं, अत: मृतक के उद्देश्य से उसकी मृत्यु के बाद अथवा जीवनकाल में भी शय्या प्रदान करनी चाहिए। शय्या सुदृढ़ काष्ठ की सुन्दर एवं व चत्र चत्रों से चत्रित, दृढ़, रेशमी सूत्रों से बनी हुई तथा स्वर्णपत्रों से अलंकृत हो। श्वेत रुई के गद्दे, सुन्दर त कये तथा चादर से युक्त हो तथा पुष्प, गन्ध आदि द्रव्यों से सुवा सत हो। वह सुन्दर बन्धनों से भली भाँति बँधी हुई हो और पर्याप्त वशाल हो तथा सुख प्रदान करने वाली हो - ऎसी शय्या को बनाकर आस्तरणयुक्त (कुश या दरी-चादरयुक्त) भू म पर रखें।

उस शय्या के चारों ओर छाता, चाँदी का दीपालय, चँवर, आसन और पात्र, झारी या कलश, गड़ुआ, दर्पण, पाँच रंगों वाला चँदवा तथा शयनोपयोगी और सभी साम ग्रयों को यथास्थान स्था पत करें। उस शय्या के ऊपर सभी प्रकार के आभूषण, आयुध तथा वस्त्र से युक्त स्वर्ण की श्रीलक्ष्मी-नारायण की मूर्त्ति स्था पत करें।

सौभाग्यवती स्त्री के लये दी जाने वाली शय्या के साथ पूर्वोक्त वस्तुओं के अतिरिक्त कज्जल, महावर, कुंकुम, स्त्रियो चत वस्त्र, आभूषण तथा सौभाग्य-द्रव्य आदि सब कुछ प्रदान करें। तदनन्तर सपत्नीक ब्राह्मण को गन्ध-पुष्पादि से अलंकृत करके ब्राह्मणी को कर्णाभरण, अंगूठी और सोने के कण्ठ सूत्र से वभू षत करें। उसके बाद ब्राह्मण को साफा, दुप ा और कुर्ता पहनाकर श्रीलक्ष्मी-नारायण मूर्ति के आगे सुख शय्या पर बिठाए।

कुंकुम और पुष्पमाला आदि से श्रीलक्ष्मी-नारायण की भली भाँति पूजा करें। तदनन्तर लोकपाल, नवग्रह, देवी और वनायक की पूजा करें। उत्तरा भमुख होकर अंज ल में पुष्प लेकर ब्राह्मण के सामने स्थित होकर इस मन्त्र का उच्चारण करें - हे कृष्ण ! जैसे क्षीरसागर में आपकी शय्या है, वैसे ही जन्म-जन्मान्तर में भी मेरी शय्या सूनी न हो।

इस प्रकार प्रार्थना करके वप्र और श्रीलक्ष्मी-नारायण को पुष्पांज ल चढ़ाकर संकल्पपूर्वक उपस्कर (सभी साम ग्रयों) के साथ व्रतोपदेशक, ब्रह्मवादी गुरु को शय्या का दान दे और कहे - "हे ब्राह्मण ! इस शय्या को ग्रहण करो" - ब्राह्मण को 'कोऽदात्कस्मा अदात्कामोऽदात्कामायादात्। कामो दाता काम: प्रतिग्रहीता कामैतत्ते।।' (यजु. 7।48), यह मन्त्र कहते हुए ग्रहण करें। इसके बाद शय्या पर स्थित ब्राह्मण को, लक्ष्मी और नारायण की प्रतिमा को हिलाएँ, तदनन्तर प्रद क्षणा और प्रणाम करके उन्हें वसर्जित करें।

यदि पर्याप्त धन-संपत्ति हो तो शय्या में सुखपूर्वक शयन करने के लए सभी प्रकार के उपकरणों से युक्त अत्यन्त सुन्दर गृहदान भी करें। जो जी वतावस्था में अपने हाथ से शय्यादान करता है, वह जीते हुए ही पर्वकाल में वृषोत्सर्ग भी करे। एक शय्या एक ही ब्राह्मण को देनी चाहिए। बहुत ब्राह्मणों को एक शय्या कदा प नहीं देनी चाहिए। यदि वह शय्या वभक्त अथवा वक्रय करने के लए दी जाती है तो वह दाता के अध:पतन का कारण बनती है।

सत्पात्र को शय्यादान करने से वांछित फल की प्राप्ति होती है और पता तथा दान देने वाला पुत्र - दोनों इस लोक और परलोक में मुदित होते हैं। शय्यादान के प्रताप से दाता दिव्य इन्द्रलोक में अथवा सूर्यपुत्र यम के कोल में पहुँचता है, इसमें संशय नहीं है। श्रेष्ठ वमान पर आरुढ़ होकर अप्सरागणों से से वत दाता प्रलयपर्यन्त आतंकरहित होकर स्वर्ग में स्थित रहता है। सभी तीर्थों में तथा सभी पर्व दिनों में जो भी पुण्यकार्य कये जाते हैं, उन सभी से अ धक पुण्य शय्यादान के द्वारा प्राप्त होता है। इस प्रकार पुत्र को शय्यादान करके पददान देना चाहिए। पददान के वषय में मैं तुम्हें यथावत बतलाता हूँ, सुनो। छाता, जूते, वस्त्र, अँगूठी, कमण्डलु, आसन तथा पंचपात्र - ये सात वस्तुएँ पद कही गई हैं।

दण्ड, ताम्रपत्र, आमान्न (कच्चा अन्न), भोजन, अर्घ्यपात्र और यज्ञोपवीत को मलाकर पद की सम्पूर्णता होती है। इस प्रकार शक्ति के अनुसार तेरह पददानों की व्यवस्था करके बारहवें दिन तेरह ब्राह्मणों को पददान करना चाहिए। इस पददान से धा र्मक पुरुष सद्गति को प्राप्त होते हैं। यममार्ग में गये हुए जीवों के लए पददान सुख प्रदान करने वाला होता है। वहाँ यममार्ग में अत्यन्त प्रचण्ड आतप होता है, जिससे अम्नुष्य जलता है। छाता दान करने से उसके सर पर सुन्दर छाया हो जाती है। जो जूता दान करते हैं, वे अत्यन्त कण्टकाकीर्ण यमलोक के मार्ग में अश्व पर चढ़कर जाते हैं। हे खेचर! वहाँ यममार्ग में शीत,

गरमी और वायु से अत्यन्त घोर कष्ट मलता है। वस्त्रदान के प्रभाव से जीव सुखपूर्वक उस मार्ग को तय कर लेता है।

यम के मार्ग में माहभयंकर और वकराल तथा काले और पीले वर्ण के यमदूत मुद्रिका प्रदान करने से जीव को पीड़ा नहीं देते हैं। कमण्डलु का दान करने से अत्यन्त धूप से परिपूर्ण, वायुरहित और जल वहीन यममार्ग में जाने वाला वह प्यासा जीव प्यास लगने पर जल पीता है। मृत व्यक्ति के उद्देश्य से जो ताम्र का जल पात्र देता है, उसे एक हजार प्रपादान का फल अवश्य ही प्राप्त होता है। ब्राह्मण को सम्यक्-रूप से आसन और भोजन देने पर यममार्ग में चलता हुआ जीव धीरे-धीरे सुखपूर्वक पाथेय (भोज्य-पदार्थों) का उपभोग करता है।

इस प्रकार स पण्डन के दिन वधानपूर्वक दान दे करके बहुत-से ब्राह्मणों को तथा चाण्डाल आदि को भी भोजन देना चाहिए। इसके बाद वर्ष के पूर्व ही बारहवें दिन स पण्डन करने पर भी प्रत्येक मास जलकुम्भ और पण्डदान करना चाहिए।

हे खग ! प्रेत कार्य को छोड़कर अन्य कसी कर्म का पुन: अनुष्ठान नहीं कया जाता, कंतु प्रेत की अक्षयतृप्ति के लये पुन:-पुन: पण्डदानादि करना चाहिए। अत: मैं वशेष ति थ पर मत्यु होने वाले जीव के मा सक, वा षक और पा क्षक श्राद्ध के वषय में कुछ वशेष बात कहूँगा। पूर्णमासी ति थ पर जो मरता है उसका ऊनमा सक श्राद्ध चतुर्थी ति थ को होता है और जिसकी मृत्यु चतुर्थी ति थ को हुई है, उसका ऊनमा सक श्राद्ध नवमी ति थ को होता है। नवमी ति थ को जिसकी मत्यु हुई है, उसका ऊनमा सक श्राद्ध रिक्ता ति थ - चतुर्दशी को होता है। इस प्रकार पा क्षक श्राद्ध बीसवें दिन करना चाहिए।

यदि एक ही मास में दो संक्रांतियाँ हों तो दो महीनों का श्राद्ध मलमास में ही करना चाहिए। यदि एक ही मास में दो मास हों तो उस मास के ही वे दोनों पक्ष और वे ही तीस ति थयाँ उन दोनों महीनों की मानी जाएगी। मलमास में पड़ने वाले उन दोनों मासों के मा सक श्राद्ध के वषय में वद्वानों को यह व्यवस्था सोचनी चाहिए क श्राद्ध-ति थ के दिन पूर्वार्द्ध में प्रथम मास का श्राद्ध करें और द् वतीयार्द्ध में दोपहर के बाद दूसरे मास का श्राद्ध करें।

हे खग ! संक्रान्ति रहित मास (मलमास) में भी स पण्डीकरण तथा मा सक और प्रथम वा र्षक श्राद्ध करना चाहिए। यदि वर्ष पूर्ण होने के मध्य में अ धमास आता है तो तेरह महीने पूर्ण होने के अनन्तर प्रेत का वा र्षक श्राद्ध करना चाहिए।

संक्रांति रहित मास में पण्ड रहित श्राद्ध (आम श्राद्ध) और संक्रांतियुक्त मास में पण्डयुक्त श्राद्ध करना चाहिए। इस प्रकार प्रथम वा र्षक श्राद्ध को (मलमास तथा उसके बाद आने वाले शुद्ध मास - तेरहवें मास) दोनों ही मासों में करना चाहिए। इस प्रकार वर्ष पूर्ण होने पर वा र्षक श्राद्ध करना चाहिए और वा र्षक श्राद्ध की ति थ को वशेष रूप से ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

एक वर्ष पूर्ण हो जाने पर श्राद्ध में हमेशा तीन पण्ड दान करना चाहिए। एकोद्दिष्ट श्राद्ध नहीं करना चाहिए। ऎसा करने वाला पतृघातक होता है। तीर्थश्राद्ध, गयाश्राद्ध तथा गजच्छाया योग में, युगादि ति थयों तथा ग्रहण में कया जाने वाला पतृश्राद्ध वर्ष के अंदर नहीं करना चाहिए। हे खगेश्वर ! पतृभक्ति से प्रेरित हो करके पुत्र को एक वर्ष के अनन्तर ही गया श्राद्ध करना चाहिए। गया श्राद्ध करने से पतर भवसागर से मुक्त हो जाते हैं और भगवान गदाधर की कृपा से वे परम गति को प्राप्त होते हैं। गया के वष्णुपद तीर्थ में तुलसी की मंजरी से भगवान वष्णु की पादुका का पूजन करना चाहिए और उसके आलवाल आदि तीर्थों में यथाक्रम पण्डदान करना चाहिए।

जो व्यक्ति गया शर में शमी के पत्ते के समान प्रमाण वाले पण्ड को देता है, वह सातों गोत्रों के अपने एक - सौ - एक पुरुषों का उद्धार करता है। कुल को आनन्दित करने वाला जो पुत्र गया में जाकर श्राद्ध करता है, पतरों को तुष्टि देने के कारण उसका जन्म सफल हो जाता है।

हे खगेश्वर ! यह सुना जाता है क देव- पतरों ने मनु के पुत्र इक्ष्वाकु को कलापवन में यह गाथा सुनाई थी - क्या हमारे कुल में ऎसे कोई सन्मार्गगामी पुत्र होगें, जो गया में जाकर आदरपूर्वक हम लोगों को पण्ड प्रदान करेगें? हे ताक्ष्र्य ! इस प्रकार जो पुत्र पतरों की आमुष्मिक (परलोक संबंधी) क्रया करता है, वह सुखी होकर कौ शक के पुत्रों (कौ शक के सात पुत्रों की कथा मत्स्यपुराण, हरिवंशपुराण तथा पद्मपुराण आदि में वस्तार से दी गई है) की भाँति मुक्त हो जाता है। हे ताक्ष्र्य ! भरद्वाज के सात पुत्र पतृश्राद्ध के हेतु गोवध करके भी सात जन्मपंपराओं को भोग करके पतरों के प्रसाद से मुक्त हो गये।

कौ शक के वे सातों पुत्र प्रथम जन्म में दशार्ण देश में सात व्याधों के रूप में उत्पन्न हुए थे। इसके बाद अगले जन्म में वे कालंजर पर्वत पर मृग के रूप में उत्पन्न हुए। फर शरद्वीप में चक्रवात के रुप में उनकी उत्पत्ति हुई, अगले जन्म में मानसरोवर में हंस के रूप में उत्पन्न हुए। वे ही कुरुक्षेत्र में वेदपारगामी ब्राह्मण के रुप में उत्पन्न हुए और पतरों के प्रति भक्तिभाव रखने के कारण वे ब्राह्मणपुत्र मुक्त हो गये। इस लए पूरे प्रयत्न से मनुष्य को पतृभक्त होना चाहिए।

पतृभक्ति के कारण मनुष्य इस लोक तथा परलोक में भी सुखी होता है। हे ताक्ष्र्य ! यह सब और्ध्वदैहिक क्रया हमने तुमसे कही। यह कृत्य पुत्र की कामना को पूर्ण करने वाला, पुण्यप्रद तथा पता को मुक्ति प्रदान करने वाला है। जो कोई निर्धन मनुष्य भी इस कथा को सुनता है, वह भी पाप से मुक्त होकर पतरों के नि मत्त दिये जाने वाले दान का फल प्राप्त करता है। जो मनुष्य मेरे द्वारा कहे गये श्राद्धों एवं दानों को व धपूर्वक करता है और गरुड़ पुराण की कथा को सुनता है, उसके फल को सुनो -

पता उसको सत्पुत्र प्रदान करता है, पतामह उसे गोधन देते हैं, उसके प्र पतामह उसे बहु वध धन-संपत्ति प्रदान करते हैं और वृद्ध प्र पतामह तृप्त होकर वपुल अन्न आदि प्रदान करते हैं। इस प्रकार श्राद्ध से तृप्त होकर सभी पतर पुत्र को वांछित फल देते हैं और धर्ममार्ग से धर्मराज के प्रासाद में जाकर वे धर्मराज की सभा में आदरपूर्वक वराजमान रहते हैं।

सूत उवाच

सूतजी ने कहा - इस प्रकार श्री वष्णु जी से और्ध्वदैहिक श्राद्ध-दानादि वषयक माहात्म्य सुनकर गरुड़जी को अपार हर्ष हुआ।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "स पण्डनादि-सर्वकर्मनिरुपण" नामक तेरहवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण - चौदहवाँ अध्याय

यमलोक एवं यमसभा का वर्णन, चत्रगुप्त आदि के भवनों का परिचय, धर्मराज नगर के चार द्वार, पुण्यात्माओं का धर्म सभा में प्रवेश

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे दयानिधे ! यमलोक कतना बड़ा है? कैसा है? कसके द्वारा बनाया हुआ है? वहाँ की सभा कैसी है और उस सभा में धर्मराज कनके साथ बैठते हैं? हे दयानिधे ! जिन धर्मों का आचरण करने के कारण धा र्मक पुरुष जिन धर्म मार्गों से धर्मराज के भवन में जाते हैं, उन धर्मों तथा मार्गों के वषय में भी आप मुझे बतलाइए !

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - हे गरुड़ ! धर्मराज का जो नगर नारदादि मुनियों के लए भी अगम्य है उसके वषय में बतलाता हूँ, सुनो ! उस दिव्य धर्म नगर को महापुण्य से ही प्राप्त कया जा सकता है। द क्षण दिशा और नैऋत्य कोण के मध्य में वैवस्वत, यम का जो नगर है, वह संपूर्ण नगर वज्र का बना हुआ है, दिव्य है और असुरों तथा देवताओं से अभेद्य है।

वह पुर चौकोर, चार द्वारों वाला, ऊँची चार दीवारी से घिरा हुआ और एक हजार योजन प्रमाण वाला कहा गया है। उस पुर में चत्रगुप्त का सुन्दर मन्दिर है, जो पच्चीस योजन लम्बाई और चौड़ाई में फैला हुआ है। उसकी ऊँचाई दस योजन है और वह लोहे की अत्यन्त दिव्य चारदीवारी से घिरा है। वहाँ आवागमन के लए सैकड़ों ग लयाँ हैं और वह पताकाओं एवं ध्वजों से वभू षत है। वह वमान समूहों से घिरा है और गायन-वादन से वनादित है। चत्र बनाने में निपुण चत्रकारों के द्वारा चत्रित है तथा देवताओं के शल्पियों ने उसका निर्माण कया है।

वह उद्यानों और उपवनों से रमणीय है, नाना प्रकार के पक्षीगण उसमें कलरव करते हैं तथा वह चारों ओर से गन्धर्वों तथा अप्सराओं से घिरा है। उस सभा में अपने परम अद्भुत आसन पर स्थित चत्रगुप्त मनुष्यों की आयु की यथावत गणना करते हैं। वे मनुष्यों के पाप और पुण्य का लेखा-जोखा करने में त्रुटि नहीं करते। जिसने जो शुभ अथवा अशुभ कर्म कया

है, चत्रगुप्त की आज्ञा से उसे उन सबका भोग करना होता है। चत्रगुप्त के घर के पूरब की ओर ज्वर का एक बड़ा वशाल घर है और उनके घर के द क्षण शूल, लूता और वस्फोट के घर हैं तथा पश्चिम में कालपाश, अजीर्ण तथा अरु च के घर हैं।

चत्रगुप्त के घर के उत्तर की ओर राजरोग और पाण्डुरोग का घर है, ईशान कोण में शर:पीड़ा का और अग्निकोण में मूच्छ्र का घर है। नैऋत्यकोण में अतिसार का, वायव्य कोण में शीत और दाह का स्थान है। इस प्रकार और भी अन्यान्य व्या धयों से चत्रगुप्त का भवन घिरा हुआ है। चत्रगुप्त मनुष्यों के शुभाशुभ कर्मों को लखते हैं। चत्रगुप्त के भवन से बीस योजन आगे नगर के मध्य भाग में धर्मराज का महादिव्य भवन है। वह दिव्य रत्नमय तथा वद्युत की ज्वालामालाओं से युक्त और सूर्य के समान देदीप्यमान है।

वह दो सौ योजन चौड़ा, दो सौ योजन लंबा और पचास योजन ऊँचा है। हजार स्तंभों पर धारण कया गया है, वैदूर्यम ण से मण्डित है, स्वर्ण से अलंकृत है और अनेक प्रकार के हर्म्य (धनिकों के भवन) और प्रासादगृह से परिपूर्ण है। वह भवन शरतकालीन मेघ के समान उज्जवल, निर्मल एवं सुवर्ण के बने हुए कलशों से अत्यन्त मनोहर है, उसमें चत्र बहुरंगी रंग के स्फटिक से बनी हुई सीढ़ियाँ हैं और वह हीरे के फर्श से सुशो भत है।

रोशनदानों में मोतियों के झालर लगे हैं। वह पताकाओं और ध्वजों से वभू षत, घण्टा और नगाड़ों से निनादित तथा स्वर्ण के बने तोरणों से मण्डित है। वह अनेक आश्चर्यों से परिपूर्ण और स्वर्णनि र्मत सैकड़ों कवाड़ों से युक्त है तथा कण्टकरहित नाना वृक्ष, लताओं एवं गुल्मों अर्थात झा ड़यों से सुशो भत है। इसी प्रकार अन्य भूषणों से भी भवन सदा भू षत रहता है। वश्वकर्मा ने अपने आत्मयोग के प्रभाव से उसका निर्माण कया है।

उस धर्मराज के भवन में सौ योजन लंबी-चौड़ी दिव्य सभा है जो सूर्य के समान प्रका शत, चारों ओर से देदीप्यमान तथा इच्छानुसार स्वरुप धारण करने वाली है। वहाँ न अ धक ठंड है, न अ धक गरमी। वह मन को अत्यन्त ह र्षत करने वाली है। उसमें रहने वाले कसी को न कोई शोक होता है, न वृद्धावस्था सताती है, न भूख-प्यास लगती है और न कसी के साथ अ प्रय घटना ही होती है। देवलोक और मनुष्यलोक में जितने काम (काम्य, वषय, अ भलाषाएँ) हैं, वे सभी वहाँ उपलब्ध हैं। वहाँ सभी तरह के रसों से परिपूर्ण भक्ष्य और भोज्य साम ग्रयाँ चारों ओर प्रचुर मात्रा में है।

वहाँ सरस, शीतल तथा उष्ण जल भी उपलब्ध है। उसमें पुण्यमय शब्दादि वषय भी उपलब्ध हैं और नित्य मनोवांछित फल प्रदान करने वाले कल्पवृक्ष भी वहाँ है। हे ताक्ष्र्य ! वह सभा बादहरहित, रमणीय और कामनाओं को पूर्ण करने वाली है। वश्वकर्मा ने दीर्घ काल तक तपस्या करके उसका निर्माण कया है। उसमें कठोर तपस्या करने वाले, सुव्रती, सत्यवादी, शान्त, सन्यासी, सद्ध एवं प वत्र कर्म करके शुद्ध हुए पुरुष जाते हैं।

उन सभी की देह तेजोमय होती है। वे आभूषणों से अलंकृत तथा निर्मल वस्त्रों से युक्त होते हैं तथा अपने कये हुए पुण्य कर्मों के कारण वहाँ वभू षत होकर वराजमान रहते हैं। दस योजन वस्तीर्ण और सभी प्रकार के रत्नों से सुशो भत उस सभा में अनुपम एवं उत्तम आसन पर धर्मराज वद्यमान रहते हैं। वे सत्पुरुषों में श्रेष्ठ हैं और उनके मस्तक पर छत्र सुशो भत है, कानों में कुण्डलों से अलंकृत वे श्रीमान महामुकुट से सुशो भत हैं। वे सभी प्रकार के अलंकारों से समन्वित तथा नीलमेघ के समान कान्ति वाले हैं। हाथ में चँवर धारण की हुई अप्सराएँ उन्हें पंखा झलती रहती हैं। गन्धर्वों के समूह तथा अप्सराओं का संघ गायन, वादन और नृत्यादिद्वारा सभी ओर से उनकी सेवा करते हैं। हाथ में पाश लये हुए मृत्यु और बलवान काल तथा व चत्र आकृति वाले चत्रगुप्त एवं कृतान्त के द्वारा वे से वत हैं।

हाथों में पाश और दण्ड धारण करने वाले, उग्र स्वभाव वाले, आज्ञा के अधीन आचरण करने वाले तथा अपने समान बल वाले नाना दूतों से वे धर्मराज घिरे रहते हैं। हे खग ! अग्निष्वात्त, सोमप, ऊष्मप, स्वधावान, बहिर्षद, मूर्तिमान तथा अमूर्तिमान जो पतर हैं एवं अर्यमा आदि जो पतृगण हैं और जो अन्य मूर्तिमान पतर हैं वे सब मुनियों के साथ धर्मराज की उपासना करते हैं।

अत्रि, व सष्ठ, पुलह, दक्ष, क्रतु, अं गरा, जमदग्निनन्दन परशुराम, भृगु, पुलस्त्य, अगस्त्य, नारद - ये तथा अन्य बहुत से पतृराज (धर्मराज) के सभासद हैं, जिनके नामों और कर्मों की गणना नहीं की जा सकती। ये धर्मशास्त्रों की व्याख्या करके यथावत निर्णय देते हैं, ब्रह्मा की आज्ञा के अनुसार वे सब धर्मराज की सेवा करते हैं। उस सभा में सूर्य वंश के तथा चंद्र वंश के अन्य बहुत से धर्मात्मा राजा धर्मराज की सेवा करते हैं।

मनु, दिलीप, मान्धाता, सगर, भगीरथ, अम्बरीष, अनरण्य, मुचुकुन्द, नि म, पृथु, ययाति, नहुष, पूरु, दुष्यन्त, श व, नल, भरत, शन्तनु, पाण्डु तथा सहस्त्रार्जुन - ये यशस्वी

पुण्यात्मा राज र्ष और बहुत से प्रख्यात राजा बहुत से अश्वमेध यज्ञों का अनुष्ठान करने के फलस्वरुप धर्मराज के सभासद हुए हैं। धर्मराज की सभा में धर्म की ही प्रवृति होती है। न वहाँ पक्षपात है, न झूठ बोला जाता है और न कसी का कसी के प्रति मात्सर्यभाव रहता है। सभी सभासद शास्त्र वद और सभी धर्मपरायण हैं। वे सदा उस सभा में वैवस्वत यम की उपासना करते हैं।

हे ताक्ष्र्य ! महात्मा धर्मराज की वह सभा इस प्रकार की है। जो पापात्मा पुरुष द क्षण द्वार से वहाँ जाते हैं, वे उस सभा को नहीं देख पाते। धर्मराज के पुर में जाने के लए चार मार्ग हैं। पा पयों के गमन के लए जो मार्ग है उसके वषय में मैंने तुमसे पहले ही कह दिया।

पूर्व आदि तीन मार्गों से जो धर्मराज के मन्दिर में जाते हैं, वे सुकृती अर्थात पुण्यात्मा होते हैं और अपने पुण्यों के बल से वहाँ जाते हैं, उनके वषय में सुनो। उन मार्गों में जो पहला पूर्व मार्ग है वह सभी प्रकार की साम ग्रयों से समन्वित है और पारिजात वृक्ष की छाया से आच्छादित तथा रत्नमण्डित है। वह मार्ग वमानों के समूहों से संकीर्ण और हंसों की पंक्ति से सुशो भत है, वद्रूम के उद्यानों से व्याप्त है और अमृतमय जल से युक्त है। उस मार्ग से पुण्यात्मा ब्रह्म र्ष और अमलान्तरात्मा राज र्ष, अप्सरागण, गन्धर्व, वद्याधर, वासु क आदि महान नाग जाते हैं।

अन्य बहुत से देवताओं की आराधना करने वाले शव भक्ति निष्ठ, ग्रीष्म ऋतु में प्याऊ का दान करने वाले माघ में आग सेंकने के लए लकड़ी देने वाले, वर्षा-ऋतु में वरक्त संतों को दान-मानादि प्रदान करके उन्हें वश्राम कराने वाले, दु:खी मनुष्य को अमृतमय वचनों से आश्वस्त करने वाले और आश्रय देने वाले, सत्य और धर्म में रहने वाले, क्रोध और लोभ से रहित, पता-माता में भक्ति रखने वाले, गुरु की शुश्रुषा में लगे रहने वाले, भू म दान देने वाले, गृहदान देने वाले, गोदान देने वाले, वद्या प्रदान करने वाले, पुराण के वक्ता, श्रोता और पुराणों का परायण करने वाले - ये सभी तथा अन्य पुण्यात्मा भी पूर्वद्वार से धर्मराज के नगर में प्रवेश करते हैं।

वे सब सुशील और शुद्ध बु द्ध वाले धर्मराज की सभा में जाते हैं। धर्मराज के नगर में जाने के लए दूसरा उत्तर-मार्ग है, जो सैकड़ों वशाल रथों से तथा श व का आदि नर यानों से परिपूर्ण है। वह हरिचन्दन के वृक्षों से सुशो भत है। उस मार्ग में हंस और सारस से

व्याप्त, चक्रवाक से सुशो भत तथा अमृततुल्य जल से परिपूर्ण एक मनोरम सरोवर है। इस मार्ग से वैदिक, अभ्यागतों की पूजा करने वाले, दुर्गा और सूर्य के भक्त, पर्वों पर तीर्थ स्नान करने वाले, धर्म संग्राम में अथवा अनशन करके मृत्यु प्राप्त करने वाले, वाराणसी में, गोशाला में अथवा तीर्थ-जल में व धवत प्राण त्याग करने वाले हैं।

ब्राह्मणों अथवा अपने स्वामी के कार्य से तथा तीर्थक्षेत्र में मरने वाले और देव-प्रतिमा आदि के वध्वंस होने से बचाने के प्रयास में प्राण त्याग करने वाले हैं, योगाभ्यास से प्राण त्याग करने वाले हैं, सत्पात्रों की पूजा करने वाले हैं तथा नित्य महादान देने वाले हैं, वे व्यक्ति उत्तर द्वार से धर्मसभा में जाते हैं।

तीसरा पश्चिम का मार्ग है, जो रत्नजटित भवनों से सुशो भत है, वह अमृत सर से सदा परिपूर्ण रहने वाली बाव लयों से वराजित है। वह मार्ग ऎरावत-कुल में उत्पन्न मदोन्मत हा थयों से तथा उच्चै:श्रवा से उत्पन्न अश्वरत्नों से भरा है। इस मार्ग से आत्मतत्ववेत्ता, सत-शास्त्रों के परि चन्तक, भगवान वष्णु के अनन्य भक्त, गायत्री मन्त्र का जप करने वाले, दूसरों की हिंसा, दूसरों के द्रव्य एवं दूसरों की निन्दा से पराड्मुख रहने वाले, अपनी पत्नी में सन्तुष्ट रहने वाले, संत, अग्निहोत्री, वेदपाठी ब्राह्मण गमन करते हैं।

ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले, वानप्रस्थ आश्रम के नियमों का पालन करने वाले, तपस्वी, सन्यास धर्म का पालन करने वाले तथा श्रीचरण-सन्यासी एवं म ी के ढेले, पत्थर और स्वर्ण को समान समझने वाले, ज्ञान एवं वैराग्य से सम्पन्न, सभी प्रा णयों के हित-साधन में निरत, शव और वष्णु का व्रत करने वाले, सभी कर्मों को ब्रह्म को साम्प्रित करने वाले, देव-ऋण, पतृ-ऋण एवं ऋ ष-ऋण - इन तीनों ऋणों से वमुक्त, सदा पंचयज्ञ में निरत रहने वाले, पतरों को श्राद्ध देने वाले, समय से संध्योपासन करने वाले, नीच की संगति से अलग रहने वाले, सत्पुरुषों की संगति में निष्ठा रखने वाले - ये सभी जीव अप्सराओं के समूहों से युक्त श्रेष्ठ वमान में बैठकर अमृतपान करते हुए धर्मराज के भवन में जाते हैं और उस भवन के पश्चिम द्वार से प्र वष्ट होकर धर्मसभा में पहुँचते हैं। उन्हें आया हुआ देखकर धर्मराज बार-बार स्वागत-सम्भाषण करते हैं, उन्हें उठकर अभ्युत्थान देते हैं और उनके सम्मुख जाते हैं।

उस समय धर्मराज भगवान वष्णु के समान चतुर्भुज रूप और शंख-चक्र-गदा तथा खड्ग धारण करके पुण्य करने वाले जीवों के साथ स्नेहपूर्वक मत्रवत आचरण करते हैं। उन्हें

बैठने के लए संहासन देते हैं, नमस्कार करते हैं और पाद्य, अर्घ्य आदि प्रदान करके चन्दनादिक पूजा-साम ग्रयों से उनकी पूजा करते हैं।

यम अर्थात धर्मराज कहते हैं - हे सभासदों ! इस ज्ञानी को परम आदरपूर्वक नमस्कार कीजिए, यह हमारे मण्डल का भेदन करके ब्रह्मलोक में जाएगा। हे बु द्धमानों में श्रेष्ठ और नरक की यातना से भयभीत रहने वाले पुण्यात्माओं ! आप लोगों ने अपने पुण्य-कर्मानुष्ठान से सुख प्रदान करने वाला देवत्व प्राप्त कर लया है। दुर्लभ मनुष्य योनि प्राप्त करके जो नित्य वस्तु - धर्म का साधन नहीं करता, वह घोर नरक में गरता है, उससे बढ़कर अचेतन - अज्ञानी और कौन है? अस्थिर शरीर से और अस्थिर धन आदि से कोई एक बु द्धमान मनुष्य ही स्थिर धर्म का संचयन करता है, इस लए सभी प्रकार के प्रयत्नों को करके धर्म का संचय करना चाहिए। आप लोग सभी भोगों से परिपूर्ण पुण्यात्माओं के स्थान स्वर्ग में जाएँ।

ऎसा धर्मराज का वचन सुनकर उन्हें और उनकी सभा को प्रणाम करके वे देवताओं के द्वारा पूजित और मुनीश्वरों द्वारा स्तुत होकर वमान समूहों से परम पद को जाते हैं और कुछ परम आदर के साथ धर्मराज की सभा में ही रह जाते हैं और वहाँ एक कल्पपर्यन्त रहकर मनुष्यों के लये दुर्लभ भोगों का उपभोग करके पुण्यात्मा पुरुष शेष पुण्यों के अनुसार पुण्य-दर्शन वाले मनुष्य योनि में जन्म लेता है। इस लोक में वह महान धन संपन्न, सर्वज्ञ तथा सभी शास्त्रों में पारंगत होता है और पुन: आत्म चन्तन के द्वारा परम गति को प्राप्त करता है। हे गरुड़ ! तुमने यमलोक के वषय में पूछा था, वह सब मैंने बता दिया, इसको भक्तिपूर्वक सुनने वाला व्यक्ति भी धर्मराज की सभा में जाता है।

।।इस प्रकार गरुड़ पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "धर्मराजनिरुपण" नामक चौदहवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण - पंद्रहवाँ अध्याय

धर्मात्मा जन का दिव्यलोकों का सुख भोगकर उत्तम कुल में जन्म लेना, शरीर के व्यावहारिक तथा पारमा र्थक दो रूपों का वर्णन, अजपाजप की व ध, भगवत्प्राप्ति के साधनों में भक्ति योग की प्रधानता

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - धर्मात्मा व्यक्ति स्वर्ग के भोगों को भोगकर पुन: निर्मल कुल में उत्पन्न होता है इस लए माता के गर्भ में उसकी उत्पत्ति कैसे होती है, इस वषय में बताइए। हे करुणानिधे ! पुण्यात्मा पुरुष इस देह के वषय में जिस प्रकार वचार करता है, वह मैं सुनना चाहता हूँ, मुझे बताइए।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - हे ताक्ष्र्य ! तुमने ठीक पूछा है, मैं तुम्हें परम गोपनीय बात बताता हूँ जिसे जान लेने मात्र से मनुष्य सर्वज्ञ हो जाता है। पहले मैं तुम्हें शरीर के पारमा र्थक स्वरूप के वषय में बतलाता हूँ, जो ब्रह्माण्ड के गुणों से संपन्न है और यो गयों के द्वारा करने योग्य है। इस पारमा र्थक शरीर में जिस प्रकार योगी लोग षट्चक्र का चन्तन करते हैं, वह सब मुझसे सुनो।

पुण्यात्मा जीव प वत्र आचरण करने वाले लक्ष्मी संपन्न गृहस्थों के घर में जैसे उत्पन्न होता है और उसके पता तथा माता के वधान एवं नियम जिस प्रकार के होते हैं, उनके वषय में तुमसे कहता हूँ। स्त्रियों के ऋतुकाल में चार दिन तक उनका त्याग कर देना चाहिए अर्थात उनसे दूर रहना चाहिए। उतने समय तक उनका मुख भी नहीं देखना चाहिए, क्यों क उस समय उनके शरीर में पाप का निवास रहता है।

चौथे दिन वस्त्रों सहित स्नान करने के अनन्तर वह नारी शुद्ध होती है तथा एक सप्ताह के बाद पतरों एवं देवताओं के पूजन, अर्चन तथा व्रत करने के योग्य होती है। एक सप्ताह के मध्य में जो गर्भ धारण होता है, उससे, म लन वृत्तिवाली संतान का जन्म होता है। प्राय: ऋतुकाल के आठवें दिन गर्भाधान से पुत्र की उत्पत्ति होती है। ऋतुकाल के अनन्तर युग्म (सम) रात्रियों में गर्भाधान होने से पुत्र और अयुग्म (वषम) रात्रियों में गर्भाधान से कन्या की उत्पत्ति होती है, इस लए पूर्व की सात रात्रियों को छोड़कर युग्म की रात्रियों में ही समागम करना चाहिए।

स्त्रियों के रजोदर्शन से सामान्यत: सोलह रात्रियों तक ऋतुकाल बताया गया है। चौदहवीं रात्रि को गर्भाधान होने पर गुणवान, भाग्यवान और धा र्मक पुत्र की उत्पत्ति होती

है। प्राकृत जीवों (सामान्य मनुष्यों) को गर्भाधान के नि मत्त उस रात्रि में गर्भाधान का अवसर प्राप्त नहीं होता।

पाँचवें दिन स्त्री को मधुर भोजन करना चाहिए। कड़ुआ, खारा, तीखा तथा उष्ण भोजन से दूर रहना चाहिए तब स्त्री का वह क्षेत्र (गर्भाशय) औष ध का पात्र हो जाता है और उसमें संस्था पत बीज अमृत की तरह सुर क्षत रहता है। उस औष ध क्षेत्र में बीजवपन (गर्भाधान) करने वाला स्वामी अच्छे फल को प्राप्त करता है। ताम्बूल खाकर, पुष्प और श्रीखण्ड से युक्त होकर तथा प वत्र वस्त्र धारण करके मन में धा र्मक भावों को रखकर पुरुष को सुन्दर शय्या पर संवास करना चाहिए।

गर्भाधान के समय पुरुष की मनोवृत्ति जिस प्रकार की होती है, उसी प्रकार के स्वभाव वाला जीव गर्भ में प्र वष्ट होता है। बीज का स्वरूप धारण करके चैतन्यांश पुरुष के शुक्र में स्थित रहता है। पुरुष की काम वासना, चत्तवृत्ति तथा शुक्र जब एकत्व को प्राप्र होते हैं, तब स्त्री के गर्भाशय में पुरुष द्र वत होता है। स्त्री के गर्भाशय में शुक्र और शो णत के संयोग से पण्ड की उत्पत्ति होती है।

गर्भ में आने वाला सुकृती पुत्र पता-माता को परम आनन्द देने वाला होता है और उसके पुंसवन आदि समस्त संस्कार कये जाते हैं। पुण्यात्मा पुरुष ग्रहों की उच्च स्थिति में जन्म प्राप्त करता है। ऎसे पुत्र की उत्पत्ति के समय ब्राह्मण बहुत सारा धन प्राप्त करते हैं। वह पुत्र वद्या और वनय से संपन्न होकर पता के घर में बढ़ता है और सत्पुरुषों के संसर्ग में सभी शास्त्रों में पाण्डित्य-संपन्न हो जाता है। वह तरुणावस्था में दिव्य अंगना आदि का योग प्राप्त करता है और दानशील तथा धनी होता है। पूर्व में कये हुए तपस्या, तीर्थ सेवन आदि महापुण्यों के फल का उदय होने पर वह नित्य आत्मा और अनात्मा अर्थात परमात्मा और उससे भन्न पदार्थों - के वषय में वचार करने लगता है।

जिससे उसे यह बोध होता है क सांसारिक मनुष्य भ्रमवश रस्सी में सर्प के आरोप की भाँति वस्तु अर्थात सच्चिदानन्द ब्रह्म में अवस्तु अर्थात अज्ञानादि जगत-प्रपंच का अध्यारोप करता है तब अपवाद अर्थात मथ्याज्ञान या भ्रमज्ञान के निराकरण - से रस्सी में सर्प की भ्रान्ति के निराकरणपूर्वक रस्सी की वास्त वकता के ज्ञान के समान ब्रह्मरूपी सत्य वस्तु में अज्ञानादि जगत-प्रपंच की मथ्या प्रतीति के दूर हो जाने पर और ब्रह्मरूप सत्य वस्तु का सम्यक ज्ञान हो जाने पर वह उसी सच्चिदानन्द ब्रह्म का चन्तन करने लगता है।

सांसारिक पदार्थ रूप असत् या अनात्म पदार्थों से अन्वित या सम्बद्ध होने वाले इस ब्रह्म के संगरहित शुद्ध स्वरुप के सम्यक् बोध के लए मैं तुम्हें इसके साथ अन्वित या सम्बद्ध प्रतीत होने वाली पृ थवी आदि अनात्मवर्ग के अर्थात पंचभूतों आदि के गुणों को बतलाता हूँ। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश - ये पाँच स्थूलभूत कहे जाते हैं। यह शरीर इन्हीं पाँच भूतों से बनता है इस लए पाँचभौतिक कहलाता है।

हे खगेश्वर ! त्वचा, हड् डयाँ, ना ड़याँ, रोम तथा माँस - ये पाँच भू म के गुण हैं, यह मैंने तुम्हें बतलाया है। लार, मूत्र, वीर्य, मज्जा तथा पाँचवां रक्त - ये पाँच जल के गुण कहे गये हैं। अब तेज के गुणों को सुनो।

हे ताक्ष्र्य ! यो गयों के द्वारा सर्वत्र क्षुधा, तृषा, आलस्य, निद्रा और कान्ति - ये पाँच गुण तेज के कहे गए हैं। सकुड़ना, दौड़ना, लाँघना, फैलाना तथा चेष्टा करना - ये पाँच गुण वायु के कहे गए हैं। घोष(शब्द) छिद्र, गाम्भीर्य, श्रवण और सर्वसंश्रय(समस्त तत्त्वों को आश्रय प्रदान करना) - ये पाँच गुण तुम्हें प्रयत्नपूर्वक आकाश के जानने चाहिए।

पूर्व जन्म के कर्मों से अ धवा सत मन, बु द्ध, अहंकार और चत्त - यह अन्त:करणचतुष्टय कहा जाता है। श्रोत्र (कान), त्वक, जिह्वा, चक्षु (नेत्र), ना सका - ये ज्ञानेन्द्रियाँ हैं तथा वाक, हाथ, पैर, गुदा और उपस्थ - ये कर्मेन्द्रियाँ हैं। दिशा, वायु, सूर्य, प्रचेता और अश्विनीकुमार - ये ज्ञानेन्द्रियों के तथा वह्नि, इन्द्र, वष्णु, मत्र तथा प्रजापति - ये कर्मेन्द्रियों के देवता कहे गए हैं। देह के मध्य में इडा, पंगला, सुषुम्णा, गान्धारी, गजजिह्वा, पूषा, यशस्विनी, अलम्बुषा, कुहू और शं खनी - ये दस प्रधान ना डयाँ स्थित हैं। प्राण, अपान, समान, उदान तथा व्यान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय - ये दस वायु हैं।

हृदय में प्राणु वायु, गुदा में अपानवायु, ना भमण्डल में समानवायु, कण्ठदेश में उदानवायु और संपूर्ण शरीर में व्यानवायु व्याप्त रहती है। उद्गार (डकार या वमन) नागवायु हेतु है, जिसके द्वारा उन्मीलन होता है, वह कूर्मवायु कहा जाता है। कृकल नामक वायु क्षुधा(भूख) को उद्दीप्त करता है। देवदत्त नामक वायु जंभाई कराता है। सर्वव्यापी धनंजय वायु मृत्यु के पश्चात भी मृत शरीर को नहीं छोड़ता। ग्रास के रुप में खाया गया अन्न सभी प्रा णयों के शरीर को पुष्ट करता है।

उस पुष्टिकारक अन्न के सारांशभूत रस को व्यान नाम का वायु शरीर की सभी ना ड़यों में पहुंचाता है। उस वायु के द्वारा भुक्त आहार दो भागों में वभक्त कर दिया जाता है। गुदाभाग में प्र वष्ट होकर सम्यक रुप से अन्न और जल को पृथक-पृथक कर के अग्नि के ऊपर जल और जल के ऊपर अन्न को करके अग्नि के नीचे वह प्राण वायु स्वत: स्थित होकर उस अग्नि को धीरे-धीरे धौंकता है। उसके द्वारा धौंके जाने पर अग्नि क (मल) और रस को पृथक-पृथक कर देता है तब वह व्यानवायु उस रस को संपूर्ण शरीर में पहुंचाता है। शरीर से पृथक कया गया क (मल) शरीर के कर्ण, ना सका आदि बारह चद्रों से बाहर निकलता है। कान, आँख, ना सका, जिह्वा, नख, गुदा, गुप्तांग तथा शराएँ और समस्त शरीर में स्थित छिद्र एवं लोम - ये बारह मल के निवास स्थान हैं। जैसे सूर्य से प्रकाश प्राप्त कर के प्राणी अपने-अपने कर्मों में प्रवृत होते हैं, उसी प्रकार चैतन्यांश से सत्ता प्राप्त करके ये सभी वायु अपने-अपने कर्म में प्रवृत होते हैं।

हे खग ! अब नर देह के दो रुपों के वषय में सुनो - एक व्यवहारिक तथा दूसरा पारमा र्थक है। हे वनतासुत ! व्यवहारिक शरीर में साढ़े तीन करोड़ रोम, सात लाख केश, बीस नख तथा बत्तीस दाँत सामान्यत: बताए गए हैं। इस शरीर में एक हजार पल मांस, सौ पल रक्त, दस पल मेदा, सत्तर पल त्वचा, बारह पल मज्जा और तीन पल महारक्त होता है। पुरुष के शरीर में दो कुड़व शुक्र और स्त्री के शरीर में एक कुड़व शो णत (रज) होता है। संपूर्ण शरीर में तीन सौ साठ हड् डयाँ कही गई हैं। शरीर में स्थूल और सूक्ष्मरूप से करोड़ों ना ड़याँ हैं। इसमें पचास पल पत्त और उसका आधा अर्थात पच्चीस पल श्लेष्मा (कफ) बताया गया है।

सदा होने वाले वष्ठा और मूत्र का प्रमाण निश्चित नहीं कया गया है। व्यवहारिक शरीर इन उपर्युक्त गुणों से युक्त है। पारमा र्थक शरीर में सभी चौदहों भुवन, सभी पर्वत, सभी द्वीप एवं सभी सागर तथा सूर्य आदि ग्रह सूक्ष्म रूप से वद्यमान रहते हैं। पारमा र्थक शरीर में मूलाधार आदि छ: चक्र होते हैं। ब्रह्माण्ड में जो गुण कहे गए हैं, वे सभी इस शरीर में स्थित हैं

यो गयों के धारणास्पद उन गुणों को मैं बताता हूँ, जिनकी भावना करने से जीव वराट स्वरुप का भागी हो जाता है। पैर के तलवे में तललोक तथा पैर के ऊपर वतललोक जानना चाहिए। इसी प्रकार जानु में सुतललोक और जाँघों में महातल लोक जानना चाहिए।

सक्थि के मूल में तलातल, गुह्यस्थान में रसातल, कटिप्रदेश में पाताल - इस प्रकार पैरों के तलवों से लेकर कटिपर्यन्त सात अधोलोक कहे गए हैं।

ना भ के मध्य में भूर्लोक, ना भ के ऊपर भुवर्लोक, हृदय में स्वर्लोक, कण्ठ में महर्लोक, मुख में जनलोक, ललाट में तपोलोक और ब्रह्मरन्ध्र में सत्यलोक स्थित है। इस प्रकार चौदह लोक पारमा र्थक शरीर में स्थित हैं। त्रिकोण के मध्य में मेरु, अध:कोण में मन्दर, दाहिने कोण में कैलास, वामकोण में हिमाचल, ऊर्ध्वरेखा में निषध, दाहिनी ओर की रेखा में गन्धमादन तथा बायीं ओर की रेखा में रमणाचल नामक पर्वत स्थित है। ये सात कुलपर्वत इस पारमा र्थक शरीर में है।

अस्थि में जम्बूद्वीप, मज्जा में शाकद्वीप, मांस में कुशद्वीप, शराओं में क्रौंचद्वीप, त्वचा में शाल्मलीद्वीप, रोमसमूह में गोमेदद्वीप और नख में पुष्करद्वीप की स्थिति जाननी चाहिए। तत्पश्चात सागरों की स्थिति इस प्रकार है - हे वनतासुत ! क्षारसमुद्र मूत्र में, क्षीरसागर दूध में, सुरा का सागर श्लेष्म (कफ) में, घृत का सागर मज्जा में, रस का सागर शरीरस्थ रस में और द धसागर रक्त में स्थित समझना चाहिए। स्वादूदक सागर को लम्बिका स्थान (कण्ठ के लटकते हुए भाग अथवा उपजिह्वा या काकल) में समझना चाहिए।

नादचक्र में सूर्य, बिन्दु चक्र में चन्द्रमा, नेत्रों में मंगल और हृदय में बुध को स्थित समझना चाहिए। वष्णुस्थान अर्थात ना भ में स्थित म णपूरक चक्र में बृहस्पति तथा शुक्र में शुक्र स्थित हैं, ना भस्थान ना भ (गोलक) में शनैश्चर स्थित है और मुख में राहु स्थित कहा गया है। वायु स्थान में केतु स्थित है, इस प्रकार समस्त ग्रहमण्डल इस पारमा र्थक शरीर में वद्यमान है। इस प्रकार अपने इस शरीर में समस्त ब्रह्माण्ड का चन्तन करना चाहिए। प्रभातकाल में सदा पद्मासन में स्थित होकर षटचक्रों का चन्तन करें और यथोक्त क्रम से अजपा-जप करें।

अजपा नाम की गायत्री मुनियों को मोक्ष देने वाली है। इसके संकल्पमात्र से मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है। हे ताक्ष्र्य ! सुनो, मैं तुम्हें अजपा-जप का उत्तम क्रम बताता हूँ - जिसको सर्वदा करने से जीव जीव भाव से मुक्त हो जाता है। मूलाधार, स्वा धष्ठान, म णपूरक, अनाहत, वशुद्ध तथा आज्ञा - इन्हें षटचक्र कहा जाता है। इन चक्रों का क्रमश: मूलाधार (गुदा प्रदेश के ऊपर) - में, लंग देश में, ना भ में, हृदय में, कण्ठ में,

भौंहों के मध्य में तथा ब्रह्मरन्ध्र (सहस्त्रार) में चन्तन करना चाहिए। मूलाधार चक्र चतुर्दलाकार, अग्नि के समान और 'व' से 'स' पर्यन्त वर्णों (व, श, ष, स) का आश्रयस्थान है। स्वा धष्ठानचक्र सूर्य के समान दीप्तिमान 'ब' से लेकर 'ल ' पर्यन्त वर्णों (ब, भ, म, य, र, ल) का आश्रयस्थान और षडदलाकार है। म णपूरकचक्र रक्तिम आभावाला, दशदलाकार और 'ड' से लेकर 'फ' पर्यन्त वर्णों (ड, ढ़, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ) का आधार है। अनाहतचक्र द्वादशदलाकार, स्व र्णम आभा वाला तथा 'क' से 'ठ' पर्यन्त वर्णों (क, ख, ग, घ, ड़, च, च, ज, झ, ण, ट, ठ) से युक्त है।

वशुद्धचक्र षोडशदलाकार, सोलह स्वरों (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अ:) - से युक्त कमल और चन्द्रमा के समान कान्तिवाला होता है, आज्ञाचक्र "हं स:" इन दो अक्षरों से युक्त, द् वदलाकार और रक्तिम वर्ण का है। उसके ऊपर ब्रह्मरन्ध्र में देदीप्यमान सहस्रदलकमला चक्र हैं, जो क सदा सत्यमय, आनन्दमय, शवमय, ज्योतिर्मय और शाश्वत है। इन चक्रों में क्रमश: गणेश, ब्रह्मा, वष्णु, शव, जीवात्मा, गुरु तथा व्यापक परब्रह्म का चन्तन करना चाहिए अर्थात मूलाधार चक्र में गणेश का, स्वा धष्ठान चक्र में ब्रह्माजी का, म णपूरक चक्र में वष्णु का, अनाहत चक्र में शव का, वशुद्ध चक्र में जीवात्मा का, आज्ञा चक्र में गुरु का और सहस्रार चक्र में सर्वव्यापी परब्रह्म का चन्तन करना चाहिए। वद्वानों ने एक दिन-रात में **21,600** श्वासों की सूक्ष्मगति कही है। "हं" का उच्चारण करते हुए श्वास बाहर निकलता है और 'स:' की ध्वनि करते हुए अंदर प्र वष्ट होता है। इस प्रकार तात्विक रुप से जीव "हंस:, हंस:" इस मन्त्र से परमात्मा का निरन्तर जप करता रहता है।

जीव के द्वारा अहोरात्र में कये जाने वाले इस अजपा-जप के छ: सौ मन्त्र गणेश के लए, छ: हजार ब्रह्मा के लये, छ: हजार वष्णु के लए, छ: हजार शव के लए, एक हजार जीवात्मा के लए, एक हजार गुरु के लए और एक हजार मन्त्र जप चदात्मा के लए निवेदित करने चाहिए। श्रेष्ठ सम्प्रदायवेत्ता अरुण आदि मुनि इन षटचक्रों में ब्रह्ममयूख (करण) के रूप में स्थित गणेश आदि देवताओं का चन्तन करते हैं।

शुक्र आदि मुनि भी अपने शष्यों को इनका उपदेश देते हैं। अत: महापुरुषों की प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर वद्वानों को सदा इन चक्रों में देवताओं का ध्यान करना चाहिए। सभी चक्रों में अनन्यभाव से उन देवताओं की मानस पूजा करके गुरु के उपदेश के अनुसार अजपा गायत्री का जप करना चाहिए। इसके बाद ब्रह्मरन्ध्र में अधोमुख रूप में स्थित सहस्रदलकमल

में हंस पर वराजमान, वर तथा अभयमुद्रायुक्त दोनों हस्तकमलों की स्थिति वाले श्रीगुरु का ध्यान करना चाहिए।

गुरु चरणों से निकली हुई अमृतमयी धारा से अपने शरीर को प्रला क्षत होता हुआ सा चन्तन करे फर पंचोपचार से पूजा करके स्तुतिपूर्वक प्रणाम करना चाहिए। तदनन्तर कुण्डली का ध्यान करना चाहिए। जो षट्चक्रों में साढ़े तीन वलय में स्थित है और आरोह तथा अवरोह के रूप में षट्चक्र में संचरण करती है। तदनन्तर ब्रह्मरन्ध्र से बहिर्गत सुषुम्णा नामक धाम(प्रकाशमार्ग) का ध्यान करना चाहिए। उस मार्ग से जाने वाले पुरुष वष्णु के परम पद को प्राप्त करते हैं। इसके अनन्तर ब्रह्म मुहूर्त में मेरे द्वारा चन्तित आनन्दस्वरुप स्वप्रकाश, सनातनरूप का सदा ध्यान करना चाहिए। इस प्रकार गुरु के उपदेश से मन को निश्चल बनाएँ, अपने प्रयत्न से ऐसा नहीं करें क्यों क गुरु के उपदेश के बिना साधक का पतन हो सकता है।

इस प्रकार अन्तर्याग संपन्न करके बहिर्याग का अनुष्ठान करना चाहिए। स्नान तथा संध्या आदि कर्मों को करके वष्णु और शव की पूजा करनी चाहिए। देह का अ भमान रखने वाले अर्थात पांचभौतिक शरीर को ही अपना शरीर समझने वाले व्यक्तियों की वृत्ति अन्तर्मुखी नहीं हो सकती। इस लए उनके लए सरलतापूर्वक की जा सकने वाली मेरी भक्ति ही मोक्षसा धका हो सकती है। यद्य प तपस्या और योगसाधना आदि भी मोक्ष के मार्ग हैं तो भी इस संसारचक्र में फँसे हुए व्यक्तियों के उद्धार के लए मेरा भक्ति मार्ग ही समीचीन उपाय है। ब्रह्मा आदि देवों ने वेद और शास्त्र का पुन: पुन: वचार करके तीन बार यही सद्धांत सुनिश्चित कया है।

यज्ञादि सद्धर्म भी अन्त:करण की शु द्ध के हेतु हैं और इस शु द्ध के फलस्वरुप मेरी भक्ति प्राप्त होती है। जिसे प्राप्त करके व्यक्ति पुन: जन्म-मरणादि दु:खों से पी ड़त नहीं होता। हे ताक्ष्र्य ! जो सुकृती मनुष्य इस प्रकार का आचरण करता है, वह मेरी भक्ति के योग से सनातन मो़क्ष पद प्राप्त करता है।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में "सुकृतिजनजन्माचरणनिरुपण" नामक पंद्रहवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

मनुष्य शरीर प्राप्त करने की महिमा, धर्माचरण ही मुख्य कर्तव्य, शरीर और संसार की दु:खरूपता तथा नश्वरता, मोक्ष-धर्म-निरूपण

गरुड़ उवाच

गरुड़ जी ने कहा - हे दया सन्धो ! अज्ञान के कारण जीव जन्म-मरणरूपी संसार चक्र में पड़ता है, यह मैंने सुना। अब मैं मोक्ष के सनातन उपाय को सुनना चाहता हूँ। हे भगवन ! हे देवदेवेश ! हे शरणागतवत्सल ! सभी प्रकार के दु:खों से म लन तथा साररहित इस भयावह संसार में अनेक प्रकार के शरीर धारण करके अनन्त जीवरा शयाँ उत्पन्न होती हैं और मरती हैं, उनका कोई अन्त नहीं है। ये सभी सदा दु:ख से पी ड़त रहते हैं, इन्हें कहीं सुख नहीं प्राप्त होता। हे मोक्षेश ! हे प्रभो ! कस उपाय के करने से इन्हें इस संसृति-चक्र से मुक्ति प्राप्त हो सकती है, इसे आप मुझे बताएँ।

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - हे ताक्ष्र्य ! तुम इस वषय में मुझसे जो पूछते हो, मैं बतलाता हूँ ! सुनो - जिसके सुनने मात्र से मनुष्य संसार से मुक्त हो जाता है। वह परब्रह्म परमात्मा निष्कल (कलारहित) परब्रह्मस्वरूप, शवस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, निर्मल तथा अद्वय (द्वैतभावरहित) है। वह (परमात्मा) स्वत: प्रकाश है, अनादि, अनन्त, नि र्वकार, परात्पर, निर्गुण और सत्- चत्-आनन्दस्वरूप है। यह जीव उसी का अंश है। जैसे अग्नि से बहुत से स्फु लंग अर्थात चंगारियाँ निकलती हैं उसी प्रकार अनादिकालीन अ वद्या से युक्त होने के कारण अनादि काल से कये जाने वाले कर्मों के परिणामस्वरुप देहादि उपा ध को धारण करके जीव भगवान से पृथक हो गए हैं। वे जीव प्रत्येक जन्म में पुण्य और पापरूप सुख-दु:ख प्रदान करने वाले कर्मों से नियंत्रित होकर तत्तत् जाति के योग से देह(शरीर), आयु और कर्मानुरोधी भोग प्राप्त करते हैं।

हे खग ! इसके पश्चात भी पुन: वे अत्यन्त सूक्ष्म लंग शरीर प्राप्त करते हैं और यह क्रम मोक्षपर्यन्त स्थित रहता है। ये जीव कभी स्थावर (वृक्ष-लतादि जड़) योनियों में, पुन: कृ मयोनियों में तदनन्तर जलचर, पक्षी और पशुयोनियों को प्राप्त करते हुए मनुष्ययोनि प्राप्त करते हैं फर धा र्मक मनुष्य के रूप में और पुन: देवता तथा देवयोनि के पश्चात

क्रमश: मोक्ष प्राप्त करने के अ धकारी होते हैं। उद्भिज्ज, स्वेदज और पण्डज (जरायुज) - इन चार प्रकार के शरीरों को सहस्त्रों बार धारण करके उनसे मुक्त होकर सुकृतवश (पुण्यप्रभाव से) जीव मनुष्य-शरीर प्राप्त करता है और यदि वह ज्ञानी हो जाए तो मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

जीवों की चौरासी लाख योनियों में मनुष्य योनि के अतिरिक्त अन्य कसी भी योनि में तत्वज्ञान प्राप्त नहीं होता। पूर्वोक्त व भन्न योनियों में हजारों-हजार करोड़ों बार जन्म लेने के अनन्तर उपार्जित पुण्यपुंज के कारण कदा चत मनुष्य-योनि प्राप्त होती है। मोक्ष प्राप्ति के लए सोपानभूत यह दुर्लभ मनुष्य-शरीर प्राप्त करके इस संसृति चक्र से जो अपने को मुक्त नहीं कर लेता, उससे अ धक पापी और कौन होगा !

उत्तम मनुष्य शरीर में जन्म प्राप्त करके और समस्त सौष्ठव संपन्न अ वकल इन्द्रियों को प्राप्त करके भी जो व्यक्ति अपने हित को नहीं जानता वह ब्रह्मघातक होता है। शरीर के बिना कोई भी जीव पुरुषार्थ नहीं कर सकता इस लए शरीर और धन की रक्षा करता हुआ इन दोनों से पुण्योपार्जन करना चाहिए। मनुष्य को सर्वदा अपने शरीर की रक्षा करनी चाहिए क्यों क शरीर सभी पुरुषार्थों का एकमात्र साधन है इस लए उसकी रक्षा का उपाय करना चाहिए। जीवन धारण करने पर ही व्यक्ति अपने कल्याण को देख सकता है।

गाँव, क्षेत्र, धन, घर और शुभाशुभ कर्म पुन:-पुन: प्राप्त हो सकते हैं कंतु मनुष्य शरीर पुन:-पुन: प्राप्त नहीं हो सकता। इस लए बु द्धमान व्यक्ति सदा शरीर की रक्षा का उपाय करते हैं। कुष्ठ आदि रोगी भी अपने शरीर को त्यागने की इच्छा नहीं करते। शरीर की रक्षा धर्माचरण के उद्देश्य से और धर्माचरण ज्ञानप्राप्ति के उद्देश्य से ज्ञान, ध्यान एवं योग की स द्ध के लए और फर ध्यानयोग से मनुष्य अ वलम्ब मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

यदि मनुष्य स्वयं ही अपने आत्मा का अहित से निवारण नहीं कर लेता तो आत्मा का दूसरा कौन हितैषी होगा जो आत्मा को तारेगा। जो जीव मनुष्य के शरीर में रहकर इसी जन्म में नरकरूपी व्या ध की च कत्सा नहीं कर लेता, वह परलोक में जाने पर जहाँ औषध नहीं प्राप्त है, नरक व्या ध से पी ड़त होने पर फर क्या कर सकेगा? वृद्धावस्था बाघिन के समान सामने खड़ी है, फूटे हुए घड़े के गरने वाले जल की भाँति प्रतिक्षण आयु समाप्त होती जा रही है, रोग शत्रु की भाँति प्रहार कर रहे हैं, अत: श्रेय:प्राप्ति के लए जीव को अभ्यास करना चाहिए।

जब तक दु:ख प्राप्त नहीं होता, जब तक आपत्तियाँ घेर नहीं लेती और जब तक इन्द्रियों में वैकल्य (श थलता) नहीं आ जाता, तब तक श्रेय:प्राप्ति के लए जीव को प्रयास करते रहना चाहिए। जब तक यह शरीर है तभी तक तत्त्वज्ञान का अभ्यास करना चाहिए। भवन में आग लग जाने पर कौन ऎसा दुर्बु द्ध मनुष्य है जो कुँआ खोदना प्रारंभ करता है। बहु वध सांसारिक कार्यप्रपंचों में व्यस्त रहने के कारण काल का ज्ञान नहीं होता। यह क्लेश की बात है क मनुष्य अपने सुख-दु:ख और हित की बात को नहीं समझता।

संसार में जीवों को उत्पन्न होते हुए, रोगादि से दु:खी होते हुए, मृत्यु प्राप्त करते हुए और आपत्तिग्रस्त तथा दु:खी देखकर भी सांसारिक मनुष्य मोहरूपी मदिरा को पीकर कभी बी भयभीत नहीं होता। भौतिक सम्पत्ति स्वप्न के समान नश्वर-क्षणभंगुर है, यौवन भी पुष्प के समान मुरझा जाने वाला है, आयु बादलों में चमकने वाली बिजली के समान चंचल है - यह सब जानते हुए भी मनुष्य को कैसे धैर्य हो सकता है।

एक तो मनुष्य की सौ वर्ष की आयु ही बहुत थोड़ी है, उसमें भी निद्रा और आलस्य के वशीभूत होकर उसका आधा भाग बीत जाता है और जो शेष है वह भी बाल्यावस्था, रोग और जरा में होने वाले दु:ख से चला जाता है और जो थोड़ा बचा, वह भी निष्फल ही बीत जाता है। प्रारंभ करने वाले कार्य के वषय में जो उद्योग नहीं करता और जहाँ ब्रह्म चन्तन आदि में जागरुक रहना चाहिए वहाँ वह सोता रहता है। इसके वपरीत जहाँ सदा-सदा भय वद्यमान है (उस संसार में), वहाँ वह वश्वस्त है, ऎसा जो मनुष्य है, वह अभागा क्यों नहीं मारा जाएगा। जल में उठने वाले फेन के समान अतीव क्षणभंगुर देह को प्राप्त करके जीवात्मा उसमें स्थित रहता है।

यह शरीर ही उसको प्रयसंवास के रूप में प्रतीत होता है कंतु इस अनित्य शरीर में जीवात्मा निर्भय होकर कैसे रह सकता है? जो अहित करने वाले वषय भोगों में ही हितबु द्ध रखता है तथा अनिश्चित (पुत्र-कलत्र-देह-गेहादि) को स्थाई समझता है और भौतिक धन-संपत्ति आदि अनर्थकारी वस्तुओं में जो अर्थबु द्ध रखता है, वह अपने परमार्थ को नहीं जानता।

जो "यह जगत कसी का नहीं हुआ" - ऎसा देखते हुए भी गर रहा है और आत्मज्ञान वषयक वचनों को सुनते हुए भी जिसे बोध नहीं होता, पढ़ करके भी उसका अर्थ

नहीं समझता - ऎसा इस लए होता है क जीव भगवान की माया से मोहित है। मृत्यु, रोग और जगरूपी ग्राहों के द्वारा गंभीर कालसागर में डूबते हुए इस जगत को कोई भी नहीं जान पाता। प्रतिक्षण क्षीण होते हुए भी इस काल की सूक्ष्म गति को जीव वैसे ही नहीं जान पाता जैसे कच्चे घड़े में स्थित जल के वग लत होने का ज्ञान नहीं हो पाता। कदा चत वायु का बाँधना संभव हो सकता है, आकाश को खण्ड-खण्ड करने की तरंगों के गुम्फन की कल्पना भी संभव हो सकती है परंतु आयु के शाश्वत होने की आस्था कथम प संभव नहीं हो सकती।

जिस काल के द्वारा जल जाती है, मेरु पर्वत भी चूर-चूर हो जाता है, सागर का जल भी सूख जाता है, उस काल से मनुष्य-शरीर की रक्षा की क्या कथा? मेरा पुत्र, मेरी पत्नी, मेरा धन, मेरे बान्धव - इस प्रकार मैं-मैं कहते हुए मनुष्य रूपी बकरे को हठपूर्वक कालरूपी भे ड़िया मार डालता है। यह मैंने कर लया, यह करना शेष है, यह दूसरा कार्य भी अभी कुछ करना बाकी है - इस प्रकार की इच्छा से युक्त मनुष्य को यमराज अपने वश में कर लेते हैं।

कल कए जाने वाले कार्य को आज, अपराह्ण में कए जाने वाले कार्य को पूर्वाह्ण में ही कर लेना चाहिए क्यों क मनुष्य ने अपना कार्य कर लया है अथवा नहीं - इसकी प्रतीक्षा मृत्यु नहीं करती। वृद्धावस्था जिसको रास्ता दिखाने वाली है, अत्युग्र रोग ही जिसके सैनिक है, ऎसे म्रत्युरूपी शत्रु के तुम सम्मुख स्थित हो फर उस प्रबल शत्रु से रक्षा करने वाले परमात्मा की ओर क्यों नहीं देखते अर्थात उनकी ओर उन्मुख क्यों नहीं होते?

तृष्णारूपी शूल में बिंधे हुए और वषयवासनारूपी घीसे सींचे हुए तथा राग-द्वेषरूपी अग्नि में पके हुए मनुष्य को मृत्यु खा जाती है। यह जगत ऎसा है क इसमें मृत्यु बालकों, युवकों, वृद्धों और गर्भस्थ जीवों - सभी को ग्रस लेती है। जब जीव अपनी देह को भी यहीं छोड़कर यमलोक को चला जाता है तो फर स्त्री-माता- पता और पुत्रादि से कस प्रयोजन से संबंध स्था पत कया जाए।

यह संसार दु:ख का मूल कारण है इस लए इस संसार से जिसका संबंध है, वही दु:खी है और जिसने इस जगत का त्याग कया, वही मनुष्य सुखी है। दूसरा कोई भी, कहीं भी सुखी नहीं है। यह संसार सभी प्रकार के दु:खों का उत्पत्ति स्थान है, सभी आपत्तियों का घर है और सभी पापों का आश्रय-स्थान है इस लए ऎसे संसार को क्षणमात्र में त्याग देना

चाहिए। लौह एवं लकड़ी के पाशों से बँधा हुआ मनुष्य मुक्त हो सकता है कंतु पुत्र और पत्नीरुपी पाशों से बँधा हुआ मनुष्य कभी भी मुक्त नहीं हो सकता।

मनुष्य अपने मन को प्रय लगने वाले इस जगत में जितने पदार्थों से संबंध बनाता जाता है, उतनी ही अ धक शोक की कीले उसके ह्रदय में गड़ती जाती हैं। यह बड़े खेद की बात है क मनुष्य की देह में स्थित शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्ध, वषयों का आहार करने वाले इन्द्रियरूपी चोरों ने इस लोक के समस्त धन को अपहृत करके इसे नष्ट कर दिया है अर्थात परलोक के लए हितकारी धर्मरूपी जो धन है, उसका इन्द्रियों ने हरण कर लया है। माँसलोभी मत्स्य जैसे बंसी में लगे हुए लोहे के अंकुश को नहीं जान पाता, उसी प्रकार वषयों से प्राप्त होने वाले सुख के लोभ से जीव यमयातना की परवाह नहीं करता।

हे गरुड़ ! जो अपने हित औत अहित को नहीं जानते, सदा कुमार्ग पर चलने वाले हैं और मात्र पेट भरने में ही जिनका सारा अध्यवसाय रहता है, वे मनुष्य नरकगामी हैं। निद्रा, मैथुन और आहार आदि की स्वाभा वक प्रवृति सभी प्रा णयों में समान रूप से वद्यमान रहती है। उनमें जो वास्त वक हित-अहित को जानने वाला ज्ञानवान है, वह मनुष्य कहा जाता है और उस ज्ञान से जो शून्य है, वह पशु कहलाता है।

मूर्ख मनुष्य प्रात:काल मल-मूत्रों के वेग से, मध्य दिन में क्षुधा और तृषा से तथा रात्रि में काम क्रीड़ा और निद्रा से बा धत रहते हैं। हाय ! यह खेद की बात है क अज्ञान से मोहित होकर सभी जीव अपनी देह, धन, पत्नी आदि में आसक्त होकर बार-बार पैदा होते हैं और मर जाते हैं इस लए सदा आसक्ति का त्याग कर देना चाहिए और यदि उसका सर्वथा त्याग न हो सके तो महापुरुषों के साथ संबंध बनाना चाहिए क्यों क संत पुरुष संसारासक्तिरूपी रोग के भेषज हैं।

सत्संग और ववेक - ये दोनों ही व्यक्ति के दो निर्मल नेत्र हैं। जिस व्यक्ति के पास ये नहीं है, वह अंधा है, अंधा मनुष्य कुमार्गगामी क्यों नहीं होगा? अपने-अपने वर्ण और आश्रम के लए शास्त्रबो धत आचारों का पालन करने में संलग्न रहने वाले सभी मनुष्य यदि परम धर्म को नहीं जानते तो वे दम्भाचारी व्यर्थ में नष्ट हो जाते हैं।

कुछ लोग अनेक प्रकार की क्रयाओं को करने का प्रयत्न करते हैं और कुछ अन्य व्रत, उपवास आदि में संलग्न रहते हैं, अज्ञान से आवृत आत्मा वाले कुछ लोग ढ़ोंगी बनकर

वचरण करते हैं। कर्मकाण्ड में आस्था रखने वाले मनुष्य शास्त्रबो धत नाममात्र की फलश्रुतियों से संतुष्ट हो करके मन्त्रोच्चारण ओर होमादि कृत्यों से तथा यज्ञ से वस्तृत वधानों से भ्रान्त रहते हैं, उन्हीं में उलझे रहते हैं। मेरी माया से वमोहित होकर शरीर को सुखाने वाले मूर्ख लोग एकभुक्त, उपवास आदि व्रतों का आचरण करके परोक्ष (परमगति) को प्राप्त करना चाहते हैं।

शरीर को दण्ड देने मात्र से क्या अ ववेकी पुरुषों को मुक्ति प्राप्त हो सकती है? वल्मीक (साँप की बाँबी) को ताड़न करने मात्र से क्या कहीं भी महासर्प की मृत्यु होती है? बड़ी लंबी जटाओं के भार को ढोने वाले और मृगचर्म आदि से युक्त दाम्भिक पुरुष वेष धारण करके ज्ञानी की भाँति ही लोक में भ्रमण करते हैं और लोगों को भी भ्र मत करते हैं।

सांसारिक सुख में आसक्त जो व्यक्ति "मैं ब्रह्मज्ञानी हूँ" ऐसा कहता है वह कर्ममार्ग तथा ब्रह्मज्ञानमार्ग - दोनों मार्गों से भ्रष्ट हो जाता है, उसे चाण्डाल की भाँति छोड़ देना चाहिए। संसार में, घर में और अरण्य में लज्जा त्यागकर समान रुप से नग्न होकर गर्दभ आदि पशु भी वचरण करते हैं तो क्या इस आचरण से वे संसार से वरक्त हो जाते हैं? यदि म ी और भस्म के धारण करने मात्र से मनुष्य मुक्त हो जाए तो म ी और भस्म में शयन करने वाला वह कुत्ता भी क्या मुक्ति प्राप्त कर लेगा? घास-पात और जल का आहार करने वाले तथा निरन्तर जंगल में निवास करने वाले श्रृंगाल, चूहे तथा मृग आदि पशु भी क्या तपस्वी - योगी हो जाते हैं अर्थात अन्न छोड़ देने, ग्राम या नगर में निवास छोड़कर वन में रहने मात्र से कोई सन्यासी नहीं हो जाता। मण्डूक अर्थात मेढ़क और मत्स्य आदि जलचर जीव जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त गंगा आदि नदियों में निवास करते हैं तो क्या वे योगी हो जाते हैं?

कबूतर शलवृत्ति (कंकड़) का आहार करने वाले हैं तथा चातक कभी भी भू म पर स्थित जल को नहीं पीते तो क्या इससे वे व्रती हो जाते हैं? इस लए हे खगेश्वर ! पूर्वोक्त संपूर्ण कर्मानुष्ठान केवल लोकरंजनमात्र के लए हैं। मोक्ष का अकरण तो साक्षात तत्त्वज्ञान ही है। हे खग ! षड्दर्शनरूपी महाकूप में पड़े हुए मनुष्यरूपी पशु परमार्थ को नहीं जानते हैं क्यों क वे पशुपाश से नियंत्रित रहते हैं। वेद और शास्त्ररूपी घोर समुद्र में इधर-उधर ले जाए जाते हुए कुता र्कक व्यक्ति षडू र्मयों (क्षुधा- पपासा, शोक-मोह और जन्म-मृत्यु को "षडू र्म" कहा जाता है) से ग्रस्त होकर स्थित रहते हैं।

वेद-शास्त्र और पुराणों को जानने वाला भी जो मनुष्य परमार्थ को नहीं जानता, वडंबनाग्रस्त उसका पूर्वोक्त संपूर्ण ज्ञान कौए के काँव-काँव करने जैसा है। परम तत्व से पराङ्मुख जीव यह ज्ञान है, यह ज्ञेय है, इसी चन्ता से व्याकुल होकर रात-दिन शास्त्रों का अध्ययन करते हैं\ काव्यो चत अलंकारों से सुशो भत गद्य वाक्य-रचना या छन्दोबद्ध क वता की रचान करने पर भी वषयोपभोग के प्रति लालायित इन्द्रियों वाले तत्त्वज्ञानरहित मूढ व्यक्ति नाना चन्ताओं के कारण दु:खी रहते हैं। परम तत्व की प्राप्ति तो अन्य प्रकार से होती है, कंतु लोग अन्य प्रकार के उपाय करके क्लेश प्राप्त करते हैं। शास्त्र का भाव तो कुछ और होता है परंतु वे उसकी व्याख्या कुछ दूसरे प्रकार से करते हैं। कुछ अहंकारी व्यक्ति गुरूपदेश आदि को प्राप्त न करके भी उन्मनीभाव के वषय में कहते हैं, पर वे स्वयं उसका अनुभव नहीं करते।

बहुत से लोग वेद और शास्त्र का अध्ययन तो करते हैं और परस्पर एक-दूसरे को बोध भी कराते हैं, तात्पर्य समझाते हैं, पर वे परम तत्त्वों के वषय में उसी प्रकार कुछ नहीं जानते जिस प्रकार कलछी पाकरस को नहीं जानती। पुष्प को धारण तो सर करता है कंतु उस पुष्प की गन्ध को ना सका ही जानती है, ठीक इसी प्रकार वेद और शास्त्र का अध्ययन में उसी प्रकार भटकता फरता रह जाता है, जैसे कोई मूर्ख ग्वाला अपनी कोख में बकरे को पकड़े रखने पर भी उसको खोजने के लए कुएँ में देखता है। संसार के मोह का नाश करने के लए शास्त्र के शब्दों के अअर्थ को जानना मात्र पर्याप्त नहीं है। दीपक की बात से कभी अंधकार की निवृत्ति नहीं हो सकती। बु द्धहीन मनुष्य का पढ़ना अंधे व्यक्ति के दर्पण देखने के समान व्यर्थ है। अत: बु द्धमान व्यक्ति को ही शास्त्रीय तत्त्वज्ञान का लक्षण हो सकता है अर्थात बु द्धमान को ही तत्त्वज्ञान ल क्षत हो सकता है।

जो यह ज्ञान यहाँ है, इसे जानना चाहिए - इस प्रकार बु द्ध करके शास्त्र में प्रतिपाद्य सब कुछ सुनना चाहता है, वह हजार दिव्य वर्षों की आयु प्राप्त करके भी शास्त्रों का अन्त पप्राप्त नहीं कर सकता। अनेक शास्त्र हैं, आयु अत्यल्प है, जिसमें करोड़ों वघ्न हैं इस लए जैसे हंस जल के मध्य से दूध को ग्रहण कर लेता है, उसी प्रकार बु द्धमान व्यक्ति को भी शास्त्र के सारतत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। वेदशास्त्रों का अभ्यास कर वहाँ से तत्त्वज्ञान प्राप्त करके बु द्धमान मनुष्य को चाहिए क जैसे धान चाहने वाला व्यक्ति धान ग्रहण करके पलाल अर्थात पुआल को छोड़ देता हैम उसी तरह उसे भी अन्य सभी शास्त्रों को छोड़ देना चाहिए।

जैसे अमृत से तृप्त व्यक्ति के लए भोजन की कोई आवश्यकता नहीं होती, उसी प्रकार हे ताक्ष्र्य ! तत्त्वज्ञ को शास्त्र से कोई प्रयोजन नहीं होता। हे वनतात्मज ! न वेदाध्ययन से मुक्ति प्राप्त होती है और न शास्त्रों के अध्ययन से ही। मोक्ष की प्राप्ति ज्ञान से ही होती है, कसी दूसरे उपाय से नहीं।

जिस प्रकार मुक्ति के लए न तो आश्रम धर्म का अनुष्ठान कारण है, न दर्शनों का अध्ययन कारण है, उसी प्रकार श्रौत-स्मार्त कर्म भी कारण नहीं है। मात्र ज्ञान ही मोक्ष का उपाय है। गुरु का वचन ही मोक्ष देने वाला है, अन्य सब वद्याएँ वडम्बना मात्र है। लकड़ी के हजारों भारों की अपेक्षा एक संजीवनी ही श्रेष्ठ है। कर्मकाण्ड और वेद-शास्त्रादि के अध्ययन रूपी परिश्रम से रहित केवल गुरु मुख से प्राप्त अद्वैतज्ञान ही कल्याणकारी कहा गया है, अन्य करोड़ों शास्त्रों को पढ़ने से कोई लाभ नहीं। वेदादि आगम शास्त्रों का अध्ययन तथा ववेक - इन दो साधनों से ज्ञान की प्राप्ति होती है। आगम से शब्द ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त होता है और ववेक से परब्रह्म का ज्ञान प्राप्त होता है। कई वद्वान अद्वैत को वास्त वक परमतत्त्व स्वीकार करते हैं और कुछ अन्य वद्वज्जन द्वैततत्त्व की ही प्रतिष्ठा चाहते हैं कंतु द्वैत और अद्वैत से पृथक सभी के लये समान रूप से स्वीकार्य परम तत्त्व को कोई नहीं जानता। "न मम" (मेरा नहीं है) और "मम" (मेरा है) - ये दो पद (भावनाएँ) ही बन्धन और मोक्ष के कारण हैं। मम - बु द्ध करने से प्राणी बन्धन को प्राप्त होता है और 'मेरा नहीं है' इस प्रकार की भावना करने से मुक्त होता है।

कर्म वही है, जो बन्धन का हेतु नहीं होता तथा वद्या वही है, जो मोक्ष प्रदान करा दे और इससे अतिरिक्त कर्म केवल श्रममात्र के हेतु हैं जो शरीर के लए क्लेशप्रद हैं तथा अन्य प्रकार की वद्या शल्पचातुर्यमात्र है। जब तक कर्म कये जाते हैं, जब तक संसार में आसक्ति रहती है, जब तक इन्द्रियों का चांचल्य बना रहता है, तब तक तत्त्वज्ञान की बात ही कहाँ हो सकती है? जब तक देहा भमान (देह को अपना स्वरुप मानना) है, जब तक ममता रहती है, जब तक प्रयत्नों का वेग रहता है, जब तक संकल्प की कल्पना होती रहती है, जब तक मन स्थिर नहीं हो जाता, जब तक शास्त्र का चन्तन नहीं कया जाता तथा जब तक गुरु की कृपा नहीं प्राप्त होती, तब तक तत्त्वज्ञान की चर्चा ही कहाँ होती है?

तप, व्रत, तीर्थ, जप, होम तथा पूजा आदि सत्कर्मों का अनुष्ठान तथा वेद, शास्त्र और आगम की कथा तभी तक उपयोगी है, जब तक जीव को तत्त्वज्ञान प्राप्त नहीं हो जाता।

इस लए हे ताक्र्य ! यदि अपने मोक्ष की इच्छा हो तो सर्वदा संपूर्ण प्रयत्नों का सभी अवस्थाओं में निरन्तर अनुष्ठान करके तत्त्वज्ञान की प्राप्ति में संलग्न रहना चाहिए।

जो प्राणी (आ धभौतिक, आ धदै वक, आध्यात्मिक) ताप त्रय से सदा संतप्त रहता है, उसे मोक्ष वृक्ष की छाया का आश्रयण करना चाहिए। जिस मोक्षवृक्ष का पुष्प धर्म और ज्ञानस्वरुप है तथा फल स्वर्ग एवं मोक्ष है। इस लए श्रीगुरु मुख से आत्मतत्त्व वषयक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। ज्ञान हो जाने पर प्राणी इस घोर संसार बंधन से सुखपूर्वक मुक्त हो जाता अहि। हे ताक्र्य ! मैं तत्त्वज्ञानी पुरुष के द्वारा कए जाने वाले अन्तिम कृत्य के वषय में तुम्हें बताता हूँ, सुनो ! जिस उपाय को करके जीव को ब्रह्मनिर्वाणसंज्ञक मोक्ष की प्राप्ति होती है। अन्तकाल के आ जाने पर पुरुष भय छोड़कर अनासक्तिरूपी शस्त्र से देह-गेहादि वषयक ममत्व को काट डाले। वह धीर पुरुष घर से निकलकर प वत्र तीर्थ के जल में स्नान करके प वत्र और एकान्त देश में व धवत आसन लगाकर बैठ जाए और शुद्ध परम त्रिवृत ब्रह्माक्षर अर्थात ओंकार का मन से अभ्यास करे तथा ब्रह्मबीज स्वरुप ओंकार का निरन्तर स्मरण करके श्वास को जीतकर मन को नियंत्रित करे।

बु द्ध रूपी सारथी की सहायता से मन रूपी लगाम के द्वारा इन्द्रियों को वषयों से निगृहीत कर ले और कर्मों के द्वारा आ क्षप्त मन को बु द्ध की सहायता से शुभ अर्थ में अर्थात परब्रह्म के चन्तन में लगा दे। मैं ब्रह्म हूँ, मैं परम धाम हूँ और परम पदरूपी ब्रह्म मैं हूँ - ऐसी समीक्षा करके अपनी आत्मा को निष्कल परमात्मा में लगा दे और 'ओम्' इस एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ तथा मेरा स्मरण करता हुआ जो मनुष्य देह-त्याग करता है, वह इस संसार से तर जाता है और परम गति प्राप्त करता है। मान और मोह से रहित तथा आसक्ति से उत्पन्न होने वाले दोषों को जीत लेने वाले, सुख-दु:खादि द्वंद्वों से मुक्त ज्ञानी पुरुष उस शाश्वत अ वनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं। जो व्यक्ति राग और द्वेष रूपी मलों का अपहरण करने वाले ज्ञानरूप जलाशय और सत्यस्वरुप जलवाले मानसतीर्थ में स्नान करता है, वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

जो प्रौढ़ वैराग्य को धारण करके अन्य भावों का परित्याग कर केवल मद् वषयक भावना के द्वारा मेरा भजन करता है, ऐसा पूर्ण दृष्टि रखने वाला अमलान्तरात्मा संत ही मोक्ष को प्राप्त होता है। "तीर्थ में मृत्यु हो जाय" - इस उत्कण्ठा से उत्सुक होकर जो अपने घर का परित्याग करके तीर्थ में निवास करता है और मुक्तिक्षेत्र में मरता है, वही मोक्ष प्राप्त करता है। अयोध्या, मथुरा, कनखल-हरिद्वार, काशी, कांची, अवन्तिका और

द्वारावतीपुरी - ये सात पुरियाँ मोक्ष देने वाली हैं। हे ताक्ष्र्य ! मैंने सनातन मोक्ष धर्म को तुम्हें बता दिया, ज्ञान और वैराग्य के सहित इसे सुनकर पुरुष मोक्ष प्राप्त करता है। तत्त्वज्ञ पुरुष मोक्ष प्राप्त करते हैं, धा र्मक पुरुष स्वर्ग को प्राप्त होते हैं। पा पयों की दुर्गति होती है और पशु-पक्षी आदि पुन:-पुन: जन्म-मरण रूपी संसार में भ्रमण करते हैं। इस प्रकार सभी शास्त्रों का सारोद्धार मैंने सोलह अध्यायों में कह दिया, अब और क्या सुनना चाहते हो?

सूत उवाच

सूत जी ने कहा - हे राजन ! गरुड़ जी ने भगवान के मुख से ऐसा वचन सुनकर उन्हें बार-बार प्रणाम करके अंज ल बाँधकर इस प्रकार कहा -

गरुड़ जी ने कहा - हे देवा धदेव भगवन ! हे नाथ ! हे प्रभो ! अपने अमृतमय वचनों को सुनाकर आपने मुझे भवसागर से तार दिया है। अब मेरा संदेह समाप्त हो गया और मैं कृतार्थ हो गया हूँ, इसमें संशय नहीं - ऐसा कहकर गरुड़ जी ने मौन होकर भगवद्ध्यानपरायण हो गए। स्मरण करने से जो दुर्गति का हरण कर लेते हैं, पूजन और यज्ञ के द्वारा जो सद्गति प्रदान करते हैं और अपनी परम भक्ति के द्वारा जो मुक्ति प्रदान करते हैं, वे हति मेरी रक्षा करें।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के अन्तर्गत सारोद्धार में भगवान वष्णु ओर गरुड़ के संवाद में "मोक्षधर्मनिरूपण" नामक सोलहवाँ अध्याय पूरा हुआ।।

गरुड़ पुराण-श्रवण (सुनने का) का फल

श्रीभगवानुवाच

श्रीभगवान ने कहा - हे ताक्ष्र्य ! इस प्रकार मैंने औध्र्वदैहिक कृत्यों के वषय में सब कुछ कह दिया। मरणाशौच में दस दिन के अंदर इसे सुनकर व्यक्ति सभी पापों से मुक्त हो जाता है। यह परलोक संबंदधी कर्म पतरों को मुक्ति प्रदान करने वाला है और परलोक में तथा इस लोक में भी पुत्र को वांछित फल देकर सुख प्रदान करने वाला है। जो नास्तिक अधम व्यक्ति प्रेत का यह औध्र्वदैहिक कर्म नहीं करते, उनका जल सुरा के समान अपेय है, इसमें कोई संशय नहीं। देवता और पतृगण उसके घर की ओर नहीं देखते अर्थात दोनों की ही कृपादृष्टि उन पर नहीं होती और उनके पतरों के कोप से पुत्र-पुत्रादि की भी दुर्गति होती

है। प्रेत क्रया के बिना ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और इतरजनों को भी चाण्डाल के समान जानना चाहिए।

जो इस पुण्यप्रद प्रेतकल्प को सुनता और सुनाता है - वे दोनों ही पाप से मुक्त होकर दुर्गति को नहीं प्राप्त होते हैं। माता और पता के मरण में जो पुत्र गरुण पुराण सुनता है, उसके माता- पता की मुक्ति होती है और पुत्र को संतति की प्राप्ति होती है। जिस पुत्र ने माता- पता की मृत्यु होने के अनन्तर गरुड़ पुराण का श्रवण नहीं कया, गया श्राद्ध नहीं कया, वृषोत्सर्ग नहीं कया, मा सक तथा वा र्षक श्राद्ध नहीं कया, वह कैसे पुत्र कहा जा सकता है और ऋणत्रय से उसे कैसे मुक्ति प्राप्त हो सकती है और वह पुत्र माता- पता को तारने में कैसे समर्थ हो सकता है? इस लए सभी प्रकार के प्रयत्नों को करके धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष रूप पुरुषार्थचतुष्टय को देने वाले तथा सर्व वध दु:ख का वनाश करने वाले गरुड़ पुराण को अवश्य सुनना चाहिए।

यह गरुड़ पुराण पुण्यप्रद, प वत्र तथा पापनाशक है, सुनने वालों की कामनाओं को पूर्ण करने वाला है, अत: सदा ही इसे सुनना चाहिए। इस पुराण को सुनकर ब्राह्मण वद्या प्राप्त करता है, क्षत्रिय पृ थवी प्राप्त करता है, वैश्य धनाढ्य होता है और शूद्र पातकों से शुद्ध हो जाता है।

इस गरुड़पुराण को सुनकर सुनाने वाले आचार्य को पूर्वोक्त शय्याददानादि संपूर्ण दान देने चाहिए अन्यथा इसका श्रवण फलदायक नहीं होता। पहले पुराण की पूजा करनी चाहिए तदनन्तर वस्त्र, अलंकार, गोदान और द क्षणा आदि देकर आदरपूर्वक वाचक की पूजा करनी चाहिए। प्रचुर पुण्यफल की प्राप्ति के लए प्रभूत अन्न, स्वर्ण और भू म दान के द्वारा श्रद्धा भक्तिपूर्वक वाचक की पूजा करनी चाहिए। वाचक की पूजा से ही मेरी पूजा हो जाती है, इसमें संशय नहीं और वाचक के संतुष्ट होने पर मैं भी संतुष्ट हो जाता हूँ, इसमें भी कोई संशय नहीं।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण के श्रवण का फल संपूर्ण हुआ।।

।।इस प्रकार गरुड़पुराण सारोद्धार संपूर्ण हुआ।।

कथा एवं वर्ण्य वषय:

महर्षि कश्यप के पुत्र पक्षीराज गरुड़ को भगवान विष्णु का वाहन कहा गया है। एक बार गरुड़ ने भगवान विष्णु से मृत्यु के बाद प्राणियों की स्थिति, जीव की यमलोक-यात्रा, विभन्न कर्मों से प्राप्त होने वाले नरकों, योनियों तथा पापियों की दुर्गति से संबंधित अनेक गूढ एवं रहस्ययुक्त प्रश्न पूछे। उस समय भगवान विष्णु ने गरुड़ की जिज्ञासा शांत करते हुए उन्हें जो ज्ञानमय उपदेश दिया था, उसी उपदेश का इस पुराण में विस्तृत विवेचन किया गया है। गरुड़ के माध्यम से ही भगवान विष्णु की श्रीमुख से मृत्यु के उपरांत के गूढ तथा परम कल्याणकारी वचन प्रकट हुए थे, इस लिए इस पुराण को 'गरुड़ पुराण' कहा गया है। श्री विष्णु द्वारा प्रतिपादित यह पुराण मुख्यतः वैष्णव पुराण है। इस पुराण को 'मुख्य गारुड़ी विद्या' भी कहा गया है। इस पुराण का ज्ञान सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने महर्षि वेद व्यास को प्रदान किया था। तत्पश्चात् व्यासजी ने अपने शिष्य सूतजी को तथा सूतजी ने नैमिषारण्य में शौनकादि ऋषि-मुनियों को प्रदान किया था।

इस पुराण में सबसे पहले पुराण को आरम्भ करने का प्रश्न किया गया है, फ़िर संक्षेप से सृष्टि का वर्णन है। इसके बाद सूर्य आदि की पूजा, पूजा की विधि, दीक्षा विधि, श्राद्ध पूजा नवव्यूह की पूजा विधि, वैष्णव-पंजर, योगाध्याय, विष्णुसहस्त्रनाम कीर्तन, विष्णु ध्यान, सूर्य पूजा, मृत्युंजय पूजा, माला मन्त्र, शिवार्चा गोपालपूजा, त्रैलोक्यमोहन, श्रीधर पूजा, विष्णु-अर्चा पंचतत्व-अर्चा, चक्रार्चा, देवपूजा, न्यास आदि संध्या उपासना दुर्गार्चन, सुरार्चन, महेश्वर पूजा, पवित्रोपण पूजन, मूर्ति-ध्यान, वास्तुमान प्रासाद लक्षण, सर्वदेव-प्रतिष्ठा पृथक-पूजा- विधि, अष्टांगयोग, दानधर्म, प्रायश्चित- विधि, द्वीपेश्वरों और नरकों का वर्णन, सूर्यव्यूह, ज्योतिष, सामुद्रिकशास्त्र, स्वरज्ञान, नूतन-रत्न-परीक्षा, तीर्थ-महात्म्य, गयाधाम का महात्म्य, मन्वन्तर वर्णन, पतरों का उपाख्यान, वर्णधर्म, द्रव्यशुद्ध समर्पण, श्राद्धकर्म, विनायकपूजा, ग्रहयज्ञ आश्रम, जननाशौच, प्रेतशुद्ध, नीतिशास्त्र, व्रतकथायें, सूर्यवंश, सोमवंश, श्रीहरि-अवतार-कथा, रामायण, हरिवंश, भारताख्यान, आयुर्वेदनिदान चिकित्सा द्रव्यगुण निरूपण, रोगनाशाक विष्णुकवच, गरुणकवच, त्रैपुर-मंत्र, प्रश्नचूणामणि, अश्वायुर्वेदकीर्तन, औषधियों के नाम का कीर्तन, व्याकरण का ऊहापोह, छन्दशास्त्र, सदाचार, स्नान विधि, तर्पण, बलिवैश्वदेव, संध्या, पार्णवकर्म, नित्यश्राद्ध, सपिण्डन, धर्मसार, पापों का प्रायश्चित, प्रतिसंक्रम, युगधर्म, कर्मफ़ल योगशास्त्र विष्णुभक्ति श्रीहरि को नमस्कार करने का फ़ल, विष्णुमहिमा, नृसिंहस्तोत्र, विष्णवर्चनस्तोत्र, वेदान्त और सांख्य का सद्धान्त, ब्रह्मज्ञान, आत्मानन्द, गीतासार आदि का वर्णन है।

गरुड़ पुराण की 7 बातें याद रखेंगे तो कभी मात नहीं खाएंगे :

गरुड़ पुराण के बारे में सभी जानते होंगे। गरुड़ पुराण में स्वर्ग, नरक, पाप, पुण्य के अलावा भी बहुत कुछ है। उसमें ज्ञान, वज्ञान, नीति, नियम और धर्म की बाते हैं। गरुड़ पुराण में एक ओर जहां मौत का रहस्य है जो दूसरी ओर जीवन का रहस्य छिपा हुआ है।

गरुड़ पुराण से हमे कई तरह की शक्षाएं मलती है। गरुण पुराण में, मृत्यु के पहले और बाद की स्थिति के बारे में बताया गया है। यह पुराण भगवान वष्णु की भक्ति और उनके ज्ञान पर आधारित है। प्रत्येक व्यक्ति को यह पुराण पढ़ना चाहिए। गरुड़ पुराण हिन्दू धर्म के प्र सद्ध धा र्मक ग्रंथों में से एक है। **18** पुराणों में से इसे एक माना जाता है। गरुड़ पुराण में हमारें जीवन को लेकर कई गूढ बातें बताई गई है। जिनके बारें में व्यक्ति को जरूर जनना चाहिए।



1.संयम और सतर्कता :

जिंदगी है तो मत्र भी हैं और शत्रु भी। कहते हैं क जिसका कोई शत्रु नहीं वह अपनी जिंदगी में कुछ नहीं कर रहा है। ऐसे में उसका कोई मत्र भी नहीं होता। इसका यह मतलब नहीं क हम जानबूझकर लोगों को शत्रु बनाएं। यदि हम अपने तरीके से जी रहे हैं तो निश्चित ही शत्रु बनना स्वाभा वक है।

शत्रु या दुश्मन में से कुछ सामान्य होते हैं और कुछ खतरनाक। अर्थात ऐसा शत्रु जो दिल पर ले लेला है। जिंदगी को हल्के फुल्के में नहीं लेते हैं। अब ऐसे शत्रुओं से चतुराई से शत्रु बचना होता है अन्यथा वह कब, कहां और कैसे आपको चोट देने इसका कोई भरोसा नहीं।

गरुड़ पुराण के नितिसार में कहा गया है क शत्रुओं से निपटने के लए सतर्कता और चतुरता सहारा लेना चाहिए। शत्रु लगातार हमें नुकसान पहुंचाने का प्रयास करते रहते

हैं। ऐसे में यदि हम चतुरता नहीं दिखाएंगे तो नुकसान उठाएंगे। इस लए जैसा शत्रु है, उसके अनुसार नीति का उपयोग करके उसे काबू में रखा जाना चाहिए।

2.कपड़े हो साफ एवं सुगं धत :

यदि आप अमीर, धनवान या सौभाग्यशाली बनना चाहते हैं तो जरूरी है क आप साफ-सुथरे, सुंदर और सुगं धत कपड़े पहने। गरुण पुराण के अनुसार उन लोगों का सौभाग्य नष्ट हो जाता है जो गंदे वस्त्र पहनते हैं।

जिस घर में ऐसे लोग होते हैं जो गंदे वस्त्र पहनते हैं उस घर में कभी भी लक्ष्मी नहीं आती है। जिसके कारण उस घर से सौभाग्य भी चला जाता है और दरिद्रता का निवास हो जाता है। देखा गया है क जो लोग धन और सभी सुख-सु वधाओं से संपन्न हैं, ले कन फर भी वह लोग गंदे कपड़े पहनते हैं उनका धन धीरे धीरे नष्ट हो जाता है। इस लए हमें साफ एवं सुगं धत कपड़े पहननें चाहिए जिससे हमारे ऊपर महालक्ष्मी की कृपा बनी रहे।

3.ज्ञान का संवरक्षण अभ्यास से :

कतना ही कठिन से कठिन सवाल हो, ज्ञान हो, वद्या हो या याद रखने की कोई बात हो वह अभ्यास से ही संवर क्षत रखी जा सकती है। अभ्यास करते रहने से व्यक्ति उक्त ज्ञान में पारंगत तो होता ही है साथ ही वह उसे कभी नहीं भूलता है।

करत करत अभ्यास के जडमति होत सुजान,
रसरी आवत जात, सल पर करत निशान।

अर्थात जब रस्सी को बार-बार पत्थर पर रगडने से पत्थर पर निशान पड सकता है तो, निरंतर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी बु द्धमान बन सकता है।

अभ्यास के बगैर वद्या नष्ट हो जाती है। यदि ज्ञान या वद्या का समय समय पर अभ्यास नहीं करेंगे तो वह भूल जाएंगे। गरुड़ पुराण के अनुसार माना जाता है क जो भी हम पढ़े उसका हमें हमेशा एक बार अभ्यास करना चाहिए। जिससे की वह ज्ञान हमारे मस्तिष्क में अच्छे से जम जाए।

4.निरोगी काया :

संतु लत भोजन करने से ही निरोगी काया प्राप्त होती है। भोजन से ही व्यक्ति सेहत प्राप्त करता है और भोजन से ही वह रोगी हो जाता है। भोजन ही हमारे शरीर का मुख्य स्रोत है।

हमें हमेशा आधी से ज्यादा बीमारी इस वजह से होती है क हम असंतु लत खान-पान लेते हैं। जिसके कारण हमारा पाचन तंत्र ठीक से काम नहीं करता है। इस लए हमें सदैव सुपाच्य भोजन ही ग्रहण करना चाहिए। ऐसे भोजन से पाचन तंत्र ठीक से काम करता है और भोजन से पूर्ण ऊर्जा शरीर को प्राप्त होती है। पाचन तंत्र स्वस्थ रहता है और इस वजह से हम रोगों से बचे रहते हैं।

5.एकादशी-व्रत :

एकादशी व्रत को ग्रंथों और पुराणों में श्रेष्ठ बताया गया है। गरुड़ में तो इसका महिमा का खूब बखान कया गया है। जो व्यक्ति एकादशी का व्रत रखता वह सभी कष्टों से बचा रहता है। उसे उस व्रत का निश्चित ही लाभ मलता है।

एकादशी व्रत रखने के कुछ नियम होते हैं। इस व्रत को नियम अनुसार ही रखना चाहिए। इस दिन सर्फ फलाहार ही लेना चाहिए। कसी भी प्रकार का व्यसन नहीं करना चाहिए तभी यह व्रत फल देते है। ज्योति षयों अनुसार इसे रखने से चंद्र का कैसा भी बुरा असर हो वह खत्म हो जाता है।

6.तुलसी का महत्व समझे :

हालां क तुलसी का महत्व गरुड़ पुराण के अलाव अन्य कई पुराणों में भी बताया गया है। तुलसी को घर में रखने से सभी तरह के रोगों से मुक्ति मलती है। इसका प्रतिदिन सेवन करने से कसी भी प्रकार से व्यक्ति को कोई रोग हो नहीं सकता।

तुलसी को अपने घर में स्थान देने तथा जल देने से अवरुद्ध रास्ते खुल जाते हैं। इन्हें भगवान के प्रसाद में सेवन करने से सारे शारीरिक और मान सक वकार दूर होते हैं।

वष्णुजी की पूजा के पश्चात इनकी पुजा करने से बहुत फल मलता है।

7.मंदिर और धर्म का सम्मान करें :

कसी भी देवी, देवता या धर्म का अपमान करने वाले को एक दिन जिंदगी में पछताना होता है और वह नरर्क में जाता है। गुरुड़ पुराण अनुसार ऐसे लोगों के बारे में बहुत कुछ लखा हुआ है।

गुरुड़ पुराणानुसार प वत्र (मंदिर आदि जगहों पर) स्थानों पर गंदे काम करने वाले, अच्छे लोगों को धोखा देने वाले, कसी के अहसान के बदले उन्हें गाली और उनका दुरुपयोग करने वाले, धर्म, वेद, पुराण और शास्त्रों के अस्तित्व पर सवाल उठाने वालों को नर्क से कोई नहीं बचा सकता है।

क्या मृत्यु के समय ही करना चाहिए गरुड़ पुराण का पाठ? जानें रहस्य

गरुड़ को कश्यप ऋ ष का पुत्र और भगवान वष्णु का वाहन माना जाता है. एक बार गरुड़ ने भगवान वष्णु से, प्रा णयों की मृत्यु, यमलोक यात्रा, नरक-योनियों तथा सद्गति के बारे में अनेक गूढ और रहस्ययुक्त प्रश्न पूछे।

उस समय भगवान वष्णु ने गरुड़ की जिज्ञासा शांत करते हुये इन प्रश्नों का उत्तर दिया। गरुड़ के प्रश्न और भगवान वष्णु के उत्तर, इसी गरुड़ पुराण में संक लत कए गए हैं।

सनातन धर्म में मृत्यु के बाद गरुड़ पुराण सुनने का वधान है. इस पुराण के उत्तर खंड में "प्रकल्प" का वर्णन है, इसका श्रवण या मनन करने से सद्गति की प्राप्ति होती है।

1.गरुड़ पुराण में जिस प्रकार के नरक और गतियों के बारे में बताया गया है, क्या वे सत्य हैं:

गरुड़ पुराण में व्यक्ति के कर्मों के आधार पर दंड स्वरुप मलने वाले व भन्न नरकों के बारे में बताया गया है गरुड़ पुराण में उल्लि खत नरक मन की वशेष अवस्थाओं के बारे में बताते हैं परन्तु ये प्रतीकात्मक हैं, वास्त वक नहीं हालां क ये बात जरूर है क उसी तरह के परिणाम वास्त वक जीवन में भुगतने पड़ने हैं और ये परिणाम वास्त वक तथा मान सक होते हैं।

2.गरुड़ पुराण के अनुसार कौन सी चीजें व्यक्ति को सद्गति की ओर ले जाती हैं:

तुलसी पत्र, और कुश का प्रयोग व्यक्ति को मुक्ति की ओर ले जाता है संस्कारों को शुद्ध रखने से और भक्ति से व्यक्ति के दुष्कर्म के प्रभाव समाप्त होते हैं तथा व्यक्ति मुक्ति तक पहुंच जाता है जल तथा दुग्ध का दान करना भी व्यक्ति के कल्याण में सहायक होता है गुरु की कृपा से भी व्यक्ति के दंड शून्य होते हैं और व्यक्ति सद्गति की ओर जाता है।

3.क्या गरुड़ पुराण का पाठ केवल कसी की मृत्यु के समय ही करना चाहिए? क्या गरुड़ पुराण केवल भय पैदा नहीं करता:

गरुड़ पुराण का पाठ अगर भाव समझकर कया जाय तो सर्वोत्तम होता है इसका पाठ कभी भी कर सकते हैं वैसे अमावस्या को इसका पाठ करना सबसे ज्यादा उत्तम होता है इसका भाव समझने पर यह बिलकुल भी भय पैदा नहीं करता गरुड़ पुराण के भाव को समझने के लए इसके साथ गीता भी जरूर पढ़ें

गरुड़ पुराण में मलने वाली सजा:



सनातन धर्म में सदा से ही व्यक्ति को अच्छे कार्यों के लए प्रेरित कया जाता है, क्यों क बहुत से पुराणों और धर्मग्रंथों में व र्णत है क व्यक्ति जीवनभर जैसे कार्य करता है उसी के अनुरूप उसे फल प्राप्त होते हैं। हिंदू धर्म में गरुड़ पुराण की वशेष महत्ता है। माना जाता है क गरुड़ पुराण में मनुष्यों के पापों के अनुसार अलग अलग प्रकार के दण्डों का वस्तार पूर्वक वर्णन है।

हिंदू धर्म की अनेक कथाओं में स्वर्ग और नर्क वर्णन हुआ है, जिनके अनुसार जहां देवता रहते हैं तथा अच्छे कर्म करने वाले इन्सान मृत्यु के पश्चात रहते है, उस स्थान को स्वर्ग व इसके एकदम वपरीत बुरे कर्म करने वाले लोगों को नर्क की प्राप्ति होती है। ऐसे ही इस्लाम धर्म में जन्नत और दोजख का जिक्र कया जाता है। माना जाता है क लोग को उसके कर्मों के हिसाब से दोजख या जन्नत नसीब होती है।

सनातन धर्म में **36** तरह के मुख्य नर्कों का वर्णन गरूड़ पुराण, अ ग्रपुराण, कठोपनिषद जैसे पौरा णक ग्रंथों में पाया जाता है। कर्मों के अनुसार नर्क में सजा का प्रावधान पाया जाता है।

गरुड़ पुराण में व र्णत है अलग अलग पापों की सजा:

महावी च - गाय की हत्या करने वाले लोगो को महावी च नर्क में जगह मलती है, यहाँ हर तरफ सर्फ रक्त और लोहे के बड़े-बड़े कांटे होते हैं।

कुंभीपाक - जो लोग कसी की भू म हड़पते हैं या ब्राह्मण की हत्या करते हैं, उन्हें कुंभीपाक नामक नर्क में जगह मलती है जहाँ जमीन गरम बालू और अंगारों से भरी है।

रौरव - झूठी गवाही देने वाले लोगो को रौरव नामक नर्क में जगह मलती है जहाँ पर लोहे के जलते हुए तीर से इन्हें बींधा जाता है।

मंजूष - दूसरों को निरपराध बंदी बनाने या कैद में रखने वाले लोगो को मंजूष नामक नर्क में जगह मलती है जहाँ धरती लोहे सामान जल रही होती है।

अप्रतिष्ठ - जो इन्सान ब्राह्मणों को पीड़ा देते या सताते हैं उन्हें अप्रतिष्ठ नामक नर्क में जगह मलती है, जो क पीब, मूत्र और उल्टी से भरा हुआ होता है।

वलेपक- ऐसे ब्राह्मण जो मदिरापान करते है उन्हें वलेपक नाम के नर्क का भोगी बनना पड़ता है, जो क हमेशा लाख की आग से जलता रहता है।

महाप्रभ- महाप्रभ नामक नर्क में एक बहुत बड़ा लोहे का नुकीला तीर है, जिसमे पाप करने वाले को परोया जाता है। इस नरक के भोगी ऐसे लोग होते है जो पति-पत्नी में फूट डालते हैं या उनका रिश्ता तुड़वाते है।

जयंती- ऐसे लोग जो पराई औरतों के साथ संभोग करते हैं उन्हें जयंती नामक नरक में लोहे की बड़ी च ान के नीचे दबाकर सजा दी जाती है।

शाल्म ल- कई पुरुषों से संभोग करने वाली स्त्री, हमेशा झूठ व कड़वा बोलने वाले व्यक्ति, दूसरों के धन और स्त्री पर बुरी नजर रखने वाले, पुत्रवधू, पुत्री, बहन आदि से शारीरिक संबंध बनाने वाले पुरुष तथा वृद्ध की हत्या करने वाले इन्सान को शाल्म ल नामक नरक को भुगतना पड़ता है, जो हमेशा जलते हुए कांटों से भरा नर्क होता है।

गरुड़ पुराण में व र्णत है अलग अलग पापों की सजा:

गरुड़ पुराण में पाप कर्म करने वालों के लए **36** प्रकार के नर्कों का वस्तार से वर्णन है:

महारौरव- भ ीनुमा इस नर्क में ऐसे लोगो को सजा मलती है जो दूसरों के घर, खेत, ख लहान या गोदाम में आग लगाते हैं।

ता मस्र- चोरो को ता मस्र नामक नर्क में लोहे की प ियों और मुग्दरों से पटाई की जाती है।

महाता मस्र- माता, पता और मत्र की हत्या करने वाले इंसान को रक्त पीने वाली जौंको से भरे नरक में सजा भुगतनी पड़ती है।

अ सपत्रवन- जो इंसान अपने मत्र को धोखा देता है उसे एक जंगल की तरह दिखने वाले अ सपत्रवन नर्क भोगना पड़ता है। इस जंगल के पेड़ों पर पत्तों की जगह तीखी तलवारें और खड्ग होते है।

करम्भ बालुका- दुसरे जीवो को जलाने वाले इंसान को करम्भ बालुका नरक में भेजा जाता है जो क गर्म बालू रेत और अंगारे भरे हुए एक कुएं की तरह होता हैं।

काकोल- छुप-छुप कर अकेले ही मठाई खाने वाले इंसान को इस नर्क में लाया जाता हैं, जो क पीब और कीड़ों से भरा नर्क होता है।

कुड्मल- ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पतृयज्ञ तथा मनुष्य यज्ञ, दैनिक जीवन में इन पंचयज्ञों का अनुष्ठान न करने वाले को कुड्मल नर्क भोगना पड़ता है।

महाभीम- बदबूदार मांस और रक्त से भरे महाभीम नामक नरक में उस इन्सान को भेजा जाता है जो शास्त्रों में निषेध आहार का सेवन करते है।

महावट- लड़ कयों को बेचने वाले इन्सान को मुर्दे और कीड़ो से भरे महावट नर्क में जाना पड़ता हैं।

गरुड़ पुराण में व र्णत है अलग अलग पापों की सजा:

तिलपाक- दूसरों को सताने, पीड़ा देने वाले लोगों को तिलपाक नामक नरक में तिल की तरह पेरा जाता है यानि क इस नरक में जैसे तिल का तेल निकाला जाता है, ठीक उसी तरह से इंसान को सजा दी जाती है।

तैलपाक- मत्रों या शरणागतों की हत्या करने वाले इन्सान को तैलपाक नर्क में खौलते हुये तेल में तला जाता हैं।

वज्रकपाट- दूध बेचने का व्यवसाय करने वाले लोगो को वज्रों की पूरी श्रंखला से बने वज्रकपाट नामक नरक में प्रता ड़त कया जाता है।

निरुच्छवास- जो लोग दिये जा रहे दान में वघ्न डालते हैं, उन्हें वायुरहित अंधेरामय निरुच्छवास नामक नर्क में जगह मलती है।

अंगारोपच्य- दान देने का वादा करके मुकर जाने वाले इंसान को अंगारों से भरे अंगारोपच्य नर्क में जलाया जाता हैं।

महापायी- हमेशा असत्य बोलने वाले व्यक्ति को हर तरह की गंदगी से भरे महापायी नरक में औंधे मुंह गराया जाता हैं।

महाज्वाल - हमेशा पाप में लप्त रहने वाले लोगो को हर तरफ आग वाले महाज्वाल नरक में जलाया जाता हैं।

गुड़पाक- गुड़पाक नामक नरक में जो लोग समाज में वर्ण संकरता फैलाते हैं, उन्हें स्थान दिया जाता है। इस नर्क में चारों ओर गरम गुड़ के कुंड होते है जिनमे दोषी को पकाया जाता हैं।

क्रकच- शास्त्रों में निषेध मानी गयी स्त्रियों के साथ संभोग करने वाले पुरुष को क्रकच नामक नर्क में भेजा जाता है जहाँ तेज धार वाले आरो से दोषी को चीरा जाता हैं।

क्षुरधार - ब्राह्मणों की भू म हड़पने वाले को तीखे उस्तरों से काटा जाता हैं।

अम्बरीष- सोने की चोरी करने वाले इन्सान को प्रलय समान जलती हुयी आग में अम्बरीष नामक नर्क में जलाया जाता है।

वज्रकुठार- वज्रों से भरे इस नर्क में पेड़ काटने वाले इंसान को लंबे समय तक वज्रों से पीटा जाता हैं।

परिताप- दूसरों को जहर देने तथा मधु की चोरी करने वाले प्राणी को आग से भरे इस नर्क में जलाया जाता हैं।

काल सूत्र- वज्र के समान सूत से बने काल सूत्र नर्क में दूसरों की खेती नष्ट करने वाले इन्सान को सजा दी जाती हैं।

कश्मल- मांसाहार में अत्या धक रु च रखने वाले इंसान को नाक और मुंह की गंदगी से भरे कश्मल नरक में गराया जाता हैं।

उग्रगंध- लार, मूत्र, वष्ठाऔर अन्य गंद गयों से भरे नर्क में पतरों का पंडदान न करने वाले को लाया जाता हैं।

दुर्धर- सूदखोर और ब्याज का धंधा करने वाले प्राणी को जौक और बिच्छुओं से भरे नर्क में भेजा जाता हैं।

वज्रमहापीड- वज्रमहापीड नामक नरक में लोहे के भारी वज्र से सोने की चोरी, कसी प्राणी की हत्या कर उसे खाने वाले, दूसरों के आसन, शय्या और वस्त्र चुराने, जो दूसरों के फल तथा धर्म को न मानने वाले लोगो को मारा जाता है।

गरुड़ पुराण से जानें मृत्यु लोक के राज़:



1.गरुड़ पुराण से जानें मृत्यु लोक के राज़:

गरुड़ पुराण हिन्दू धर्म के प्र सद्ध धा र्मक ग्रंथों में से एक है। वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित 'गरुड़ पुराण' 'सनातन धर्म' में मृत्यु के बाद सद्गति प्रदान करने वाला माना जाता है। इस लये सनातन हिन्दू धर्म में मृत्यु के बाद 'गरुड़ पुराण' के श्रवण का प्रावधान है। अठारह पुराणों में 'गरुड़ महापुराण' का अपना एक वशेष महत्व है। क्यों क इसके देव स्वयं वष्णु माने जाते हैं, इसी लए यह वैष्णव पुराण है। गरुड़ पुराण के अनुसार हमारे कर्मों का फल हमें हमारे जीवन में तो मलता ही है, परंतु मरने के बाद भी कार्यों का अच्छा-बुरा फल मलता है। इसी वजह से इस ज्ञान को प्राप्त करने के लए घर के कसी सदस्य की मृत्यु के बाद का अवसर निर्धारित कया गया, ता क उस समय हम जन्म-मृत्यु से जुड़े सभी सत्य जान सकें.

2. वष्णु भक्ति:

वास्त वक तथ्य यह है क 'गरुड़ पुराण' में भगवान वष्णु की भक्ति का वस्तार से वर्णन मलता है। वष्णु के चौबीस अवतारों का वर्णन ठीक उसी प्रकार इस पुराण में प्राप्त होता है, जिस प्रकार 'श्रीमद्भागवत' में उपलब्ध होता है। आरम्भ में मनु से सृष्टि की उत्पत्ति, ध्रुव चरित्र और बारह आदित्यों की कथा प्राप्त होती है। उसके बाद सूर्य और चन्द्र ग्रहों के मन्त्र, शव-पार्वती मन्त्र, इन्द्र से सम्बन्धित मन्त्र, सरस्वती के मन्त्र और नौ शक्तियों के वषय में वस्तार से बताया गया है।

3.श्लोक तथा वषय:

'गरुड़ पुराण' में उन्नीस हज़ार श्लोक कहे जाते हैं, कन्तु वर्तमान समय में कुल सात हज़ार श्लोक ही उपलब्ध हैं। इस पुराण को दो भागों में रखकर देखना चाहिए। पहले भाग में वष्णु भक्ति और उपासना की व धयों का उल्लेख है तथा मृत्यु के उपरान्त प्राय: 'गरुड़ पुराण' के श्रवण का प्रावधान है। दूसरे भाग में 'प्रेतकल्प' का वस्तार से वर्णन करते हुए व भन्न नरकों में जीव के पड़ने का वृत्तान्त है। इसमें मरने के बाद मनुष्य की क्या गति होती है, उसका कस प्रकार की योनियों में जन्म होता है, प्रेत योनि से मुक्त कैसे पाई जा सकती है, श्राद्ध और पतृ कर्म कस तरह करने चाहिए तथा नरकों के दारुण दुख से कैसे मोक्ष प्राप्त कया जा सकता है आदि वषयों का वस्तारपूर्वक वर्णन प्राप्त होता है।

4.कथा:

इस पुराण में मह र्ष कश्यप और तक्षक नाग को लेकर एक सुन्दर उपाख्यान दिया गया है। ऋ ष के शाप से जब राजा परी क्षत को तक्षक नाग डसने जा रहा था, तब मार्ग में उसकी भेंट कश्यप ऋ ष से हुई। तक्षक ने ब्राह्मण का वेश धरकर उनसे पूछा क- "वे इस तरह उतावली में कहाँ जा रहे हैं?" इस पर कश्यप ने कहा क- "तक्षक नाग महाराज परी क्षत को डसने वाला है। मैं उनका वष प्रभाव दूर करके उन्हें पुन: जीवन दे दूँगा।"

यह सुनकर तक्षक ने अपना परिचय दिया और उनसे लौट जाने के लए कहा। क्यों क उसके वष-प्रभाव से आज तक कोई भी व्यक्ति जी वत नहीं बचा था। तब कश्यप ऋ ष ने कहा क- "वे अपनी मन्त्र शक्ति से राजा परी क्षत का वष-प्रभाव दूर कर देंगे।" इस पर तक्षक ने कहा क- "यदि ऐसी बात है तो आप इस वृक्ष को फर से हरा-भरा करके दिखाइए। मैं इसे डसकर अभी भस्म कए देता हूँ।" तक्षक नाग ने निकट ही स्थित एक वृक्ष को अपने वष के प्रभाव से तत्काल भस्म कर दिया।

इस पर कश्यप ऋ ष ने उस वृक्ष की भस्म एकत्र की और अपना मन्त्र फूंका। तभी तक्षक ने आश्चर्य से देखा क उस भस्म में से कोंपल फूट आईं और देखते ही देखते वह हरा-भरा हो गया। हैरान तक्षक ने ऋ ष से पूछा क- "वे राजा का भला करने कस कारण से जा रहे हैं?" ऋ ष ने उत्तर दिया क उन्हें वहाँ से धन की प्राप्ति होगी। इस पर तक्षक ने उन्हें उनकी सम्भावना से भी अ धक धन देकर वापस भेज दिया। गरुड़ पुराण में कहा गया है क- "कश्यप ऋ ष का यह प्रभाव 'गरुड़ पुराण' सुनने से ही।

5.सार तत्त्व:

इस पुराण में नीति सम्बन्धी सार तत्त्व, आयुर्वेद, गया तीर्थ का माहात्म्य, श्राद्ध व ध, दशावतार चारित्र तथा सूर्य-चन्द्र वंशों का वर्णन वस्तार से प्राप्त होता है। बीच-बीच में कुछ अन्य वंशों का भी उल्लेख है। इसके अतिरिक्त गारूड़ी वद्या मन्त्र प क्ष ॐ स्वाहा और 'वष्णु पंजर स्तोत्र' आदि का वर्णन भी मलता है। 'गरुड़ा पुराण' में व वध रत्नों और म णयों के लक्षणों का वर्णन वस्तारपूर्वक कया गया।

साथ ही ज्योतिष शास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, सांपों के लक्षण, धर्म शास्त्र, वनायक शान्ति, वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था, व वध व्रत-उपवास, सम्पूर्ण अष्टांग योग, पतिव्रत धर्म माहात्म्य, जप-तप-कीर्तन और पूजा वधान आदि का भी स वस्तार उल्लेख हुआ है। इस पुराण के 'प्रेत कल्प' में पैतीस अध्याय हैं, जिसका प्रचलन सबसे अ धक हिन्दुओं के सनातन धर्म में है।

इन पैंतीस अध्यायों में यमलोक, प्रेतलोक और प्रेत योनि क्यों प्राप्त होती है, उसके कारण, दान महिमा, प्रेत योनि से बचने के उपाय, अनुष्ठान और श्राद्ध कर्म आदि का वर्णन वस्तार से कया गया है। ये सारी बातें मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति के परिवार वालों पर गहरा प्रभाव डालती हैं। वे दिवंगत व्यक्ति की सद्गति और मोक्ष के लए पुराण- वधान के अनुसार भरपूर दान-द क्षणा देने के लए तत्पर हो जाते हैं। इस पुराण का उद्देश्य भी यही जान पड़ता है।

6.नरक वर्णन:

'गरुड़ पुराण' के दूसरे अध्याय में यह वर्णन मलता है, इसके अनुसार - गरुड़ ने कहा - हे केशव! यमलोक का मार्ग कस प्रकार दुखदायी होता है। पापी लोग वहाँ कस प्रकार जाते हैं, मुझे बताइये। भगवान बोले- हे गरुड़! महान दुख प्रदान करने वाले यममार्ग के वषय में मैं तुमसे कहता हूँ, मेरा भक्त होने पर भी तुम उसे सुनकर काँप उठोगे।

यममार्ग में वृक्ष की छाया नहीं है, अन्न आदि भी नहीं है, वहाँ कहीं जल भी नहीं है, वहाँ प्रलय काल की भांति बारह सूर्य तपते हैं। उस मार्ग से जाता हुआ पापी कभी बर्फीली हवा से पी.डत होता है तो कभी कांटे चुभते हैं। कभी महा वषधर सर्पों द्वारा डसा जाता है,

कहीं अग्नि से जलाया जाता है, कहीं संहों, व्याघ्रों और भयंकर कुत्तों द्वारा खाया जाता है, कहीं बिच्छुओं द्वारा डसा जाता हैं।

गरुड़ इसके बाद वह भयंकर 'अ सपत्रवन' नामक नरक में पहुँचता है, जो दो हज़ार योजन के वस्तार वाला है। यह वन कौओं, उल्लुओं, गीधों, सरघों तथा डॉसों से व्याप्त है। उसमें चारों ओर दावाग्नी है। वह जीव कहीं अंधे कुएं में गरता है, कहीं पर्वत से गरता है, कहीं छुरे की धार पर चलता है, कहीं कीलों के ऊपर चलता है, कहीं घने अन्धकार में गरता है। कहीं उग्र जल में गरता है, कहीं जोंकों से भरे हुए कीचड़ में गरता है।

कहीं तपी हुई बालुका से व्याप्त और धधकते ताम्रमय मार्ग, कहीं अंगार रा श, कहीं अत्या धक धुएं से भरे मार्ग पर उसे चलना पड़ता है। कहीं अंगार वृष्टि, कहीं बिजली गरने, शलावृष्टि, कहीं रक्त की, कही शस्त्र की और कहीं गर्म जल की वृष्टि होती है। कहीं खारे कीचड़ की वृष्टि होती है। कहीं मवाद, रक्त तथा वष्ठा से भरे हुए तलाव हैं। यममार्ग के बीचो-बीच अत्यन्त उग्र और घोर 'वैतरणी नदी' बहती है। वह देखने पर दुखदायनी है।

उसकी आवाज़ भय पैदा करने वाली है। वह सौ योजन चौड़ी और पीब तथा रक्त से भरी है। हड् डयों के समूह से उसके तट बने हैं। यह वशाल घ ड़यालों से भरी है। हे गरुड़! आए पापी को देखकर वह नदी ज्वाला और धूम से भरकर कड़ाह में खौलते घी की तरह हो जाती है। यह नदी सूई के समान मुख वाले भयानक कीड़ों से भरी है। वज्र के समान चोंच वाले बडे-बड़े गीध हैं। इसके प्रवाह में गरे पापी 'हे भाई', 'हा पुत्र', 'हा तात'। कहते हुए वलाप करते ह।

बहुत से बिच्छु तथा काले सांपों से व्याप्त उस नदी के बीच में गरे हुए पा पयों की रक्षा करने वाला कोई नहीं है। उसके सैंकड़ों, हज़ारों भंवरों में पड़कर पापी पाताल में चले जते हैं, क्षणभर में ही ऊपर चले आते हैं। कुछ पापी पाश में बंधे होते हैं। कुछ अंकुश में फंसा कर खींचे जाते हैं और कुछ कोओं द्वारा खींचे जाते हैं। वे पापी गरदन हाथ पैरों में जंजीरों से बंधे होते हैं। उनकी पीठ पर लोहे के भार होते हैं।

अत्यंत घोर यमदूतों द्वारा मुगदरों से पीटे जाते हुए रक्त वमन करते हैं तथा वमन कये रक्त को पीते हैं। इस प्रकार सत्रह दिन तक वायु वेग से चलते हुए अठाहरवें दिन वह प्रेत सौम्यपुर में जाता है। 'गरुड़ पुराण' का यह वर्णन जाहिर है क मनुष्यों को धर्माचरण और पाप से दूर रखने के लए ही रचा गया होगा।

7.मृत्यु के बाद क्या होता है:

'मृत्यु के बाद क्या होता है?' यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसका उत्तर जानने की इच्छा सभी को होती है। सभी अपने-अपने तरीक़े से इसका उत्तर भी देते हैं। 'गरुड़ पुराण' भी इसी प्रश्न का उत्तर देता है। जहाँ धर्म शुद्ध और सत्य आचरण पर बल देता है, वहीं पाप-पुण्य, नैतिकता-अनैतिकता, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य तथा इनके शुभ-अशुभ फलों पर भी वचार करता है।

वह इसे तीन अवस्थाओं में वभक्त कर देता है। प्रथम अवस्था में मानव को समस्त अच्छे-बुरे कर्मों का फल इसी जीवन में प्राप्त होता है। दूसरी अवस्था में मृत्यु के उपरान्त मनुष्य व भन्न चौरासी लाख योनियों में से कसी एक में अपने कर्मानुसार जन्म लेता है। तीसरी अवस्था में वह अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक में जाता है।

8.स्वर्ग-नरक:

हिन्दू धर्म के शास्त्रों में उपर्युक्त तीन प्रकार की अवस्थाओं का खुलकर ववेचन हुआ है। जिस प्रकार चौरासी लाख योनियाँ हैं, उसी प्रकार चौरासी लाख नरक भी हैं, जिन्हें मनुष्य अपने कर्मफल के रूप में भोगता है। 'गरुड़ पुराण' ने इसी स्वर्ग-नरक वाली व्यवस्था को चुनकर उसका वस्तार से वर्णन कया है। इसी कारण भयभीत व्यक्ति अ धक दान-पुण्य करने की ओर प्रवृत्त होता है।

'प्रेत कल्प' में कहा गया है क नरक में जाने के पश्चात प्राणी प्रेत बनकर अपने परिजनों और सम्बन्धियों को अनेकानेक कष्टों से प्रता ड़त करता रहता है। वह परायी स्त्री और पराये धन पर दृष्टि गड़ाए व्यक्ति को भारी कष्ट पहुंचाता है।

जो व्यक्ति दूसरों की सम्पत्ति हड़प कर जाता है, मत्र से द्रोह करता है, वश्वासघात करता है, ब्राह्मण अथवा मन्दिर की सम्पत्ति का हरण करता है, स्त्रियों और बच्चों का संग्रहीत धन छीन लेता है, परायी स्त्री से व्य भचार करता है, निर्बल को सताता है, ईश्वर में वश्वास नहीं करता, कन्या का वक्रय करता है; माता, बहन, पुत्री, पुत्र, स्त्री, पुत्रबधु आदि के निर्दोष होने पर भी उनका त्याग कर देता है, ऐसा व्यक्ति प्रेत योनि में अवश्य जाता है।

उसे अनेकानेक नारकीय कष्ट भोगना पड़ता है। उसकी कभी मुक्ति नहीं होती। ऐसे व्यक्ति को जीते-जी अनेक रोग और कष्ट घेर लेते हैं। व्यापार में हानि, गर्भनाश, गृह कलह, ज्वर, कृ ष की हानि, सन्तान मृत्यु आदि से वह दुखी होता रहता है अकाल मृत्यु उसी व्यक्ति की होती है, जो धर्म का आचारण और नियमों को पालन नहीं करता तथा जिसके आचार- वचार दू षत होते हैं। उसके दुष्कर्म ही उसे 'अकाल मृत्यु' में धकेल देते हैं।

'गरुड़ पुराण' में प्रेत योनि और नरक में पड़ने से बचने के उपाय भी सुझाए गए हैं। उनमें सर्वा धक प्रमुख उपाय दान-द क्षणा, पण्डदान तथा श्राद्ध कर्म आदि बताए गए हैं।

सर्वा धक प्र सद्ध प्रेत कल्प के अतिरिक्त इस पुराण में 'आत्मज्ञान' के महत्त्व का भी प्रतिपादन कया गया है। परमात्मा का ध्यान ही आत्मज्ञान का सबसे सरल उपाय है। उसे अपने मन और इन्द्रियों पर संयम रखना परम आवश्यक है। इस प्रकार कर्मकाण्ड पर सर्वा धक बल देने के उपरान्त 'गरुड़ पुराण' में ज्ञानी और सत्यव्रती व्यक्ति को बिना कर्मकाण्ड कए भी सद्गति प्राप्त कर परलोक में उच्च स्थान प्राप्त करने की व ध बताई गई है।

9.आत्माओं का सूक्ष्म ववेचन:

इस पृथ्वी पर चार प्रकार की आत्माएं पाई जाती हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो अच्छाई और बुराई के भाव से परे होते हैं। ऐसी आत्माओं को पुनः जन्म लेने की आवश्यकता नहीं होती। वे इस जन्ममृत्यु के बंधन से परे हो जाते हैं। इन्हें असली संत और असली महात्मा कहते हैं। उनके लए अच्छाई और बुराई कोई अर्थ नहीं रखती। उनके लए सब बराबर हैं। उनको सबसे प्रेम होता है कसी के प्रति घृणा नहीं होती है

इसी तरह कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अच्छाई और बुराई के प्रति समतुल्य होते हैं यानी दोनों को समान भाव से देखते हैं वे भी इस जनम मृत्यु के बंधनों से मुकत हो जाते हैं। ले कन तीसरी तरह के लोग ऐसे होते हैं जो साधारण प्रकार के होते हैं, जिनमें अच्छाई भी होती है और बुराई भी होती है। दोनों का मश्रण होता है उनका व्यक्तित्व ऐसे साधारण प्रकार के लोग अपनी मृत्यु होने के बाद तत्काल कसी न कसी गर्भ को उपलब्ध हो जाते हैं, कसी न कसी शरीर को प्राप्त कर लेते हैं।

10.क्या गरुड पुराण को घर मैं रखना अशुभ है:

कुछ लोगों में यह भ्रान्त धारणा बनी है क इस गरुडपुराण-सारोद्धार (प्रेतकल्प)- को घर में नहीं रखना चाहिये। केवल श्राद्ध आदि प्रेतकार्यों में ही इसकी कथा सुनते हैं। यह धारणा अत्यन्त भ्रामक और अन्ध वश्वास युक्त है, कारण इस ग्रन्थ की महिमा में ही यह बात लखी है क 'जो मनुष्य इस गरुडपुराण-सारोद्धार को सुनता है, चाहे जैसे भी इसका पाठ करता है, वह यमराज की भयंकर यातनाओं को तोड़कर निष्पाप होकर स्वर्ग प्राप्त करता

यह ग्रन्थ बड़ा ही प वत्र और पुण्यदायक है तथा सभी पापों का वनाशक एवं सुननेवालों की समस्त कामनाओं का पूरक है। इसका सदैव श्रवण करना चाहिये -पुराणं गारुडं पुण्यं प वत्रं पापनाशनम्। श्रृण्वतां कामनापूरं श्रोतव्यं सर्वदैव हि।। (सारो. फलश्रुति 11) गरुणपुराण-सारोद्धार का श्रवणरूपी यह और्ध्वदैहिक कृत्य पतरों को मुक्ति प्रदान करनेवाला, पुत्र वषयक अ भलाषा को पूर्ण करनेवाला तथा इस लोक और परलोक में सुख प्रदान करनेवाला है।

जो इस प वत्र प्रेतकल्प को सुनता अथवा सुनाता है, वे दोनों ही पाप से मुक्त हो जाते हैं कभी भी दुर्गति को नहीं प्राप्त करते। इस लये समस्त प्रेतकल्प को वशेष प्रयत्न करके अवश्य ही सुनना चाहिये - इदं चामुष्मिकं कर्म पतृमुक्तिप्रदायकम्। पुत्रवांछितदं चैव परत्रेह सुखप्रदम्।। प्रेतकल्प मदं पुण्यं श्रृणोति श्रावयेच्च य:। उभौ तौ पापनिर्मुक्तौ दुर्गतिं नैव गच्छत:।। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन श्रोतव्यं गारुडं कल। धर्मार्थकाममोक्षाणां दायकं दु:खनाशनम्

11.गरुड़ पुराण का संदेश:

वास्तव में गरुड़ पुराण की समस्त कथाओं और उपदेशों का सार यह है क हमें आसक्ति का त्यागकर वैराग्य की ओर प्रवृत्त होना चाहिये तथा सांसारिक बंधनों से मुक्त होने के लये एकमात्र परमात्मा की शरण में जाना चाहिये। यह लक्ष्यप्राप्ति कर्मयोग, ज्ञान अथवा भक्ति द्वारा कस प्रकार हो सकती है, इसकी वशद व्याख्या इस ग्रन्थ में हुई हैं।

मनुष्य इस लोक में जाने के बाद अपने पारलौ कक जीवन को कस प्रकार सुख-समृद्ध एवं शान्तिप्रद बना सकता है तथा मृत्यु के बाद उस प्राणी के उद्धार के लये पुत्र-पौत्रादि

पारिवारिक जनों का क्या कर्तव्य है- इसका वशद वर्णन भी यहाँ प्राप्त होता है। इस 'गरुणपुराण' के श्रवण और पठन से स्वाभा वक ही पुण्यलाभ होता है और मनुष्यों को यथार्थ ज्ञान भी हो जाता है।

जानें गरुड़ ने क्यों कया था श्री वष्णु से यह वशेष प्रश्न:



मृत्यु के बाद आत्मा कैसे शरीर के बाहर जाती है?
कौन लोग प्रेत का शरीर प्राप्त करते है?
क्या भगवान के भक्त प्रेत योनि में प्रवेश करते हैं?

भगवान वष्णु ने गरुड़ को उत्तर दिया:

1.मृत्यु के बाद आत्मा निम्न मार्गों से शरीर के बाहर आती है।
2.आँख, नाक या त्वचा पर स्थिर रंध्रों से।
3.ज्ञानियों की आत्मा मस्तिष्क के उपरी सरे से बाहर आती है।
4.पा पयों की आत्मा उसके गुदा द्वार से बाहर जाता है(ऐसा पाया गया है क कई लोग मृत्यु के समय मल त्याग करते हैं)। यह आत्मा को शरीर से बाहर निकलने के मार्ग हैं।
5.शरीर को त्यागने के बाद सूक्ष्म शरीर घर के अंदर कई दिनों तक रहता है।
6.अग्नि में **3** तीन दिनों तक।
7.घर में स्थित जल में **3** दिनों तक।

जब मृत व्यक्ति का पुत्र **10** दिनों तक मृत व्यक्ति के लए उ चत वेदिक अनुष्ठान करता है तब मृत व्यक्ति की आत्मा को दसवे दिन एक अल्पका लक शरीर दिया जाता है

जो अंगूठे के आकार का होता है। इस अल्पका लक शरीर के रूप में वह आत्मा दसवे दिन यम लोक के लए प्रस्थान करती है। तीन दिनों बाद अर्थात तेरहवे दिन वह यमलोक पहुँचती है।

यमलोक में चत्रगुप्त भगवान जीव के सभी कर्मो का लेखा यमराज को प्रस्तुत करते हैं। उसके आधार पर यमराज जीव के लए स्वर्ग लोक या नरक लोक तय करते हैं। जीव अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक लोक में रहता है और फर उसके बाद वह पृथ्वी पर पुनः एक नए शरीर के रूप में जन्म लेता है।

प्रेत योनि में कौन जन्म लेता है:

1.कुछ मनुष्य जो कुछ वशेष प्रकार का कर्म करते हैं वह यमराज द्वारा वापस पृथ्वी पर प्रेत योनि में भेजे जाते हैं जिसमें वह एक निश्चित समय तक यहाँ रहते हैं।

2.निम्न प्रकार के कर्म करने वाले लोग प्रेत योनि प्राप्त करते हैं

3.. ववाह के बाहर कसी से शारीरिक सम्बन्ध बनाने वाले व्यक्ति।

4.धोखाधड़ी या कसी की संपत्ति हड़पने वाले व्य कत।

5.आत्म हत्या करने वाले व्य कत।

6.अकाल मृत्यु: जैसे कसी जानवर द्वारा या कसी दुर्घटना में मारा जाना आदि ,अकाल मृत्यु स्वयं मनुष्य के कुछ वशेष कर्मो के कारण प्राप्त होते हैं।

जब कोई जीव मनुष्य शरीर धारण करता है तो उसके कर्मों आदि के अनुसार उसका एक समय तक पृथ्वी पर रहना अपे क्षत होता है। यमराज जब मनुष्य के सभी कर्मों की समीक्षा करते हैं और जीव उस अपे क्षत समय से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो गया हो , तो उस जीव को बा क समय प्रेत योनि में व्यतीत करना पड़ता है।

भगवान के भक्तों का क्या होता है:



भगवान के भक्तों को मृत्यु के बाद कसी प्रकार की यातना नहीं झेलनी पड़ती। भगवान के भक्त को यमराज के दूत नहीं बल्कि भगवान के अपने दूत लेने आते हैं। भगवान के दूत उस जीवात्मा की घर के बाहर प्रतीक्षा करते हैं और बहुत आदर के साथ भगवान के धाम लेकर जाते हैं। जहाँ वह जन्म और बंधनों से मुक्त अलौ कक जीवन जीता है।

गरुड़ के जन्म से जुड़ी है ये रहस्यमय कथा, इस लए मृत्यु के बाद पढ़ा जाता है गरुड़ पुराण:

भगवान वष्णु के अवतार माने जाने वाले महान संत वेदव्यास ने कुल **18** पुराणों की रचना की थी, जिनके समग्र स्वरूप को अष्टदास महापुराण कहा जाता है। इन्हीं पुराणों में से एक है गरुड़ पुराण, जिसका पाठ मृत्यु के पश्चात कया जाता है। हिन्दू शास्त्रों के अनुसार ऐसा कहा जाता है गरुड़ पुराण के द्वारा ही आत्मा को इस संसार से मुक्ति मलती है और वह निर्धारित स्थान की ओर प्रस्थान करती है। ले कन क्या आप जानते हैं क गरुड़ पुराण जिस भगवान गरुड़ पर हैं उनका जन्म कैसे हुआ था?

ऋ ष कश्यप के साथ शुरू हुई कथा:

गरुड़ के जन्म की यह कहानी कश्यप ऋ ष की दो पत्नियों वनता और कद्रु के साथ शुरू होती है। दरअसल एक बार ऋ ष कश्यप ने अपनी पत्नी कद्रु से कहा क वह संतानोत्पत्ति के लए एक यज्ञ प्रारंभ करने जा रहे हैं ता क उन्हें और अ धक पुत्रों की प्राप्ति हो सके। कश्यप ऋ ष ने सबसे पहले कद्रु से पूछा क उन्हें और कतने पुत्र

चाहिए?इस सवाल के जवाब में कद्रु ने कहा क उन्हें बहुत सारे पुत्र चाहिए ता क वह उनकी आज्ञा का पालन करने के साथ-साथ उनकी हर इच्छा भी पूरी कर सकें।

वनता ने की दो पुत्रों की मांग:

ऋ ष कश्यप ने जब अपनी दूसरी पत्नी वनता से कया तब वनता ने जवाब दिया क वह मात्र **2** पुत्रों की कामना करती है, जो कद्रु के सभी पुत्रों की अपेक्षा ज्यादा ताकतवर हों। कश्यप ऋ ष ने उन दोनों की इच्छा को स्वीकार कर लया। कश्यप ऋ ष ने यज्ञ प्रारंभ कया। यज्ञ पूर्ण होने के बाद कद्रु को हजार अंडज मले जिनसे उन्हें हजार पुत्र उत्पन्न होने थे। कद्रु ने सभी अंडों को गर्म पानी में रख दिया और उनकी देखरेख करने लगी। इसके बाद ऋ ष कश्यप के बौने ऋ षयों ने वनता के दो पुत्रों की उत्पत्ति के लए यज्ञ प्रारंभ कया। इस यज्ञ के द्वारा उन्होंने एक ऐसे पुत्र का आह्वान कया जो इन्द्र देव से कहीं ज्यादा ताकतवर होता और साथ ही उसके भीतर अपने स्वरूप को बदलने के साथ-साथ भारी से भारी सामान उठाने की भी ताकत होती।

इंद्र पहुंचे ऋ ष कश्यप के पास:

इन्द्र को यह भनक लगी क इस यज्ञ के द्वारा एक नए और ताकतवर इन्द्र का जन्म होने वाला है तब वह अपने पता ऋ ष कश्यप के पास गए। जब ब ऋ ष कश्यप को बौने ऋ षयों की ये बात पता चली बहुत क्रो धत हुए। अपने पुत्र के सम्मान को बचाए रखने के लए कश्यप ऋ ष बौने ऋ षयों के पास गए और उनसे कहा क -उनके पुत्र से एक भूल हो गई है जिसके लए वे माफी के हकदार है, आप जिस ताकतवर इन्द्र का आह्वान कर रहे हैं उसे देवताओं का नहीं बल्कि प क्षयों के इन्द्र के रूप में बुलाएं।

कद्रु के अंडों से निकले सांप:

ऋ ष कश्यप के आग्रह को मानकर बौने ऋ षयों ने प क्षयों के ताकतवर इन्द्र का आह्वान कर यज्ञ से उत्पन्न हुए दो अंडे कश्यप ऋ ष को सौंप दिए। अपनी पत्नी वनता को अंडे सौंपते हुए कश्यप ऋ ष ने कहा क इनका बहुत ध्यान रखना और कुछ भी हो जाए अपना धीरज मत खोना। इतना कहकर ऋ ष कश्यप हिमालय पर तप करने के लए प्रस्थान कर गए। आगे चलकर कद्रु के हजार अंडों में से हजार सांप निकले, जो बहुत

ताकतवर थे। कद्रु उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न होती और उनके साथ खेलती। ले कन समय पूरा होने के बाद भी वनता के अंडों में से कुछ नहीं निकला।

बेटे ने दिया वनीता को श्राप:

कद्रु, वनता को ताना मारने का एक भी मौका नहीं छोड़ती थी। ऐसे में जलन में आकर उन्होंने अपना एक अंडा तोड़ दिया। यह देखने के लए क उसमें कुछ है भी या नहीं। अंडे के भीतर उसे अपना पुत्र दिखाई दिया जिसके शरीर का ऊपरी हिस्सा तो था ले कन बाकी का हिस्सा मात्र मांस का लोथड़ा था।इस पुत्र का नाम अरुण था। अरुण ने अपनी मां से कहा- पता के कहने के बाद भी आपने धैर्य खो दिया और मेरे शरीर का वस्तार नहीं होने दिया। इस लए मैं आपको श्राप देता हूं क आपको अपना जीवन एक सेवक के तौर पर बिताना होगा।

ऐसे हुआ गरुड़ का जन्म:

वनता को कद्रु की से वका बनना पड़ा और कुछ दिनों बाद अंडे में से निकले गरुड़, जिनका चेहरा, सर और चोंच चील की तरह और शरीर इंसान का था, का जन्म हुआ। वह भी अपनी मां के साथ सेवक के तौर पर ही रहा। गरुड़ बहुत ताकतवर थे और अपनी इच्छानुसार अपना स्वरूप बदल सकता थे।ऐसा माना जाता है क अगर मौत के बाद गरुड़ पुराण पढ़ी जाए तो मृत व्यक्ति की आत्मा को शांति और धरती के बंधन से मुक्ति मलती है।

गरुड़ देव के ये **8** रहस्य आपको हैरान कर देंगे:



गरूड़ भगवान के बारे में सभी जानते होंगे। यह भगवान वष्णु का वाहन हैं। भगवान गरूड़ को वनायक, गरुत्मत्, ताक्ष्र्य, वैनतेय, नागान्तक, वष्णुरथ, खगेश्वर, सुपर्ण और पन्नगाशन नाम से भी जाना जाता है। गरूड़ हिन्दू धर्म के साथ ही बौद्ध धर्म में भी महत्वपूर्ण पक्षी माना गया है। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार गरूड़ को सुपर्ण (अच्छे पंख वाला) कहा गया है। जातक कथाओं में भी गरूड़ के बारे में कई कहानियां हैं।

माना जाता है क गरूड़ की एक ऐसी प्रजाति थी, जो बु द्धमान मानी जाती थी और उसका काम संदेश और व्यक्तियों को इधर से उधर ले जाना होता था। कहते हैं क यह इतना वशालकाय पक्षी होता था जो क अपनी चोंच से हाथी को उठाकर उड़ जाता था।

गरूड़ जैसे ही दो पक्षी रामायण काल में भी थे जिन्हें जटायु और सम्पाती कहा जाता था। ये दोनों भी दंडकारण्य क्षेत्र में रहते वचरण करते रहते थे। इनके लए दूरियों का कोई महत्व नहीं था। स्थानीय मान्यता के मुताबिक दंडकारण्य के आकाश में ही रावण और जटायु का युद्ध हुआ था और जटायु के कुछ अंग दंडकारण्य में आ गरे थे इसी लए यहां एक मंदिर है। प क्षयों में गरुड़ को सबसे श्रेष्ठ माना गया है। यह समझदार और बु द्धमान होने के साथ-साथ तेज गति से उड़ने की क्षमता रखता है। गद्ध और गरुड़ में फर्क होता है। संपूर्ण भारत में गरुड़ का ज्यादा प्रचार और प्रसार कस लए है यह जानना जरूरी है। गरुड़ के बारे में पुराणों में अनेक कथाएं मलती है। रामायण में तो गरुड़ का सबसे महत्वपूर्ण पार्ट है।

आ खरकार भगवान वष्णु के वाहन गरूढ़ का क्या रहस्य है? क्यों हिन्दू में उनको वशेष महत्व दिया जाता है। क्या है उनके जन्म का रहस्य और कैसे वह एक पक्षी से भगवान बन गए:

1.पक्षी तीर्थ:

चेन्नई से **60** कलोमीटर दूर एक तीर्थस्थल है जिसे 'पक्षी तीर्थ' कहा जाता है। यह तीर्थस्थल वेद गरि पर्वत के ऊपर है। कई सदियों से दोपहर के वक्त गरूड़ का जोड़ा सुदूर आकाश से उतर आता है और फर मंदिर के पुजारी द्वारा दिए गए खाद्यान्न को ग्रहण करके आकाश में लौट जाता है।

सैकड़ों लोग उनका दर्शन करने के लए वहां पहले से ही उपस्थित रहते हैं। वहां के पुजारी के मुताबिक सतयुग में ब्रह्मा के **8** मानसपुत्र शव के शाप से गरूड़ बन गए थे। उनमें से **2** सतयुग के अंत में, **2** त्रेता के अंत में, **2** द्वापर के अंत में शाप से मुक्त हो चुके हैं। कहा जाता है क अब जो **2** बचे हैं, वे कलयुग के अंत में मुक्त होंगे।

2,गरुड़ हैं देव पक्षी:

गरूड़ का जन्म सतयुग में हुआ था, ले कन वे त्रेता और द्वापर में भी देखे गए थे। दक्ष प्रजापति की वनिता या वनता नामक कन्या का ववाह कश्यप ऋ ष के साथ हुआ। वनिता ने प्रसव के दौरान दो अंडे दिए। एक से अरुण का और दूसरे से गरुढ़ का जन्म हुआ। अरुण तो सूर्य के रथ के सारथी बन गए तो गरुड़ ने भगवान वष्णु का वाहन होना स्वीकार कया।

सम्पाती और जटायु इन्हीं अरुण के पुत्र थे। बचपन में सम्पाती और जटायु ने सूर्य-मंडल को स्पर्श करने के उद्देश्य से लंबी उड़ान भरी। सूर्य के असह्य तेज से व्याकुल होकर जटायु तो बीच से लौट आए, कंतु सम्पाती उड़ते ही गए। सूर्य के निकट पहुंचने पर सूर्य के ताप से सम्पाती के पंख जल गए और वे समुद्र तट पर गरकर चेतनाशून्य हो गए। चन्द्रमा नामक मुनि ने उन पर दया करके उनका उपचार कया और त्रेता में श्री सीताजी की खोज करने वाले वानरों के दर्शन से पुन: उनके पंख जमने का आशीर्वाद दिया।

3.सतयुग में देवताओं से युद्ध:

पुराणों में भगवान गरूड़ के पराक्रम के बारे में कई कथाओं का वर्णन मलता है। कहते हैं क उन्होंने देवताओं से युद्ध करके उनसे अमृत कलश छीन लया था। दरअस्ल, ऋ ष कश्यप की कई पत्नियां थीं जिनमें से दो वनिता और कद्रू थी। ये दोनों ही बहने थी, जो एक दूसरे से ईर्ष्या रखती थी। दोनों के पुत्र नहीं थे तो पति कश्यप ने दोनों को पुत्र के लए एक वरदान दे दिया। वनिता ने दो बलशाली पुत्र मांगे जब क कद्रू ने हजार सर्प पुत्र रूप में मांगे जो क अंडे के रूप में जन्म लेने वाले थे। सर्प होने के कारण कद्रू के हजार बेटे अंडे से उत्पन्न हुए और अपनी मां के कहे अनुसार काम करने लगे।

दोनों बहनों में शर्त लग गई थी क जिसके पुत्र बलशाली होंगे हारने वाले को उसकी दासता स्वीकार करनी होगी। इधर सर्प ने जो जन्म ले लया था ले कन वनिता के अंडों से अभी कोई पुत्र नहीं निकला था। इसी जल्दबाजी में वनिता ने एक अंडे को पकने से पहले ही फोड़ दिया। अंडे से अर्ध वक सत बच्चा निकला जिसका ऊपर का शरीर तो इंसानों जैसा था ले कन नीचे का शरीर अर्धपक्व था। इसका नाम अरुण था।

अरुण ने अपनी मां से कहा क 'पता के कहने के बाद भी आपने धैर्य खो दिया और मेरे शरीर का वस्तार नहीं होने दिया। इस लए मैं आपको श्राप देता हूं क आपको अपना जीवन एक सेवक के तौर पर बिताना होगा। अगर दूसरे अंडे में से निकला उनका पुत्र उन्हें इस श्राप से मुक्त ना करवा सका तो वह आजीवन दासी बनकर रहेंगी।'

भय से वनता ने दूसरा अंडा नहीं फोड़ा और पुत्र के शाप देने के कारण शर्त हार गई और अपनी छोटी बहन की दासी बनकर रहने लगी। बहुत लंबे काल के बाद दूसरा अंडा फूटा और उसमें से वशालकाय गरुड़ निकाला जिसका मुख पक्षी की तरह और बाकी शरीर इंसानों की तरह था। हालां क उनकी पस लयों से जुड़े उनके वशालकाय पंक्ष भी थे। जब गरुड़ को यह पता चला क उनकी माता तो उनकी ही बहन की दासी है और क्यों है यह भी पता चला, तो उन्होंने अपनी मौसी और सर्पों से इस दासत्व से मुक्ति के लए उन्होंने शर्त पूछी।

सर्पो ने वनता की दासता की मुक्ति के लए अमृत मंथन ने निकला अमृत मांग। अमृत लेने के लए गरुड़ स्वर्ग लोक की तरफ तुरंत निकल पड़े। देवताओं ने अमृत की सुरक्षा के लए तीन चरणों की सुरक्षा कर रखी थी, पहले चरण में आग की बड़े परदे बिछा रखे थे। दूसरे में घातक ह थयारों की आपस में घर्षण करती दीवार थी और अंत में दो वषैले सर्पो का पहरा। वहां तक भी पहुंचाने से पहले देवताओं से मुकाबला करना था। गरुड़ सब से भीड़ गए और देवताओं को बिखेर दिया। तब गरुड़ ने कई नदियों का जल मुख में ले पहले चरण की आग को बुझा दिया, अगले पथ में गरुड़ ने अपना रूप इतना छोटा कर लया के कोई भी ह थयार उनका कुछ न बिगाड़ सका और सांपों को अपने दोनों पंजो में पकड़कर उन्होंने अपने मुंह से अमृत कलश उठा लया और धरती की ओर चल पड़े।

ले कन तभी रास्ते में भगवान वष्णु प्रकट हुए और गरुड़ के मुंह में अमृत कलश होने के बाद भी उसके प्रति मन में लालच न होने से खुश होकर गरुड़ को वरदान दिया की वो आजीवन अमर हो जाएंगे। तब गरुड़ ने भी भगवान को एक वरदान मांगने के लए बोला

तो भगवान ने उन्हें अपनी सवारी बनने का वरदान मांगा। इंद्र ने भी गरुड़ को वरदान दिया की वो सांपों को भोजन रूप में खा सकेगा इस पर गरुड़ ने भी अमृत सकुशल वापसी का वादा कया।

अंत में गरुड़ ने सर्पों को अमृत सौंप दिया और भू म पर रख कर कहा क यह रहा अमृत कलश। मैंने यहां इसे लाने का अपना वादा पूरी कया और अब यह आपके सुपूर्द हुआ, ले कन इसे पीने के आप सभी स्नान करें तो अच्छा होगा।

जब वे सभी सर्प स्नान करने गए तभी वहां अचानक से भगवान इंद्र पहुंचे और अमृत कलश को वापस ले गए। ले कन कुछ बूंदे भू म पर गर गई जो घांस पर ठहर गई थी। सर्प उन बूंदों पर झपट पड़े, ले कन उनके हाथ कुछ न लगा। इस तरह गरुड़ की शर्त भी पूरी हो गई और सर्पों को अमृत भी नहीं मला।

4.त्रेता युग में:

जब रावण के पुत्र मेघनाथ ने श्रीराम से युद्ध करते हुए श्रीराम को नागपाश से बांध दिया था, तब देव र्ष नारद के कहने पर गरूड़ ने नागपाश के समस्त नागों को खाकर श्रीराम को नागपाश के बंधन से मुक्त कर दिया था। भगवान राम के इस तरह नागपाश में बंध जाने पर श्रीराम के भगवान होने पर गरूड़ को संदेह हो गया था।

गरूड़ का संदेह दूर करने के लए देव र्ष नारद उन्हें ब्रह्माजी के पास भेज देते हैं। ब्रह्माजी उनको शंकरजी के पास भेज देते हैं। भगवान शंकर ने भी गरूड़ को उनका संदेह मटाने के लए काकभुशुण्डिजी नाम के एक कौवे के पास भेज दिया। अंत में काकभुशुण्डिजी ने राम के चरित्र की प वत्र कथा सुनाकर गरूड़ के संदेह को दूर कया।

लोमश ऋ ष के शाप के चलते काकभुशुण्डि कौवा बन गए थे। लोमश ऋ ष ने शाप से मुक्त होने के लए उन्हें राम मंत्र और इच्छामृत्यु का वरदान दिया। कौवे के रूप में ही उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन व्यतीत कया। वाल्मी क से पहले ही काकभुशुण्डि ने रामायण गरूड़ को सुना दी थी। इससे पूर्व हनुमानजी ने संपूर्ण रामायण पाठ लखकर समुद्र में फेंक दी थी। वाल्मी क श्रीराम के समकालीन थे और उन्होंने रामायण तब लखी, जब रावण-वध के बाद राम का राज्या भषेक हो चुका था।

5.हनुमानजी ने तोड़ दिया था गरुड़ का अ भमान :

भगवान श्रीकृष्ण को वष्णु का अवतार माना जाता है। वष्णु ने ही राम के रूप में अवतार लया और वष्णु ने ही श्रीकृष्ण के रूप में। श्रीकृष्ण की **8** पत्नियां थीं- रुक्म ण, जाम्बवंती, सत्यभामा, का लंदी, मत्रबिंदा, सत्या, भद्रा और लक्ष्मणा। इसमें से सत्यभामा को अपनी सुंदरता और महारानी होने का घमंड हो चला था तो दूसरी ओर सुदर्शन चक्र खुद को सबसे शक्तिशाली समझता था और वष्णु वाहन गरूड़ को भी अपने सबसे तेज उड़ान भरने का घमंड था।

एक दिन श्रीकृष्ण अपनी द्वारिका में रानी सत्यभामा के साथ संहासन पर वराजमान थे और उनके निकट ही गरूड़ और सुदर्शन चक्र भी उनकी सेवा में वराजमान थे। बातों ही बातों में रानी सत्यभामा ने व्यंग्यपूर्ण लहजे में पूछा- हे प्रभु, आपने त्रेतायुग में राम के रूप में अवतार लया था, सीता आपकी पत्नी थीं। क्या वे मुझसे भी ज्यादा सुंदर थीं**?**

भगवान सत्यभामा की बातों का जवाब देते उससे पहले ही गरूड़ ने कहा- भगवान क्या दुनिया में मुझसे भी ज्यादा तेज गति से कोई उड़ सकता है। तभी सुदर्शन से भी रहा नहीं गया और वह भी बोल उठा क भगवान, मैंने बड़े-बड़े युद्धों में आपको वजयश्री दिलवाई है। क्या संसार में मुझसे भी शक्तिशाली कोई है**?** द्वारकाधीश समझ गए क तीनों में अ भमान आ गया है। भगवान मंद-मंद मुस्कुराने लगे और सोचने लगे क इनका अहंकार कैसे नष्ट कया जाए, तभी उनको एक युक्ति सूझी...

भगवान मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे। वे जान रहे थे क उनके इन तीनों भक्तों को अहंकार हो गया है और इनका अहंकार नष्ट होने का समय आ गया है। ऐसा सोचकर उन्होंने गरूड़ से कहा क हे गरूड़**!** तुम हनुमान के पास जाओ और कहना क भगवान राम, माता सीता के साथ उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। गरूड़ भगवान की आज्ञा लेकर हनुमान को लाने चले गए।

इधर श्रीकृष्ण ने सत्यभामा से कहा क देवी, आप सीता के रूप में तैयार हो जाएं और स्वयं द्वारकाधीश ने राम का रूप धारण कर लया।

तब श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र को आज्ञा देते हुए कहा क तुम महल के प्रवेश द्वार पर पहरा दो और ध्यान रहे क मेरी आज्ञा के बिना महल में कोई भी प्रवेश न करने पाए। सुदर्शन चक्र ने कहा, जो आज्ञा भगवान और भगवान की आज्ञा पाकर चक्र महल के प्रवेश द्वार पर तैनात हो गया।

गरूड़ ने हनुमान के पास पहुंचकर कहा क हे वानरश्रेष्ठ! भगवान राम, माता सीता के साथ द्वारका में आपसे मलने के लए पधारे हैं। आपको बुला लाने की आज्ञा है। आप मेरे साथ च लए। मैं आपको अपनी पीठ पर बैठाकर शीघ्र ही वहां ले जाऊंगा।

हनुमान ने वनयपूर्वक गरूड़ से कहा, आप च लए बंधु, मैं आता हूं। गरूड़ ने सोचा, पता नहीं यह बूढा वानर कब पहुंचेगा। खैर मुझे क्या कभी भी पहुंचे, मेरा कार्य तो पूरा हो गया। मैं भगवान के पास चलता हूं। यह सोचकर गरूड़ शीघ्रता से द्वारका की ओर उड़ चले।

ले कन यह क्या? महल में पहुंचकर गरूड़ देखते हैं क हनुमान तो उनसे पहले ही महल में प्रभु के सामने बैठे हैं। गरूड़ का सर लज्जा से झुक गया। तभी श्रीराम के रूप में श्रीकृष्ण ने हनुमान से कहा क पवनपुत्र तुम बिना आज्ञा के महल में कैसे प्रवेश कर गए? क्या तुम्हें कसी ने प्रवेश द्वार पर रोका नहीं?

हनुमान ने हाथ जोड़ते हुए सर झुकाकर अपने मुंह से सुदर्शन चक्र को निकालकर प्रभु के सामने रख दिया। हनुमान ने कहा क प्रभु आपसे मलने से मुझे क्या कोई रोक सकता है? इस चक्र ने रोकने का तनिक प्रयास कया था इस लए इसे मुंह में रख मैं आपसे मलने आ गया। मुझे क्षमा करें। भगवान मंद-मंद मुस्कुराने लगे।

अंत में हनुमान ने हाथ जोड़ते हुए श्रीराम से प्रश्न कया, हे प्रभु! मैं आपको तो पहचानता हूं आप ही श्रीकृष्ण के रूप में मेरे राम हैं, ले कन आज आपने माता सीता के स्थान पर कस दासी को इतना सम्मान दे दिया क वह आपके साथ संहासन पर वराजमान है।

अब रानी सत्यभामा का अहंकार भंग होने की बारी थी। उन्हें सुंदरता का अहंकार था, जो पलभर में चूर हो गया था। रानी सत्यभामा, सुदर्शन चक्र व गरूड़ तीनों का गर्व चूर-चूर हो गया था। वे भगवान की लीला समझ रहे थे। तीनों की आंखों से आंसू बहने लगे और वे भगवान के चरणों में झुक गए। भगवान ने अपने भक्तों के अंहकार को अपने भक्त हनुमान द्वारा ही दूर कया। अद्भुत लीला है प्रभु की।

6.गरूड़ घंटी का महत्व है:



मंदिर के द्वार पर और वशेष स्थानों पर घंटी या घंटे लगाने का प्रचलन प्राचीन काल से ही रहा है। यह घंटे या घंटियां **4** प्रकार की होती हैं:-

1. गरूड़ घंटी : गरूड़ घंटी छोटी-सी होती है जिसे एक हाथ से बजाया जा सकता है।

2. द्वार घंटी : यह द्वार पर लटकी होती है। यह बड़ी और छोटी दोनों ही आकार की होती है।

3. हाथ घंटी : पीतल की ठोस एक गोल प्लेट की तरह होती है जिसको लकड़ी के एक गद्दे से ठोककर बजाते हैं।

4. घंटा : यह बहुत बड़ा होता है। कम से कम **5** फुट लंबा और चौड़ा। इसको बजाने के बाद आवाज कई कलोमीटर तक चली जाती है।

7.गरूड़ ध्वज:

महाभारत में गरूड़ ध्वज था। प्राचीन मंदिरों के द्वार पर एक ओर गरूड़, तो दूसरी ओर हनुमानजी की मूर्ति आवेष्ठित की जाती रही है। घर में रखे मंदिर में गरूड घंटी और मंदिर के शखर पर गरूड़ ध्वज होता है।

गरुड़ भारत का धा र्मक और अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी है। भारत के इतिहास में स्वर्ण युग के रूप में जाना जाने वाले गुप्त शासकों का प्रतीक चन्ह गरुड़ ही था। कर्नाटक के होयसल शासकों का भी प्रतीक गरुड़ था। गरुड़ इंडोने शया, थाईलैंड और मंगो लया आदि में भी सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में लोक प्रय है। इंडोने सया का राष्ट्रिय प्रतीक गरुड़ है। वहां की राष्ट्रिय एयरलाइन्स का नाम भी गरुड़ है। इंडोने शया की सेनाएं संयुक्त राष्ट्र मशन पर गरुड़ नाम से जाती है। इंडोने शया पहले एक हिन्दू राष्ट्र ही था। थाईलैंड का शाही परिवार भी प्रतीक के रूप में गरुड़ का प्रयोग करता है। थाईलैंड के कई बौद्ध मंदिर में गरुड़ की मूर्तियाँ और चत्र बने हैं। मंगो लया की राजधानी उलनबटोर का प्रतीक गरुड़ है।

8.गरूड़ पुराण:

गरूड़ नाम से एक व्रत भी है। गरूड़ नाम से एक पुराण भी है। गरूड़ पुराण में, मृत्यु के पहले और बाद की स्थिति के बारे में बताया गया है। हिन्दू धर्मानुसार जब कसी के घर में कसी की मौत हो जाती है तो गरूड़ पुराण का पाठ रखा जाता है। गरूड़ पुराण में उन्नीस हजार श्लोक कहे जाते हैं, कन्तु वर्तमान समय में कुल सात हजार श्लोक ही उपलब्ध हैं।

गरूड़ पुराण में ज्ञान, धर्म, नीति, रहस्य, व्यावहारिक जीवन, आत्म, स्वर्ग, नर्क और अन्य लोकों का वर्णन मलता है। इसमें भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, सदाचार, निष्काम कर्म की महिमा के साथ यज्ञ, दान, तप तीर्थ आदि शुभ कर्मों में सर्व साधारणको प्रवृत्त करने के लए अनेक लौ कक और पारलौ कक फलों का वर्णन कया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें आयुर्वेद, नीतिसार आदि वषयों के वर्णनके साथ मृत जीव के अन्तिम समय में कए जाने वाले कृत्यों का वस्तार से निरूपण कया गया है। आत्मज्ञान का ववेचन भी इसका मुख्य वषय है। गरुड़ पुराण के अनुसार ऐसे लोगों को मुत्यु के बाद होती है स्वर्ग की प्राप्ति, आप भी जानें

हिन्दू धर्म के सभी ग्रंथों में जन्म और मृत्यु से जुड़ी कथाओं का वर्णन मलता है। परन्तु गरुड़ पुराण ही एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें पूर्णत: जन्म और मृत्यु के रहस्यों का वर्णन कया गया है। आपने कई बार ध्यान दिया होगा क जब कसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तो लोग कहते हैं क भगवान उस दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में जगह दें। अर्थात उसे स्वर्ग में स्थान मले। ले कन यह बात भी सच है क कसी के कहने या प्रार्थना करने मात्र

से कसी भी व्यक्ति को स्वर्ग में जगह नहीं मलती है। बल्कि उसके द्वारा जीवन में कए गए कर्मों के अनुसार ही उसे स्वर्ग या नर्क में स्थान मलता है। जिसका वर्णन **18** पुराणों में से एक प्रमुख पुराण यानि गरुड़ पुराण में कया गया है। तो आइए आप भी जानें क कैसी आत्मा को स्वर्ग में स्थान मलता है।

गरुड़ पुराण के धर्म कांड के प्रेतकल्प भाग में मृत्यु के बाद आत्मा के साथ होने वाले सभी कार्यों का वर्णन कया गया है। इसी भाग में पक्षी श्रेष्ठ गरुण के पूछने पर भगवान श्रीहरि अर्थात भगवान वष्णु ने कैसी आत्मा को कहां जगह मलती है इसके बारे में भी बताया है। गरुड़ पुराण के अनुसार जो मनुष्य जी वत रहते हुए दुष्ट प्रवृति के होते हैं अथवा गलत कार्य करते हैं, वो व्यक्ति नर्क जाते हैं। और जो लोग अच्छा काम करते हैं वो लोग स्वर्ग जाते हैं। स्वर्ग जिसे देवताओं का निवास स्थान माना जाता है। और जो बुरे कर्म करते हैं उन्हें नर्क में ले जाकर दं डत कया जाता है। जब क अच्छे कर्म करने वाले व्यक्तियों को स्वर्ग में सभी तरह की सुख सु वधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

भगवान वष्णु बताते हैं क जिन आत्माओं को स्वर्ग में स्थान मलता है उन्हें यमराज स्वयं अपने भवन से स्वर्ग के द्वार तक छोड़ने आते हैं। जहां अप्सराएं उनका स्वागत करती हैं। इसके अलावा जो लोग जीवन भर दूसरों के बारे में सोचते हैं और लगातार परोपकार करते रहते हैं, उन्हें मृत्यु के पश्चात बिना कसी संदेह के स्वर्ग मलता है। वहीं जो लोग जीवन भर केवल अपने बारे में सोचते हैं और कभी कसी का हित नहीं करते हैं ऐसे मनुष्यों को मृत्यु के पश्चात नर्क में स्थान मलता है। जहां यमदूत उन्हें कई तरह की यातनाएं देते हैं।

साथ ही जो लोग समाज के लए कुएं, तालाब, पानी और मार्ग आदि का निर्माण करवाते हैं उन्हें भी मृत्यु के बाद स्वर्ग में सम्मान के साथ स्थान दिया जाता है। वहीं जो लोग कुएं, तालाब, प्याऊ और मार्ग आदि को हानि पहुंचाते हैं, उन्हें मृत्यु के पश्चात नर्क में ले जाया जाता है। इतना ही नहीं जो मनुष्य दूसरों से अपना पेट झूठ बोलकर भरते हैं, या फर कोई गलत काम करके भरते हैं, उन्हें भी नर्क में स्थान मलता है।

गरुड़ पुराण में भगवान वष्णु जी कहते हैं क जो मनुष्य स्त्रियों का सम्मान करता है, कन्या को बोझ नहीं, बल्कि देवी लक्ष्मी का रूप मानकर उसकी पूजा करता है, आत्महत्या जैसा प्रकृति वरुद्ध कदम नहीं उठाता है, बल्कि प्रकृति के द्वारा निश्चित जीवन

चक्र को पूरा कर मृत्यु को प्राप्त करता है। उस व्यक्ति को भी मृत्यु के पश्चात स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

वही जो मनुष्य कसी स्त्री की हत्या करता है, आत्महत्या, गर्भहत्या, ब्रह्महत्या, गऊ हत्या करते हैं, या फर कसी कन्या को बेच देते हैं, या फर अपने लोभ के लए झूठ बोलते हैं, ऐसी आत्मा को नर्क में जगह मलती है।

गरुड़ पुराण में भगवान वष्णु ने बताया है क जो लोग धर्म के अनुसार आचरण करते हैं, ऋ ष-मुनियों का आदर करते हैं, और वेद-पुराणों का अध्ययन करते हैं, उन्हें भी मृत्यु के बाद स्वर्ग की प्राप्ति होती है। साथ ही जो लोग धर्म को नहीं मानते हैं और धर्म की निन्दा करते हैं, और वेद-पुराण आदि धर्मशास्त्रों की निन्दा करते हैं, और उनका मजाक उड़ाते हैं, वो व्यक्ति नर्क जाते हैं।

कहता है गरुड़ पुराण, महिलाओं को कभी नहीं करने चाहिए ये **4** काम:

इसमें महिलाओं के लए ऐसी बातों का भी उल्लेख कया गया है जो उनके जीवन को नष्ट होने से बचाती हैं। जानिए, उन बातों के बारे में जिनसे महिलाओं को बचना चाहिए

गरुड़ पुराण में गृहस्थ जीवन के लए उपयोगी अनेक बातें बताई गई हैं। यह ग्रंथ न केवल मृत्यु के पश्चात यानी परलोक के जीवन के बारे में बताता है, बल्कि यह मनुष्य जीवन को सुखी बनाने के बारे में भी कल्याणकारी बातें बताता है।

1.गरुड़ पुराण कहता है क कसी भी महिला को अत्य धक वरह से बचना चाहिए अर्थात अपने जीवनसाथी से दीर्घकाल तक दूर नहीं रहना चाहिए। इससे उसे पारिवारिक स्तर पर अनेक समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। अत: सुर क्षत एवं सम्मानजनक जीवन के लए अच्छा है क वह अपने जीवनसाथी के साथ ही रहे।

2.स्त्री हो या पुरुष, हमेशा अच्छे चरित्र के लोगों से ही मत्रता करनी चाहिए। बुरे चरित्र के लोग न केवल खुद का पतन कराते हैं, बल्कि उनके कारण वे लोग भी पतन को प्राप्त होते हैं जो उनके साथ रहते हैं। दुष्ट चरित्र के लोगों का शीघ्र ही त्याग कर देना

चाहिए। बेहतर होगा क ऐसे लोगों की संगति कभी न करें। महिलाओं का इनसे दूर रहना इस लए भी जरूरी है क्यों क संपूर्ण गृहस्थी उन्हीं पर केंद्रित है

3.महिलाओं को हर व्यक्ति का यथायोग्य सम्मान करना चाहिए और यह बात सबके लए लागू होती है। वर्तमान में कया गया अपमान भ वष्य में वनाश का कारण भी बन सकता है, इस लए कभी कसी को दुर्वचन, कठोर बातें नहीं कहनी चाहिए। जो महिला परिजनों के साथ वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग करती है, कोई आश्चर्य नहीं क उसके घर में शांति कायम नहीं रहती।

4.महिला के लए जरूरी है क उसका जीवन सुर क्षत हो, मान-सम्मान की रक्षा हो। इसके लए आवश्यक है क वह स्वयं के घर में रहे। पराए घर में लंबे समय तक रहने से वहां न तो मान-सम्मान होता है और न ही उसका जीवन सुर क्षत रह सकता है। इससे उसकी छ व नष्ट होने का भय रहता है। अत: असु वधाओं से बचने के लए उसे स्वयं के ही घर में रहना चाहिए।

गरुड़ पक्षीराज व भगवान वष्णु का वाहन:



हिंदू मान्यताओं के अनुसार गरुड़ प क्षयों के राजा और भगवान वष्णु के वाहन हैं। गरुड़ कश्यप ऋ ष और उनकी दूसरी पत्नी वनता की सन्तान हैं

गरुड़ की माता को शाप:

दक्ष प्रजापति की कद्रू और वनता नामक दो कन्याएँ थीं। उन दोनों का ववाह कश्यप ऋ ष के साथ हुआ। कश्यप ऋ ष से कद्रू ने एक हजार नाग पुत्र और वनता ने केवल दो

तेजस्वी पुत्र वरदान के रूप में माँगे। वरदान के परिणामस्वरूप कद्रू ने एक हजार अंडे और वनता ने दो अंडे प्रसव कये। कद्रू के अंडों के फूटने पर उसे एक हजार नाग पुत्र मल गये। कन्तु वनता के अंडे उस समय तक नहीं फूटे। उतावली होकर वनता ने एक अंडे को फोड़ डाला। उसमें से निकलने वाले बच्चे का ऊपरी अंग पूर्ण हो चुका था कन्तु नीचे के अंग नहीं बन पाये थे। उस बच्चे ने क्रो धत होकर अपनी माता को शाप दे दिया क माता! तुमने कच्चे अंडे को तोड़ दिया है इस लये तुझे पाँच सौ वर्षों तक अपनी सौत की दासी बनकर रहना होगा। ध्यान रहे दूसरे अंडे को अपने से फूटने देना। उस अंडे से एक अत्यन्त तेजस्वी बालक होगा और वही तुझे इस शाप से मुक्ति दिलायेगा। इतना कहकर अरुण नामक वह बालक आकाश में उड़ गया और सूर्य के रथ का सारथी बन गया

वनता का दासी बनना:

एक दिन कद्रू और वनता की दृष्टि समुद्र मन्थन से निकले हुये उच्चैःश्रवा घोड़े पर पड़ी। कद्रू ने कहा क उस घोड़े की पूँछ काली है जब क वनता ने उसे सफेद रंग का बताया। इस पर दोनों में शर्त हुई क जिसका कथन गलत होगा उसे दूसरे की दासी बनना होगा। दोनों शर्त मानकर पूँछ देखने चलीं। कद्रू ने चुपचाप अपने पुत्रों को उस पूँछ से लपट जाने की आज्ञा दी इससे पूँछ काली दिखाई पड़ने लगी। वनता हार मानकर कद्रू की दासी बन गयी।

वनता को दासता से मुक्ति:

एक दिन कद्रू ने गरुड़ से कहा क तुम मेरी दासी के पुत्र हो इस लये तुम मेरे पुत्रों को घमाने ले जाओ। गरुड़ को इस पर बहुत क्रोध आया कन्तु उन्होंने सौतेली माता की आज्ञा मान ली। सर्पों को घुमाते हुये गरुड़ ने उनसे अपनी माता को दासता से मुक्त कर देने के लये कहा। इस पर सर्पों ने कहा क यदि तुम हम लोगों के लये अमृत ला दोगे तो हम तुम्हारी माता को दासता से मुक्त कर देंगे। गरुड़ ने इन्द्र सहित सभी देवताओं को परास्त कर अमृत घट उनसे छीन लया। गरुड़ के पराक्रम से प्रभा वत होकर इन्द्र ने गरुड़ से मत्रता कर ली।

मत्रता हो जाने पर इन्द्र बोले, " मत्र! आप इस अमृत घट को मुझे वापस दे दीजिये क्योंक आप जिनके लये इसे ले जा रहे हैं वे स्वभावतः बहुत दुष्ट हैं।" इस पर गरुड़ ने

कहा, "मुझे पता है कन्तु मैं अपनी माता को दासता से मुक्ति दिलाने हेतु इसे उनके पास ले जा रहा हूँ। आप वहाँ से इसे वापस ला सकते हैं। हठात् उनकी भेंट नारायण (वष्णु) से हो गई। नारायण ने गरुड़ से प्रसन्न होकर वर माँगने के लये कहा। इस पर गरुड़ ने सदा उनकी ध्वजा में बने रहने का वर ले लया। साथ ही वे नारायण के वाहन भी बन गये। इसके पश्चात् गरुड़ अमृत घट को सर्पों को देकर अपनी माता वनता को दासता से मुक्ति दिलाई। अमृत घट को कुशासन पर रख कर सारे सर्प प वत्र होने के लये स्नान करने चले गये। इसी बीच इन्द्र चोरी से उस अमृत घट को उठा कर ले गये।

गरुड़ का रामचन्द्र के प्रति भ्रम:

रावण के पुत्र मेघनाथ ने लक्ष्मण से युद्ध करते हुये लक्ष्मण को नागपाश से बाँध दिया था। देव र्ष नारद के कहने पर गरूड़, जो क सर्पभक्षी थे, ने नागपाश के समस्त नागों को खाकर राम को नागपाश के बंधन से छुड़ाया। राम के इस तरह नागपाश में बँध जाने पर राम के परमब्रह्म होने पर गरुड़ को सन्देह हो गया। गरुड़ का सन्देह दूर करने के लये देव र्ष नारद उन्हें ब्रह्मा के पास भेजा। ब्रह्मा जी ने उनसे कहा क तुम्हारा सन्देह भगवान शंकर दूर कर सकते हैं। भगवान शंकर ने भी गरुड़ को उनका सन्देह मटाने के लये काकभुशुण्डि जी के पास भेज दिया। अन्त में काकभुशुण्डि जी राम के चरित्र की प वत्र कथा सुना कर गरुड़ के सन्देह को दूर कया।

गरुडजी के बारह नाम इस प्रकार हैं-

1.सुपर्ण (सुंदरपंखवाले)
2.वैनतेय (वनताके पुत्र)
3.नागारि (नागोकें शत्रु)
4.नागभीषण (नागोंके लये भयंकर)
5.जितान्तक (कालको भी जीतनेवाले)
6. वषारिं (वषके शत्रु)
7.अजित (अपराजेय)
8. वश्वरूपी (सर्बस्वरूप)
9.गरुत्मान् (अतिशय पराक्रमसम्पन्न)
10 खगश्रेष्ठ (प क्षयोंमे सर्वश्रेष्ठ)
11.तार्क्ष (गरुड)

12. कश्यपनन्दन(महर्षि कश्यपके पुत्र)

अगले जन्म में आप क्या बनेंगे? गरुड़ पुराण की ये **10** बातें पढ़िए, खुल जाएगा सारा रहस्य:

गरुड़ पुराण में भगवान विष्णु की भक्ति के अलावा व्यक्ति के कर्मों और उस आधार पर उसके अगले सफर का जिक्र किया गया है।

हिंदू धर्म में गरुड़ पुराण का बहुत महत्व है। इसका पाठ आमतौर पर किसी की मृत्यु के बाद करने की परंपरा है। इसमें भगवान विष्णु की भक्ति की महिमा सहित मृत्यु और उसके बाद अगले जन्म की बात कही गई है। इसके एक भाग में बताया गया है कि मृत्यु के बाद किसी व्यक्ति के आत्मा का अगला सफर कैसा होता है। व्यक्ति के कर्मों और पापों के आधार पर गरुड़ पुराण के पांचवें अध्याय में यह भी बताया गया है कि वह अगले जन्म में क्या बनेगा। इस पुराण में श्राद्ध-तर्पण, मुक्ति के उपायों आदि का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। पक्षीराज गरुड़ को भगवान विष्णु का वाहन बताया गया है। पौराणिक कथा के अनुसार गरुड़ जी ने एक बार भगवान विष्णु से मृत्यु के बाद प्राणियों की स्थिति, उसकी यमलोक यात्रा, कर्मों से प्राप्त होने वाले फल, अगले जन्म, पापियों को मिलने वाली सजा जैसे सवाल पूछे थे।

भगवान विष्णु ने तब गरुड़ जी की जिज्ञासा शांत करते हुए उन्हें जो उपदेश दिये, उसी का इसमें जिक्र है। इसलिए इस पुराण को 'गरुड़ पुराण' कहा गया है। आईए, आज हम आपको बताते हैं कि गरुड़ पुराण के अनुसार पापों के आधार पर कोई व्यक्ति अगले जन्म में क्या बनता है।

1. गरुड़ पुराण में कहा गया है जो व्यक्ति अपने किसी दोस्त से धोखा करता है या उन्हें ठगता है, ऐसे शख्स पहाड़ों पर रहने वाले गिद्ध बनते हैं। वे तब अपना पेट भरने के लिए मरे हुए जानवरों को खाते हैं।

2. गरुड़ पुराण के अनुसार जो व्यक्ति धर्म का वरोध करता है या उसका पालन नहीं करता तो वह कुत्ते, गधे या ऊंट के रूप में जन्म लेता है। साथ ही अगर कोई मनुष्य नारी की हत्या करता है तो अपने अगले जन्म में वह कोढ़ी बनता है।

3. कसी दोस्त की पत्नी पर बुरी नजर रखने वाला शख्स गधे के रूप में जन्म लेता है। वहीं, दूसरे की पत्नी से संबंध बनाने वाला व्यक्ति घोर नरक में जाता है। इसके बाद उसे भे ड़या, कुत्ता, गद्ध, सयार, सांप, कौआ और अंत में बगुला की योनि प्राप्त होती है।

4. ऐसा ही ववाहेत्तर संबंध में दिलचस्पी रखने वाली औरतें अगले जन्म में चमगादड़ बनती हैं। वहीं, स्त्री पर हाथ उठाने वाला व्यक्ति अगले जन्म में भी व भन्न प्रकार के शारीरिक कष्टों और बीमारियों से जूझता है।

5. जो लोग अक्सर अपने माता- पता, भाई-बहन या फर गुरु के साथ बुरा व्यवहार करते हैं या उन्हें प्रता ड़त करते हैं। उनका अगला जन्म होता तो है ले कन कई जन्मों तक वे धरती पर नहीं आते और गर्भ में ही उनकी मृत्यु हो जाती है।

6. गरुण पुराण में ये भी कहा गया है क सुयोग्य पात्र को शक्षा नहीं देनेवाले ब्राह्मण अगले जन्म में बैल बनते हैं।

7. चालाकी या कपट कर दूसरे व्यक्ति को धोखा देने वाला मनुष्य अगले जन्म में उल्लू बनता है।

8. सास-ससुर को अपशब्द कहने वाली और अक्सर कलह करने वाली स्त्री जलौका अर्थात जल जोंक होती है। अपने पति का परित्याग करके परपुरुष का सेवन करने वाली स्त्री वल्गुनी (चमगादड़ी), छिपकली अथवा दो मुंह वाली स र्पणी बनती है।

9. गरुण पुराण के अनुसार ब्रह्महत्यारा क्षय रोगी होता है, गाय की हत्या करने वाला मूर्ख और कुबड़ा होता है।

10. द्वेष वश या कोई आरोप लगाकर स्त्री का परित्याग कर देने वाला बहुत काल तक चक्रवाक (चकोर) होता है। ये एक प्रकार का पक्षी है जिसके बारे में कहा गया है इसकी बोली कर्कश होती है।

नरक में दुख भोगने के बाद फर मलता है अगला जन्म, इस रूप में होते हैं पैदा:

सनातन धर्म में मान्यता है क व्यक्ति को अपनी मृत्यु के बाद कर्मों के आधार पर स्वर्ग और नरक की प्राप्ति होती है। इन कर्मों का निर्धारण और फल कैसे पता चलता है, इस बारे में गरुड़ पुराण में वस्तार से बताया गया है। गरुड़, भगवान वष्णु के वाहन हैं और उनकी इच्छा पर ही स्वयं श्रीहरि वष्णु ने उन्हें जन्म, मृत्यु, कर्मफल और पुनर्जन्म के बारे में बताया। क्यों क वश्व वधाता ने स्वयं ही यह कर्मफल गरुड़ को सुनाया इस लए इस पुराण का नाम गरुड़ पुराण रखा गया। आइए, जानते हैं क नरक में दुख भोगने के बाद आत्मा को कस रूप में जन्म मलता है...

1.जैसा पाप वैसा जन्म:

गरुड़ भगवान वष्णु से वनती करते हुए कहते हैं क हे भगवान, जब आत्मा अपने कए हुए पाप कर्मों के आधार पर नरक की यातना भोग लेती है तो फर उसे कस रूप में जन्म मलता है? इस पर श्रीहरि वष्णु कहते हैं 'नरक में पाप कर्मों की सजा प्राप्त करने के बाद जब आत्मा के फर से जन्म लेने का समय आता है तो तब भी उसके कर्मों का प्रभाव रहता है और इसी के आधार पर उसे नया जन्म मलता है।'

2.इनकी हत्या से मलता है ऐसा जन्म:

जिन आत्माओं ने मानव जीवन में ब्रह्म हत्या की हो वह नरक की यातना भोगने के बाद अगले जन्म में क्षय रोगी बनता है। गोहत्या करनेवाला मूर्ख या कुबड़ा, कन्या की हत्या करनेवाला कोढ़ी, गर्भपात करने या करानेवाला भल्ल रोगी बनता है। इन सभी को चांडाल रूप में जन्म लेनेवाला माना जाता है।

3.महिलाओं का शोषण करनेवाला:

कसी भी रूप में महिलाओं का शोषण करनेवाला या शोषण करानेवाला व्यक्ति भयानक रोगों का सामना करता है और पल-पल पीड़ा में रहता है। अप्राकृतिक रूप से संबंध बनानेवाला अगले जन्म में नपुंसक, गुरु पत्नी के साथ दुराचार करनेवाला कुष्ठ रोगी होता है।

4.इनके सेवन का होता है ऐसा प्रभाव:

गरुड़ पुराण के अनुसार, मांस खानेवाले व्यक्ति को अगले जन्म में अंगों से संबं धत समस्या होती है। मंदिरा या शराब पीनेवाले के दांत काले होते हैं और जीभ के स्वाद के कारण न खानेवाली चीजों को खा लेनेवाला ब्राह्मण जलोदरी(पेट में पानी भर जाने की बीमारी के चलते पेट फूलना) बनता है। दूसरों का ध्यान कए बिना मीठा खानेवाले को गले से संबं धत बीमारियां रहती हैं। श्राद्ध के समय में अशुद्ध दान देनेवाले लोगों को कुष्ठ रोग होता है।

5.गुरु का अपमान करने वाला:

अ भमान के कारण गुरु का अपमान करनेवाले व्यक्ति को मर्गी के दौरे पड़ते हैं। वेदशास्त्रों की निंदा करनेवाला पांडुरोगी, झूठी गवाही देनेवाला जन्म से अंधा, गाय तथा ब्राह्मण को लात मारनेवाला लंगड़ा, झूठ बोलनेवाला हकला, झूठी बातों में रु च रखनेवाला ब धर होता है। आग लगानेवाला खल्वाटी होता है। मांस बेचनेवाला दुर्भाग्यशाली होता है।

6.रत्न चुराने की मलती है ऐसी सजा:

रत्न चोरी करनेवाले व्यक्ति को मान सक समस्याएं, स्वर्ण चुरानेवाले को नाखूनों की समस्या और अन्य धातुओं को चुरानेवाला निर्धन रहता है। अन्न की चोरी करनेवाला चूहा, जल की चोरी करनेवाला चातक और वष चुरानेवाला बिच्छू बनता है। सुगं धत चीजों को चुरानेवाला छुछुंदर और शहद चुरानेवाला मधुमक्खी बनता है।

7.ऐसे लोग बनते हैं बकरा:

गरुड़ पुराण के अनुसार, जो लोग हिंसा करके अपने घर और परिवार का पालन-पोषण करते हैं, लूटपाट करते हैं, जीवों पर हिंसा करते हैं और शकार खेलते हैं, ऐसे सभी लोग अगले जन्म में कसी कसाई के घर में पलनेवाला या उसके हत्थे चढ़नेवाला बकरा बनते हैं। जो लोग जहर पीकर आत्महत्या करते हैं, वे अगले जन्म में पहाड़ पर रहनेवाले काले नाग बनते हैं।

भगवान वष्णु के 24 अवतार कौन से हैं, जानिए



जब-जब पृथ्वी पर कोई संकट आता है तो भगवान अवतार लेकर उस संकट को दूर करते हैं। भगवान शव और भगवान वष्णु ने कई बार पृथ्वी पर अवतार लया है। भगवान वष्णु के **24** वें अवतार के बारे में कहा जाता है क'कल्कि अवतार'के रूप में उनका आना सुनिश्चित है।इन **24** अवतार में से **10** अवतार वष्णु जी के मुख्य अवतार माने जाते हैं। यह है मत्स्य अवतार, कूर्म अवतार, वराह अवतार, नृ संह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, राम अवतार. कृष्ण अवतार, बुद्ध अवतार, कल्कि अवतार।

1- श्री सनकादि मुनि

2-

धर्म ग्रंथों के अनुसार सृष्टि के आरंभ में लोक पतामह ब्रह्मा ने अनेक लोकों की रचना करने की इच्छा से घोर तपस्या की। उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान वष्णु ने तप अर्थ वाले सन नाम से युक्त होकर सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार नाम के चार मुनियों के रूप में अवतार लया। ये चारों प्राकट्य काल से ही मोक्ष मार्ग परायण, ध्यान में तल्लीन रहने वाले, नित्य सद्ध एवं नित्य वरक्त थे। ये भगवान वष्णु के सर्वप्रथम अवतार माने जाते हैं।

3- वराह अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान वष्णु ने दूसरा अवतार वराह रूप में लया था। वराह अवतार से जुड़ी कथा इस प्रकार है- पुरातन समय में दैत्य हिरण्याक्ष ने जब पृथ्वी को ले जाकर समुद्र में छिपा दिया तब ब्रह्मा की नाक से भगवान वष्णु वराह रूप में प्रकट हुए। भगवान वष्णु के इस रूप को देखकर सभी देवताओं व ऋ ष-मुनियों ने उनकी स्तुति की। सबके आग्रह पर भगवान वराह ने पृथ्वी को ढूंढना प्रारंभ कया। अपनी थूथनी की सहायता से उन्होंने पृथ्वी का पता लगा लया और समुद्र के अंदर जाकर अपने दांतों पर रखकर वे पृथ्वी को बाहर ले आए।

जब हिरण्याक्ष दैत्य ने यह देखा तो उसने भगवान वष्णु के वराह रूप को युद्ध के लए ललकारा। दोनों में भीषण युद्ध हुआ। अंत में भगवान वराह ने हिरण्याक्ष का वध कर दिया। इसके बाद भगवान वराह ने अपने खुरों से जल को स्तं भत कर उस पर पृथ्वी को स्था पत कर दिया।

4- नारद अवतार

धर्म ग्रंथों के अनुसार देव र्ष नारद भी भगवान वष्णु के ही अवतार हैं। शास्त्रों के अनुसार नारद मुनि, ब्रह्मा के सात मानस पुत्रों में से एक हैं। उन्होंने कठिन तपस्या से देव र्ष पद प्राप्त कया है। वे भगवान वष्णु के अनन्य भक्तों में से एक माने जाते हैं। देव र्ष नारद धर्म के प्रचार तथा लोक-कल्याण के लए हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। शास्त्रों में देव र्ष नारद को भगवान का मन भी कहा गया है। श्रीमद्भागवतगीता के दशम अध्याय के **26**वें श्लोक में स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने इनकी महत्ता को स्वीकार करते हुए कहा है- देवर्षीणाम्चनारद:। अर्थात देव र्षयों में मैं नारद हूं।

5- नर-नारायण:

सृष्टि के आरंभ में भगवान वष्णु ने धर्म की स्थापना के लए दो रूपों में अवतार लया। इस अवतार में वे अपने मस्तक पर जटा धारण कए हुए थे। उनके हाथों में हंस, चरणों में चक्र एवं वक्ष:स्थल में श्रीवत्स के चन्ह थे। उनका संपूर्ण वेष तपस्वियों के समान था। धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान वष्णु ने नर-नारायण के रूप में यह अवतार लया था।

6- क पल मुनि:

भगवान वष्णु ने पांचवा अवतार क पल मुनि के रूप में लया। इनके पता का नाम मह र्ष कर्दम व माता का नाम देवहूति था। शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म पतामह के शरीर त्याग के समय वेदज्ञ व्यास आदि ऋ षयों के साथ भगवा क पल भी वहां उपस्थित थे। भगवान क पल के क्रोध से ही राजा सगर के साठ हजार पुत्र भस्म हो गए थे। भगवान क पल सांख्य दर्शन के प्रवर्तक हैं। क पल मुनि भागवत धर्म के प्रमुख बारह आचार्यों में से एक हैं।

7- दत्तात्रेय अवतार:

धर्म ग्रंथों के अनुसार दत्तात्रेय भी भगवान वष्णु के अवतार हैं। इनकी उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है-

एक बार माता लक्ष्मी, पार्वती व सरस्वती को अपने पातिव्रत्य पर अत्यंत गर्व हो गया। भगवान ने इनका अंहकार नष्ट करने के लए लीला रची। उसके अनुसार एक दिन नारदजी घूमते-घूमते देवलोक पहुंचे और तीनों दे वयों को बारी-बारी जाकर कहा क ऋ ष अत्रि की पत्नी अनुसूइया के सामने आपका सतीत्व कुछ भी नहीं। तीनों दे वयों ने यह बात अपने स्वा मयों को बताई और उनसे कहा क वे अनुसूइया के पातिव्रत्य की परीक्षा लें।

तब भगवान शंकर, वष्णु व ब्रह्मा साधु वेश बनाकर अत्रि मुनि के आश्रम आए। मह र्ष अत्रि उस समय आश्रम में नहीं थे। तीनों ने देवी अनुसूइया से भक्षा मांगी मगर यह भी कहा क आपको निर्वस्त्र होकर हमें भक्षा देनी होगी। अनुसूइया पहले तो यह सुनकर चौंक गई, ले कन फर साधुओं का अपमान न हो इस डर से उन्होंने अपने पति का स्मरण कया और बोला क यदि मेरा पातिव्रत्य धर्म सत्य है तो ये तीनों साधु छ:-छ: मास के शशु हो जाएं।

ऐसा बोलते ही त्रिदेव शशु होकर रोने लगे। तब अनुसूइया ने माता बनकर उन्हें गोद में लेकर स्तनपान कराया और पालने में झूलाने लगीं। जब तीनों देव अपने स्थान पर नहीं लौटे तो दे वयां व्याकुल हो गईं। तब नारद ने वहां आकर सारी बात बताई। तीनों दे वयां अनुसूइया के पास आईं और क्षमा मांगी।

तब देवी अनुसूइया ने त्रिदेव को अपने पूर्व रूप में कर दिया। प्रसन्न होकर त्रिदेव ने उन्हें वरदान दिया क हम तीनों अपने अंश से तुम्हारे गर्भ से पुत्र रूप में जन्म लेंगे। तब ब्रह्मा के अंश से चंद्रमा, शंकर के अंश से दुर्वासा और वष्णु के अंश से दत्तात्रेय का जन्म हुआ।

8-यज्ञ :

भगवान वष्णु के सातवें अवतार का नाम यज्ञ है। धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान यज्ञ का जन्म स्वायम्भुव मन्वन्तर में हुआ था। स्वायम्भुव मनु की पत्नी शतरूपा के गर्भ से आकूति का जन्म हुआ। वे रू च प्रजापति की पत्नी हुई। इन्हीं आकूति के यहां भगवान वष्णु यज्ञ नाम से अवतरित हुए। भगवान यज्ञ के उनकी धर्मपत्नी द क्षणा से अत्यंत तेजस्वी बारह पुत्र उत्पन्न हुए। वे ही स्वायम्भुव मन्वन्तर में याम नामक बारह देवता कहलाए।

9- भगवान ऋषभदेव :

भगवान वष्णु ने ऋषभदेव के रूप में आठवां अवतार लया। धर्म ग्रंथों के अनुसार महाराज ना भ की कोई संतान नहीं थी। इस कारण उन्होंने अपनी धर्मपत्नी मेरुदेवी के साथ पुत्र की कामना से यज्ञ कया। यज्ञ से प्रसन्न होकर भगवान वष्णु स्वयं प्रकट हुए और उन्होंने महाराज ना भ को वरदान दिया क मैं ही तुम्हारे यहां पुत्र रूप में जन्म लूंगा।

वरदान स्वरूप कुछ समय बाद भगवान वष्णु महाराज ना भ के यहां पुत्र रूप में जन्मे। पुत्र के अत्यंत सुंदर सुगठित शरीर, कीर्ति, तेल, बल, ऐश्वर्य, यश, पराक्रम और शूरवीरता आदि गुणों को देखकर महाराज ना भ ने उसका नाम ऋषभ (श्रेष्ठ) रखा।

10- आदिराज पृथु :

भगवान वष्णु के एक अवतार का नाम आदिराज पृथु है। धर्म ग्रंथों के अनुसार स्वायम्भुव मनु के वंश में अंग नामक प्रजापति का ववाह मृत्यु की मान सक पुत्री सुनीथा

के साथ हुआ। उनके यहां वेन नामक पुत्र हुआ। उसने भगवान को मानने से इंकार कर दिया और स्वयं की पूजा करने के लए कहा।

तब मह र्षयों ने मंत्र पूत कुशों से उसका वध कर दिया। तब मह र्षयों ने पुत्रहीन राजा वेन की भुजाओं का मंथन कया, जिससे पृथु नाम पुत्र उत्पन्न हुआ। पृथु के दाहिने हाथ में चक्र और चरणों में कमल का चह्न देखकर ऋ षयों ने बताया क पृथु के वेष में स्वयं श्रीहरि का अंश अवतरित हुआ है।

11- मत्स्य अवतार:

पुराणों के अनुसार भगवान वष्णु ने सृष्टि को प्रलय से बचाने के लए मत्स्यावतार लया था। इसकी कथा इस प्रकार है- कृतयुग के आदि में राजा सत्यव्रत हुए। राजा सत्यव्रत एक दिन नदी में स्नान कर जलांज ल दे रहे थे। अचानक उनकी अंज ल में एक छोटी सी मछली आई। उन्होंने देखा तो सोचा वापस सागर में डाल दूं, ले कन उस मछली ने बोला- आप मुझे सागर में मत डा लए अन्यथा बड़ी मछ लयां मुझे खा जाएंगी। तब राजा सत्यव्रत ने मछली को अपने कमंडल में रख लया। मछली और बड़ी हो गई तो राजा ने उसे अपने सरोवर में रखा, तब देखते ही देखते मछली और बड़ी हो गई।

राजा को समझ आ गया क यह कोई साधारण जीव नहीं है। राजा ने मछली से वास्त वक स्वरूप में आने की प्रार्थना की। राजा की प्रार्थना सुन साक्षात चारभुजाधारी भगवान वष्णु प्रकट हो गए और उन्होंने कहा क ये मेरा मत्स्यावतार है। भगवान ने सत्यव्रत से कहा- सुनो राजा सत्यव्रत! आज से सात दिन बाद प्रलय होगी। तब मेरी प्रेरणा से एक वशाल नाव तुम्हारे पास आएगी। तुम सप्त ऋ षयों, औष धयों, बीजों व प्रा णयों के सूक्ष्म शरीर को लेकर उसमें बैठ जाना, जब तुम्हारी नाव डगमगाने लगेगी, तब मैं मत्स्य के रूप में तुम्हारे पास आऊंगा।

12- कूर्म अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान वष्णु ने कूर्म (कछुए) का अवतार लेकर समुद्र मंथन में सहायता की थी। भगवान वष्णु के कूर्म अवतार को कच्छप अवतार भी कहते हैं। इसकी कथा इस प्रकार है- एक बार मह र्ष दुर्वासा ने देवताओं के राजा इंद्र को श्राप देकर श्रीहीन

कर दिया। इंद्र जब भगवान वष्णु के पास गए तो उन्होंने समुद्र मंथन करने के लए कहा। तब इंद्र भगवान वष्णु के कहे अनुसार दैत्यों व देवताओं के साथ मलकर समुद्र मंथन करने के लए तैयार हो गए।

समुद्र मंथन करने के लए मंदराचल पर्वत को मथानी एवं नागराज वासु क को नेती बनाया गया। देवताओं और दैत्यों ने अपना मतभेद भुलाकर मंदराचल को उखाड़ा और उसे समुद्र की ओर ले चले, ले कन वे उसे अ धक दूर तक नहीं ले जा सके। तब भगवान वष्णु ने मंदराचल को समुद्र तट पर रख दिया। देवता और दैत्यों ने मंदराचल को समुद्र में डालकर नागराज वासु क को नेती बनाया।

कंतु मंदराचल के नीचे कोई आधार नहीं होने के कारण वह समुद्र में डूबने लगा। यह देखकर भगवान वष्णु वशाल कूर्म (कछुए) का रूप धारण कर समुद्र में मंदराचल के आधार बन गए। भगवान कूर्म की वशाल पीठ पर मंदराचल तेजी से घुमने लगा और इस प्रकार समुद्र मंथन संपन्न हुआ।

13- भगवान धन्वन्तरि :

धर्म ग्रंथों के अनुसार जब देवताओं व दैत्यों ने मलकर समुद्र मंथन कया तो उसमें से सबसे पहले भयंकर वष निकला जिसे भगवान शव ने पी लया। इसके बाद समुद्र मंथन से उच्चैश्रवा घोड़ा, देवी लक्ष्मी, ऐरावत हाथी, कल्प वृक्ष, अप्सराएं और भी बहुत से रत्न निकले। सबसे अंत में भगवान धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। यही धन्वन्तरि भगवान वष्णु के अवतार माने गए हैं। इन्हें औष धयों का स्वामी भी माना गया है।

14- मोहिनी अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार समुद्र मंथन के दौरान सबसे अंत में धन्वन्तरि अमृत कलश लेकर निकले। जैसे ही अमृत मला अनुशासन भंग हुआ। देवताओं ने कहा हम ले लें, दैत्यों ने कहा हम ले लें। इसी खींचातानी में इंद्र का पुत्र जयंत अमृत कुंभ लेकर भाग गया। सारे दैत्य व देवता भी उसके पीछे भागे। असुरों व देवताओं में भयंकर मार-काट मच गई।

देवता परेशान होकर भगवान वष्णु के पास गए। तब भगवान वष्णु ने मोहिनी अवतार लया। भगवान ने मोहिनी रूप में सबको मोहित कर दिया कया। मोहिनी ने देवता व असुर की बात सुनी और कहा क यह अमृत कलश मुझे दे दीजिए तो मैं बारी-बारी से देवता व असुर को अमृत का पान करा दूंगी। दोनों मान गए। देवता एक तरफ तथा असुर दूसरी तरफ बैठ गए।

फर मोहिनी रूप धरे भगवान वष्णु ने मधुर गान गाते हुए तथा नृत्य करते हुए देवता व असुरों को अमृत पान कराना प्रारंभ कया। वास्त वकता में मोहिनी अमृत पान तो सर्फ देवताओं को ही करा रही थी, जब क असुर समझ रहे थे क वे भी अमृत पी रहे हैं। इस प्रकार भगवान वष्णु ने मोहिनी अवतार लेकर देवताओं का भला कया।

15- भगवान नृ संह :

भगवान वष्णु ने नृ संह अवतार लेकर दैत्यों के राजा हिरण्यक शपु का वध कया था। इस अवतार की कथा इस प्रकार है- धर्म ग्रंथों के अनुसार दैत्यों का राजा हिरण्यक शपु स्वयं को भगवान से भी अ धक बलवान मानता था। उसे मनुष्य, देवता, पक्षी, पशु, न दिन में, न रात में, न धरती पर, न आकाश में, न अस्त्र से, न शस्त्र से मरने का वरदान प्राप्त था। उसके राज में जो भी भगवान वष्णु की पूजा करता था उसको दंड दिया जाता था। उसके पुत्र का नाम प्रह्लाद था। प्रह्लाद बचपन से ही भगवान वष्णु का परम भक्त था। यह बात जब हिरण्यक शपु का पता चली तो वह बहुत क्रो धत हुआ और प्रह्लाद को समझाने का प्रयास कया, ले कन फर भी जब प्रह्लाद नहीं माना तो हिरण्यक शपु ने उसे मृत्युदंड दे दिया।

हर बार भगवान वष्णु के चमत्कार से वह बच गया। हिरण्यक शपु की बहन हो लका, जिसे अग्नि से न जलने का वरदान प्राप्त था, वह प्रह्लाद को लेकर धधकती हुई अग्नि में बैठ गई। तब भी भगवान वष्णु की कृपा से प्रह्लाद बच गया और हो लका जल गई। जब हिरण्यक शपु स्वयं प्रह्लाद को मारने ही वाला था तब भगवान वष्णु नृ संह का अवतार लेकर खंबे से प्रकट हुए और उन्होंने अपने नाखूनों से हिरण्यक शपु का वध कर दिया।

16- वामन अवतार :

सत्ययुग में प्रह्लाद के पौत्र दैत्यराज ब ल ने स्वर्गलोक पर अ धकार कर लया। सभी देवता इस वपत्ति से बचने के लए भगवान वष्णु के पास गए। तब भगवान वष्णु ने कहा क मैं स्वयं देवमाता अदिति के गर्भ से उत्पन्न होकर तुम्हें स्वर्ग का राज्य दिलाऊंगा। कुछ समय पश्चात भगवान वष्णु ने वामन अवतार लया।

एक बार जब ब ल महान यज्ञ कर रहा था तब भगवान वामन ब ल की यज्ञशाला में गए और राजा ब ल से तीन पग धरती दान में मांगी। राजा ब ल के गुरु शुक्राचार्य भगवान की लीला समझ गए और उन्होंने ब ल को दान देने से मना कर दिया। ले कन ब ल ने फर भी भगवान वामन को तीन पग धरती दान देने का संकल्प ले लया। भगवान वामन ने वशाल रूप धारण कर एक पग में धरती और दूसरे पग में स्वर्ग लोक नाप लया। जब तीसरा पग रखने के लए कोई स्थान नहीं बचा तो ब ल ने भगवान वामन को अपने सर पर पग रखने को कहा। ब ल के सर पर पग रखने से वह सुतललोक पहुंच गया। ब ल की दानवीरता देखकर भगवान ने उसे सुतललोक का स्वामी भी बना दिया। इस तरह भगवान वामन ने देवताओं की सहायता कर उन्हें स्वर्ग पुन: लौटाया।

17- हयग्रीव अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार एक बार मधु और कैटभ नाम के दो शक्तिशाली राक्षस ब्रह्माजी से वेदों का हरण कर रसातल में पहुंच गए। वेदों का हरण हो जाने से ब्रह्माजी बहुत दु:खी हुए और भगवान वष्णु के पास पहुंचे। तब भगवान ने हयग्रीव अवतार लया। इस अवतार में भगवान वष्णु की गर्दन और मुख घोड़े के समान थी। तब भगवान हयग्रीव रसातल में पहुंचे और मधु-कैटभ का वध कर वेद पुन: भगवान ब्रह्मा को दे दिए।

18- श्रीहरि अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार प्राचीन समय में त्रिकूट नामक पर्वत की तराई में एक शक्तिशाली गजेंद्र अपनी ह थनियों के साथ रहता था। एक बार वह अपनी ह थनियों के साथ तालाब में स्नान करने गया। वहां एक मगरमच्छ ने उसका पैर पकड़ लया और पानी के अंदर खींचने लगा। गजेंद्र और मगरमच्छ का संघर्ष एक हजार साल तक चलता रहा। अंत में गजेंद्र श थल पड़ गया और उसने भगवान श्रीहरि का ध्यान कया। गजेंद्र की स्तुति

सुनकर भगवान श्रीहरि प्रकट हुए और उन्होंने अपने चक्र से मगरमच्छ का वध कर दिया। भगवान श्रीहरि ने गजेंद्र का उद्धार कर उसे अपना पार्षद बना लया।

19- परशुराम अवतार :

हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार परशुराम भगवान वष्णु के प्रमुख अवतारों में से एक थे। भगवान परशुराम के जन्म के संबंध में दो कथाएं प्रच लत हैं। हरिवंशपुराण के अनुसार उन्हीं में से एक कथा इस प्रकार है-

प्राचीन समय में महिष्मती नगरी पर शक्तिशाली हैययवंशी क्षत्रिय कार्तवीर्य अर्जुन(सहस्त्रबाहु) का शासन था। वह बहुत अ भमानी था और अत्याचारी भी। एक बार अग्निदेव ने उससे भोजन कराने का आग्रह कया। तब सहस्त्रबाहु ने घमंड में आकर कहा क आप जहां से चाहें, भोजन प्राप्त कर सकते हैं, सभी ओर मेरा ही राज है। तब अग्निदेव ने वनों को जलाना शुरु कया। एक वन में ऋ ष आपव तपस्या कर रहे थे। अग्नि ने उनके आश्रम को भी जला डाला। इससे क्रो धत होकर ऋ ष ने सहस्त्रबाहु को श्राप दिया क भगवान वष्णु, परशुराम के रूप में जन्म लेंगे और न सर्फ सहस्त्रबाहु का नहीं बल्कि समस्त क्षत्रियों का सर्वनाश करेंगे। इस प्रकार भगवान वष्णु ने भार्गव कुल में मह र्ष जमद ग्र के पांचवें पुत्र के रूप में जन्म लया।

20- मह र्ष वेदव्यास :

पुराणों में मह र्ष वेदव्यास को भी भगवान वष्णु का ही अंश माना गया है। भगवान व्यास नारायण के कलावतार थे। वे महाज्ञानी मह र्ष पराशर के पुत्र रूप में प्रकट हुए थे। उनका जन्म कैवर्तराज की पोष्यपुत्री सत्यवती के गर्भ से यमुना के द्वीप पर हुआ था। उनके शरीर का रंग काला था। इस लए उनका एक नाम कृष्णद्वैपायन भी था। इन्होंने ही मनुष्यों की आयु और शक्ति को देखते हुए वेदों के वभाग कए। इस लए इन्हें वेदव्यास भी कहा जाता है। इन्होंने ही महाभारत ग्रंथ की रचना भी की।

21- हंस अवतार :

एक बार भगवान ब्रह्मा अपनी सभा में बैठे थे। तभी वहां उनके मानस पुत्र सनकादि पहुंचे और भगवान ब्रह्मा से मनुष्यों के मोक्ष के संबंध में चर्चा करने लगे। तभी वहां

भगवान वष्णु महाहंस के रूप में प्रकट हुए और उन्होंने सनकादि मुनियों के संदेह का निवारण कया। इसके बाद सभी ने भगवान हंस की पूजा की। इसके बाद महाहंसरूपधारी श्रीभगवान अदृश्य होकर अपने प वत्र धाम चले गए।

22- श्रीराम अवतार :

त्रेतायुग में राक्षसराज रावण का बहुत आतंक था। उससे देवता भी डरते थे। उसके वध के लए भगवान वष्णु ने राजा दशरथ के यहां माता कौशल्या के गर्भ से पुत्र रूप में जन्म लया। इस अवतार में भगवान वष्णु ने अनेक राक्षसों का वध कया और मर्यादा का पालन करते हुए अपना जीवन यापन कया।

पता के कहने पर वनवास गए। वनवास भोगते समय राक्षसराज रावण उनकी पत्नी सीता का हरण कर ले गया। सीता की खोज में भगवान लंका पहुंचे, वहां भगवान श्रीराम और रावण का घोर युद्ध जिसमें रावण मारा गया। इस प्रकार भगवान वष्णु ने राम अवतार लेकर देवताओं को भय मुक्त कया।

23- श्रीकृष्ण अवतार :

द्वापरयुग में भगवान वष्णु ने श्रीकृष्ण अवतार लेकर अध र्मयों का नाश कया। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म कारागार में हुआ था। इनके पता का नाम वसुदेव और माता का नाम देवकी था। भगवान श्रीकृष्ण ने इस अवतार में अनेक चमत्कार कए और दुष्टों का सर्वनाश कया।

कंस का वध भी भगवान श्रीकृष्ण ने ही कया। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सार थ बने और दुनिया को गीता का ज्ञान दिया। धर्मराज यु धष्ठिर को राजा बना कर धर्म की स्थापना की। भगवान वष्णु का ये अवतार सभी अवतारों में सबसे श्रेष्ठ माना जाता है।

24- बुद्ध अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार बौद्धधर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध भी भगवान वष्णु के ही अवतार थे परंतु पुराणों में व र्णत भगवान बुद्धदेव का जन्म गया के समीप कीकट में हुआ बताया गया है और उनके पता का नाम अजन बताया गया है। यह प्रसंग पुराण व र्णत बुद्धावतार का ही है।

एक समय दैत्यों की शक्ति बहुत बढ़ गई। देवता भी उनके भय से भागने लगे। राज्य की कामना से दैत्यों ने देवराज इंद्र से पूछा क हमारा साम्राज्य स्थिर रहे, इसका उपाय क्या है। तब इंद्र ने शुद्ध भाव से बताया क सुस्थिर शासन के लए यज्ञ एवं वेद वहित आचरण आवश्यक है। तब दैत्य वैदिक आचरण एवं महायज्ञ करने लगे, जिससे उनकी शक्ति और बढ़ने लगी। तब सभी देवता भगवान वष्णु के पास गए। तब भगवान वष्णु ने देवताओं के हित के लए बुद्ध का रूप धारण कया। उनके हाथ में मार्जनी थी और वे मार्ग को बुहारते हुए चलते थे।

इस प्रकार भगवान बुद्ध दैत्यों के पास पहुंचे और उन्हें उपदेश दिया क यज्ञ करना पाप है। यज्ञ से जीव हिंसा होती है। यज्ञ की अग्नि से कतने ही प्राणी भस्म हो जाते हैं। भगवान बुद्ध के उपदेश से दैत्य प्रभा वत हुए। उन्होंने यज्ञ व वैदिक आचरण करना छोड़ दिया। इसके कारण उनकी शक्ति कम हो गई और देवताओं ने उन पर हमला कर अपना राज्य पुन: प्राप्त कर लया।

25- कल्कि अवतार :

धर्म ग्रंथों के अनुसार कलयुग में भगवान वष्णु कल्कि रूप में अवतार लेंगे। कल्कि अवतार क लयुग व सतयुग के सं धकाल में होगा। यह अवतार **64** कलाओं से युक्त होगा। पुराणों के अनुसार उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद जिले के शंभल नामक स्थान पर वष्णुयशा नामक तपस्वी ब्राह्मण के घर भगवान कल्कि पुत्र रूप में जन्म लेंगे। कल्कि देवदत्त नामक घोड़े पर सवार होकर संसार से पा पयों का वनाश करेंगे और धर्म की पुन:स्थापना करेंगे।